मेरी माँ

लेखक

सर मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान

मेरी माँ

लेखक

सर मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान

प्रकाशक

नज़ारत नश्र–व–इशाअत, क़ादियान,

ज़िला– गुरदासपुर (पंजाब)

Ver 2016.08.18/01

पुस्तक का नाम : मेरी माँ
Name of the Book : My Mother

लेखक : सर मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान
: Sir Muhammad Zafrullah Khan

अनुवादक:अलीहसन एम.ए., एच.ए
Translator:Ali Hasan, M.A., H.A.

प्रकाशन वर्ष : प्रथम संस्करण हिन्दी 2017
: 1st Edition in Hindi 2017

संख्या:1000
Quantity:1000

प्रेस:फज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान.
Press : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian.

प्रकाशक :नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान,
ज़िला- गुरदासपुर (पंजाब)
: Nazarath Nashr-o-Ishat Qadian,
Dist : Gurdaspur (Punjab)

Ver 2016.08.18/01

सर मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान

(जन्म 06 फ़रवरी, 1893 ई.)

Ver 2016.08.18/01

अनुक्रम

Ver 2016.08.18/01

Ver 2016.08.18/01

Ver 2016.08.18/01

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

सप्रेम भेंट

मुकर्रम चौधरी सर मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह खान साहिब ने इस छोटी सी पुस्तक में अपनी स्वर्गीया माँ के मनमोहक और असरकारक हालत लिखकर केवल बेटा होने के हक़ को ही नहीं सुन्दरता से निभाया बल्कि जमाअत की भी एक उत्तम सेवा की है । अत: इस प्रकार का लिटरेचर जमाअत की नैतिक और धार्मिक हालत को उत्तम बनाने में बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकता है । मैं आशा करता हूँ कि हमारे मित्र इस पुस्तक को न केवल स्वयं पढ़ेंगे, बल्कि अपनी सन्तानों को भी इसके पढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे ।

ताकि हर माता-पिता को अपने स्रष्टा के साथ सच्चा सम्बन्ध जोड़ने और अपने घरों में अच्छे माँ-बाप और अच्छी सन्तान बनने की ओर ध्यान पैदा हो । यही इस पुस्तक का उत्तम सार और अभिप्राय है ।

अल्लाह तआला स्वर्गीय और उनके स्वर्गीय पति को अपनी विशेष अनुकंपा की छत्रछाया में रखे और उनकी सन्तानों और हम सब को यह सामर्थ्य दे कि हम अपने जीवनों को खुदा के सन्मार्ग पर चलाकर धर्म और मानवजाति की सेवा में व्यतीत कर सकें । आमीन

ख़ाकसार
मिर्ज़ा बशीर अहमद
क़ादियान
16 दिसम्बर सन् 1938 ई.

Ver 2017.01.15/02

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم
نحمدہ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم وعلیٰ عبدہ المسیح الموعود

मेरी माँ

मेरी माँ का नाम हसीन बीबी था । उनके अपने कथनानुसार उनका जन्म लगभग 1863 ई.में हुआ था । उनके पिता का नाम चौधरी इलाही बख्श था, पैतृक गाँव दाता ज़ैदका ज़िला स्यालकोट था, वह बाजवा कौम से सम्बन्ध रखते थे जो ज़िला स्यालकोट की जमींदार जातियों में से सबसे प्रतिष्ठत समझी जाती है ।

चौधरी इलाही बख्श की सन्तानों में से 5 बेटियाँ और एक बेटा था । मेरी माँ उन में से सबसे बड़ी थीं । मेरे मामू चौधरी अब्दुल्लाह खां साहिब अमीर (अध्यक्ष) जमाअत अहमदिया दाता ज़ैदका अपनी चार बहनों से छोटे और एक से बड़े थे ।

मेरी माँ अपने माता – पिता की पहली सन्तान होने के कारण बचपन से ही उनकी बहुत लाडली थीं । उनके कथनानुसार वह समय बहुत खुशहाली का था । उनके पिता जी के बड़े भाई (जो खानदान के मुखिया थे) उन्हें बहुत प्यार करते थे और उनकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश किया करते थे । इसीलिए वह बचपन से ही दूसरों की अपेक्षा अधिक स्वच्छंद स्वभाव थीं और कभी – कभी ऐसा नाज़ – नखरा कर बैठती थीं जो इस समय के बच्चों की पहचान बन चुका है । लेकिन उन दिनों उनकी माँ के लिए कई बार परेशानी का कारण भी बन जाया करता था, पर यह स्वच्छंदता का समय बहुत जल्द बीत गया ।

Ver 2017.01.15/02

हमारे ख़ानदानी हालात

छोटी उम्र में ही मेरी माँ का निकाह मेरे पिता चौधरी नसरुल्लाह खां साहिब के साथ हो गया । मेरे दादा का नाम चौधरी सिकन्दर खां था । हमारा पैतृक गाँव डस्का (ज़िला स्यालकोट) है । हमारी जाति शाही कहलाती है । कहा जाता है कि यह कौम अधिकतर मॉन्टगुमरी के क्षेत्र में निवास करती थी । इसलिए मॉन्टगुमरी का पुराना नाम साहीवाल भी है । किसी समय पंजाब के एक इलाका में इस कौम का शासन हुआ करता था ।

हमारे ख़ानदान की एक दो शाखें अब तक हिन्दू हैं शेष या तो सिख हैं या मुसलमान । हमारी शाख लगभग 12 पीढ़ियों से मुसलमान है ।

मेरे दादा स्व. सिकन्दर खां साहिब अपने इलाक़े के बहुत प्रभावशाली ज़मींदार थे । मेरे परदादा चौधरी फ़तेहदीन साहिब जवानी में ही देहान्त पा गए थे । उनके देहान्त के समय मेरे दादा बिल्कुल बच्चे ही थे, उनका पालनपोषण बहुत तंगी की हालत में हुआ था । लेकिन अल्लाह तआला ने उनके स्वभाव में विवेक और दूरदर्शिता बचपन से ही भर दिया था । इसलिए ख़ानदान के लोगों की दुश्मनी और साज़िशों के बावजूद उन्होंने अपना जीवन बहुत अच्छी तरह व्यतीत किया ।

वह युग पूर्णत: अन्धकार और मूर्खता का युग था । लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें सांसारिक ज्ञान के अतिरिक्त धार्मिक ज्ञान और उसकी सूझबूझ भी प्रदान की थी । मेरी जानकारी के अनुसार वह अहले हदीस फ़िर्का से संबंध रखते थे और शरीअत के आदेशों का पूर्णत: पालन करते और करवाते थे । मूर्तिपूजा से उन्हें विशेष घृणा थी और हर प्रकार के आडम्बरों से घोर नफ़रत । मातम के समय औरतों के रोने-अलापने को बहुत बुरा मानते थे और इसे बड़ी सख्ती से रोकते थे । शासकों के साथ उनका व्यवहार संयमित विनम्र और प्रतिष्ठानुसार

हुआ करता था और शासक भी उनका सम्मान किया करते थे ।

अतिथियों की आवभगत और दीन दु:खियों एवं असहायों की सहायता करना उनकी विशेष पहचान थी । यद्यपि उन्हें बचपन में जिन परिस्थितियों में से गुज़रना पड़ा था उनके परिणाम स्वरूप उन्हें स्वयं तंगी से जीवन यापन करना पड़ता था । लेकिन उसका असर वे मेहमानों की आवभगत पर नहीं पड़ने देते थे । उनका नित्य नियम था कि इशा की नमाज़ के बाद रात्रि में सोने वाले कपड़े पहनकर अतिथिगृह में चले जाते और एक सेवक के रूप में मुसाफिरों और मेहमानों की सेवा किया करते थे और तहज्जुद की नमाज़ के बाद भी मेहमानों की देखभाल के लिए अतिथिगृह में जाया करते थे जो मस्जिद के पास ही बना हुआ था ।

एक दिन फ़ज्र (भोर) के समय अतिथिगृह के एक नौकर ने यह सूचना दी, कि एक अतिथि जिसने अतिथिगृह में रात गुज़ारी थी ग़ायब है और उसके बिस्तर की रजाई भी ग़ायब है और यह भी बताया कि चौकीदार और एक-दो आदमी उसे ढूँढने गए हैं । थोड़ी देर के बाद वे लोग उस मुसाफिर को रजाई समेत पकड़े हुए मेरे दादा के सामने ले आए । दादा ने उससे पूछा मियाँ तुमने ऐसा क्यों किया ? मुसाफिर ने जवाब दिया, हुज़ूर हम घर में बच्चों सहित चार लोग हैं, सर्दी का मौसम है और हमारे घर में केवल एक ही रजाई है । मेरे दादा जी ने आदेश दिया कि उसे छोड़ दो और उसे उस रजाई के अतिरिक्त 3 रूपये भी दिए ।

उनकी मेहमाननवाज़ी और दरियादिली के कारण क्षेत्र में ही नहीं बल्कि पास-पड़ोस के ज़िलों में भी लोग उनका नाम सम्मानपूर्वक लिया करते थे ।

मेरी माँ के ख़ानदान की हमारे ख़ानदान के साथ पहले से भी रिश्तेदारी थी । मेरी दादी पनाह बीबी (जो बहिश्ती मक़बरा में दफ़न हैं) मेरी माँ की सगी फूफी थीं । इस तरह मेरे नाना मेरे पिता के सगे

मामू थे । मेरे पिता अपने बचपन का बहुत सा समय अपने ननिहाल में गुज़ारा करते थे और मेरी नानी जो मेरे पिता की मामी थीं मेरे पिता जी को बहुत प्यार करती थीं । जब भी मेरी नानी को मेरे पिता के साथ मुलाक़ात करने का अवसर मिलता तो दोनों बहुत देर रात तक बातें करते रहते थे ।

मेरी नानी बहुत इबादत गुज़ार, मुत्तकी, धैर्यवान् और बड़ी हिम्मत वाली थीं । जब देहातों में औरतों की शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था, उस ज़माने में उनके पिता ने उनको विधिवत् आयुर्वेद पढ़ाने का प्रबन्ध किया था । वह आयुर्वेद में बड़ी कुशल थीं । अत: उनकी तरबियत का ही कारण था कि मेरी माँ यद्यपि आयुर्वेद नहीं पढ़ी थीं पर बहुत सी बीमारियों का पारम्परिक इलाज जानती थीं और कभी-कभी अधिक बीमारी की हालत में नुस्खा भी बताने की हिम्मत कर लेती थीं और अल्लाह तआला अपने रहम से रोगी को ठीक भी कर देता था ।

माता जी का विवाह

मैं ऊपर यह वर्णन कर चुका हूँ कि हमारे ननिहाल में खुशहाली का ज़माना था और हमारे घर में उनकी अपेक्षा तंगी का ज़माना था । मेरे माता-पिता का निकाह छोटी उम्र में ही हो गया था । लेकिन विदाई कुछ सालों के बाद हुई । जब मेरी माँ ने ससुराल आना-जाना शुरू किया उस समय मेरे पिता जी ओरियन्टल कालेज लाहौर में पढ़ते थे । उस समय के रहन-सहन के अनुसार मेरी माँ को अपना सारा समय अपनी सास साहिबा के आदेशानुसार गुज़ारना पड़ता था । यूँ तो उन दोनों में आपस में करीबी रिश्तेदारी थी । लेकिन वह समय मेरी माँ के लिए बहुत मुश्किल भरा ज़माना था । मेरी माँ बचपन से ही बहुत स्वाभिमानी प्रकृति की थीं । उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता

था। इसलिए ससुराल में रहने का ज़माना उनके लिए और भी कष्टप्रद था। पिता जी को पढ़ाई के कारण घर पर रहने का बहुत कम समय मिलता था, उनसे जुदाई माँ के लिए बहुत कष्टदायक थी। लेकिन यह सब कुछ उन्हें खामोशी से बर्दाश्त करना पड़ता था। मेरे दादा जी उनसे बहुत प्यार और हमदर्दी का बर्ताव करते थे। लेकिन उनसे किसी प्रकार की तकलीफ का बयान करना माँ को स्वभावत: पसन्द न था।

पिता जी के कुछ हालात

मेरे पिता जी का स्वभाव बहुत नाजुक और स्वाभिमानी था। वह अपने पिता से कभी सिर उठाकर बात नहीं किया करते थे। कहा करते थे कि न मैंने कभी अपने पिता से बेधड़क होकर बात की और न कभी पूरी तरह नज़र उठाकर उनके चेहरे को देखा।

एक बार किसी उत्सव पर मेरे दादा जी ने उन्हें लाहौर से आने के लिए कहा तो पिता जी ने उत्तर में लिखा, कि इस समय आने से मेरी पढ़ाई में हर्ज होगा। अब छुट्टियों में ही आ सकूँगा। जब छुट्टियों में वे घर आये तो उनके पिता जी ने उनकी माँ को संबोधित करके कहा "अब किसने बुलाया था" ? यह वाक्य पिता जी ने सुन लिया। जैसे ही उन्हें मौक़ा मिला अपना सामान बाँधकर वापिस लाहौर चल पड़े। पास पर्याप्त खर्च भी न था, डस्का से गुजरांवाला तक 15 मील सिर पर सामान उठाए हुए पैदल गए। गुजरांवाला से शाहदरा तक रेल में यात्रा की, फिर शाहदरा से सिर में सामान उठाकर हुजूरी बाग लाहौर पहुंचे। जहाँ उन दिनों ओरियंटल कालेज का छातत्रावास हुआ करता था। इस तरह छुट्टियों का समय भी लाहौर में ही बिताया। पिता-पुत्र ने तो अपने-अपने स्वभाव का तक़ाज़ा पूरा कर लिया, पर मेरी माँ के दिल पर जो बीता होगा उसका अन्दाज़ा कोई दर्दमन्द दिल ही लगा सकता है।

मेरे पिता जी कहा करते थे कि अब तो शिक्षा के लिए बहुत सहूलियतें हो गई हैं फिर भी तुम लोग तरह-तरह के बहाने करते रहते हो । हमारे ज़माने में तो बहुत कठिनाइयां थीं सबसे पहले तो पैसों की बहुत तंगी थी । कहा करते थे कि मैंने छः सात वर्ष छात्र के रूप में लाहौर में गुज़ारे और ओरियंटल कालेज से बी.ओ.एल. की परीक्षा पास की और ट्रेनिंग कालेज से नारमल स्कूल का इम्तिहान पास किया । फिर मुख्तारी और वकालत की परीक्षा पास की और इस पूरे समय में घर से एक पैसा नहीं मंगवाया । जो छात्रवृत्तियां मिलती थीं उन्ही से गुज़ारा किया । घर से केवल आटा ले जाया करते थे और वह भी केवल इतना कि उस पूरे समय में लाहौर में कभी पेट भर खाना नहीं खाया । छात्रवृत्ति भी पहले चार रुपए प्रतिमाह थी फिर छः रुपए फिर और आठ रुपए प्रतिमाह हो गई थी ।

फिर विधि की परीक्षाओं के लिए यह समस्या थी कि उनकी अधिकतर पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में थीं और अंग्रेजी न जानने वाले छात्रों को बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता था क्योंकि बहुत सी पुस्तकों के अनुवाद सुलभ न थे । एक बार पिताजी लाला लाजपत राय साहिब के साथ इसलिए हिसार गए थे कि एक वकील साहिब की निगरानी में ऐसे विषय की तैयारी करें जिसके कोर्स की पुस्तकों का उर्दू अनुवाद सुलभ न था । उन दिनों हिसार तक रेल का साधन न था, तांगा या बैलगाड़ी के द्वारा जाना पड़ता था । ऐसी समस्याओं के बावजूद पिताजी मुख्तारी और वकालत की दोनों परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए और इनाम में चांदी एवं सोने के मेडल प्राप्त किए ।

वकालत पास करने से पूर्व पिता जी ने डस्का में ही मुख्तारी की प्रैक्टिस शुरू कर दी थी, पर वकालत पास करने के पशचात् उन्होंने स्यालकोट में प्रैक्टिस शुरू की और वहीं रहने लगे ।

बच्चों के मरने पर माँ का धैर्य

मेरे जन्म से पहले मेरे माता-पिता के 5 बच्चे मर चुके थे । उनमें से पहले तीन का जन्म और देहान्त तो उस समय में हुआ जब मेरे पिता अभी विद्यार्थी ही थे और आखिरी दो की मृत्यु उस समय हुई जब मेरे पिता मुख़्तारी और वकालत कर रहे थे । उनमें से हर बच्चे की मृत्यु मेरी माँ के लिए एक परीक्षा बन गई, जिनमें उनके ईमान की पूरी-पूरी परीक्षा हुई । जिसमें वह अल्लाह के फ़ज़्ल और रहम से खरी उतरीं और कभी उनके पग सन्मार्ग से इधर-उधर न भटके । व्याख्या तो इन घटनाओं की बहुत लम्बी है इसलिए संक्षिप्तत: उदाहरण के रूप में दो-तीन घटनाएं बयान कर देता हूँ । जिनसे उस परीक्षा और माँ के सिद्क़ और ईमान की विशेषता स्पष्ट हो जाएगी ।

हमारे सब से बड़े भाई का नाम भी ज़फ़र ही था । माँ उन सब बच्चों में से ज़फ़र और रफ़ीक़ का बड़ी ममता से वर्णन किया करती थीं और उनकी सुन्दरता की बहुत प्रशंसा किया करती थीं । ज़फ़र अभी कुछ महीनों का ही था कि माता जी को अचानक किसी कारणवश अपने गाँव दाता ज़ैदका जाना पड़ा । उनके गाँव में जय देवी नाम की एक विधवा औरत थी जो चुड़ैल या डायन के नाम से मशहूर थी और वह उसका फ़ायदा उठाया करती थी । उन दिनों वह माँ से मिलने के लिए आई और कुछ कपड़े और खाने-पीने की चीजें इस रंग में माँगी जिससे यह स्पष्ट हो रहा था कि मानों ये चीज़े ज़फ़र से मुसीबतें टालने के लिए हैं ।

माँ ने उत्तर में कहा, तुम एक ग़रीब विधवा हो, यदि तुम सदक़ा या ख़ैरात के रूप में कुछ मांगो तो मैं खुशी से अपने सामर्थ्यानुसार तुम्हें देने के लिए तैयार हूँ । लेकिन मैं चुड़ैलों और डायनों को नहीं मानती । मैं केवल अल्लाह तआला को ज़िन्दगी और मौत का मालिक मानती हूँ और इन बातों में किसी और का स्वामित्व (अधिकार) नहीं

मानती । ऐसी बातों को मैं शिर्क (परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य पर भरोसा करना) समझती हूँ और इनसे नफरत करती हूँ । इसलिए इस आधार पर मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सकती ।

जय देवी ने उत्तर देते हुए कहा, कि अच्छा तुम सोच लो यदि बच्चे की ज़िन्दगी चाहती हो तो मेरी इच्छा तुम्हें पूरी ही करनी पड़ेगी ।

एक दिन माँ ज़फ़र को नहला रही थीं कि जय देवी आ गई और बच्चे की ओर देखकर कहा "अच्छा यही साही राजा है" ? माँ ने उत्तर दिया "हाँ यही है" ।

जय देवी ने फिर वही इच्छा व्यक्त की, माँ ने पहले की भाँति फिर वही उत्तर दिया । इस पर जय देवी ने क्रोध में आकर कहा :

"अच्छा यदि बच्चे को ज़िन्दा लेकर घर लौटीं, तो समझ लेना कि मैं झूठ कहती थी"। माँ ने कहा, "जैसे ख़ुदा की मर्ज़ी होगी वही होगा" ।

माता जी बताया करती थीं कि अभी जय देवी मकान की ड्योढ़ी से बाहर न निकली थी कि नहलाने में ही ज़फ़र को खून की उलटी हुई और खून ही का पाखाना । कुछ ही मिन्टों में बच्चे पर कंपकपी छा गयी और कुछ देर में ही वह मर गया । माँ ने खुदा के सामने हाथ उठाए और कहा हे अल्लाह ! तूने ही दिया था और तूने ही ले लिया । मैं तेरी इच्छा पर राज़ी हूँ । अब तू ही मुझे धैर्य प्रदान कर । इसके बाद सूनी गोद अपनी ससुराल डस्का वापस लौट आयीं ।

फिर कुछ साल बाद दूसरा बेटा पैदा हुआ जिसका नाम रफ़ीक़ था जो ज़फ़र से भी अधिक सुन्दर था । मेरे दादा जी ने माँ से कहा, कि जब तक यह बच्चा चलने फिरने न लगे और आप से अलग रहने के योग्य न हो जाए तब तक आपको अब अपने गाँव दाता ज़ैदका न जाने देंगे ।

रफ़ीक़ लगभग दो वर्ष का हो गया था माँ अभी अपनी ससुराल डस्का में ही थीं कि अचानक ननिहाल में किसी की मृत्यु हो गई और

विवश होकर माँ को अपने गाँव दाता ज़ैदका जाना पड़ा । जाते समय मेरे दादा जी ने कहा कि रफ़ीक़ को यहीं डस्का में छोड़ जाएँ लेकिन माँ ने छोड़कर जाना पसन्द न किया । इस पर दादा जी ने वहाँ केवल एक सप्ताह या दस दिन ही ठहरने की आज्ञा दी ।

दाता ज़ैदका पहुँचने के एक-दो दिन बाद फिर जय देवी आई और उसने अपनी पुरानी मांग दोहराई और माँ ने फिर वही उत्तर दिया । इस अवसर पर मेरे नानाजी ने मेरी माँ से कहा, यह कौन सी बड़ी बात है कुछ रुपयों की ही तो बात है, जो कुछ यह मांगती है, उसे दे दो और यदि तुम्हें कोई परेशानी है तो हम दे देते हैं । इस पर माँ ने कहा, कि यह कुछ रुपयों की बात नहीं है यह मेरे ईमान की परीक्षा है । क्या मैं यह मान लूँ कि मेरे बच्चे की ज़िन्दगी इस औरत के हाथ में है ? यह तो खुला-खुला शिर्क है । यदि मेरे बच्चे को अल्लाह तआला ज़िन्दगी देगा तो यह जीवित रहेगा और यदि वह इसे ज़िन्दगी प्रदान नहीं करेगा तो कोई दूसरी ताक़त इसे ज़िन्दा नहीं रख सकती । मैं अपने ईमान को शक में कभी नहीं डालूंगी । बच्चा जीवित रहे या न रहे ।

दो चार दिन बाद माँ ने स्वप्न में देखा कि उनके गाँव की एक औरत शिकायत कर रही है कि उसके बच्चे का कलेजा जय देवी ने निकाल लिया है और किसी ने उससे पूछताछ नहीं की । यदि किसी बड़े आदमी के साथ ऐसा बर्ताव होता तो वह जय देवी को अपमानित करके गाँव से निकाल देता । माँ ने स्वप्न में ही उत्तर दिया, कि ज़िन्दगी और मौत तो अल्लाह तआला के हाथ में है । जय देवी का इसमें कुछ भी दखल नहीं । वस्तुत: मेरे बच्चे के साथ भी ऐसी ही घटना हुई थी । लेकिन हमने तो जय देवी को कुछ नहीं कहा ।

माँ कहा करती थीं कि मेरा यह कहना ही था कि स्वप्न में मैंने देखा कि मानो एक ओर कोई खिड़की खोली गई है और उससे जय देवी का चेहरा नज़र आया और उस ने मुझे संबोधित करके कहा "अच्छा अब की बार भी यदि बच्चे को ज़िन्दा वापिस ले गयी तो मुझे

क्षत्रिय की बेटी न कहना, चूड़े की बेटी कहना"।

माँ की डर से आँख खुल गई, देखा कि दीपक बुझ चुका है । माँ की यह आदत थी कि वह अपने सोने वाले कमरे में दीपक जलाकर ज़रूर रखती थीं और बताया करती थीं कि जब भी स्वप्न में जय देवी दिखाई दिया करती थी तो आँख खुलने पर कमरे में हमेशा अँधेरा हुआ करता था । अत: माँ ने मेरी नानी जी को आवाज़ देकर जगाया जो उसी कमरे में सोई हुई थीं, जब उन्होंने दीपक जलाया तो माँ ने देखा कि रफ़ीक़ ने खून की उल्टी की है और साथ ही उसे खून का पाखाना भी हुआ है और बेहोश हो गया है । अत: यह सोचकर माँ बहुत घबरायीं कि इसके दादा तो इसे आने ही नहीं देते थे अब यदि ज़फ़र की तरह यह भी यहीं देहान्त पा गया तो डस्का में मेरा तो कोई ठिकाना नहीं ।

अत: उन्होंने अपने माँ-बाप से कहा, कि तुरन्त सवारी का प्रबन्ध करें । मैं अभी बच्चे को लेकर डस्का जाऊँगी । भोर का समय था तुरन्त दो तांगों का प्रबन्ध किया गया और माँ और नानी रफ़ीक़ को उसी हालत में लेकर दो सेवकों के साथ दाता ज़ैदका से चल पड़ीं ।

जब कुछ पौ फटने लगी तो माँ ने देखा कि रफ़ीक़ बिल्कुल मुर्दा सा हो गया है और ज़िन्दगी के कुछ आसार दिखाई नहीं देते । कहा करती थीं कि मैं ने समझ लिया था कि उसकी मौत का समय आ चुका है । लेकिन साथ ही मुझे यह विश्वास था कि अल्लाह तआला मौत को भी टाल देने में समर्थ है । अत: मैं ने घोड़े की रास उसके गर्दन पर डाल दी और दोनों हाथ उठाकर दुआ शुरू की, कि हे अल्लाह तू जानता है की मुझे इस बच्चे के प्राणों की परवाह नहीं, यदि तेरी मर्ज़ी इसको बुला लेने कि ही है तो मैं तेरी मर्ज़ी को खुशी से स्वीकार करती हूँ लेकिन मुझे अपनी इज्ज़त की चिन्ता है । यदि यह बच्चा आज मर गया तो मेरा डस्का में कोई ठिकाना नहीं । हे दयावन् खुदा ! तू ही ज़िन्दगी और मौत का मालिक है तू मेरी गिडगिडाहट को सुन और इस बच्चे को दस दिन की और मोहलत प्रदान कर, ताकि उसके दादा उसे

हँसता खेलता देख ले । दस दिन के बाद फिर तू इसे बुला लीजियो । मैं इसके मरने पर उफ तक न करूंगी ।

कहा करती थीं की मुझे मालूम नहीं कि कितनी देर मैं ने यह दुआ की । लेकिन मैं अभी यह दुआ कर रही थी कि रफ़ीक़ ने मेरे दुपट्टे को खींचा और सेहतमन्द आवाज़ में बे-बे कहकर मुझे पुकारा, मैंने देखा कि वह बिल्कुल स्वस्थ होकर मेरी गोद में खेल रहा है । तब मुझे विश्वास हो गया कि मेरे खुदा ने मेरी दुआ सुन ली, और मेरा दिल खुदा के शुक्र से भर गया ।

डस्का पहुँचने पर रफ़ीक़ के दादा यह देखकर बहुत खुश हुए कि ये लोग वादा से पहले ही वापिस आ गए । पोते को गोद में लिया और प्यार किया और हँसी हँसी उससे बाते करते रहे और इसी तरह दिन गुज़रते गए ।

माँ कहा करती थीं कि मैं दादा और पोते को खुश-खुश देखकर मुस्कुराया करती थी कि यह रफ़ीक़ नहीं, यह तो अल्लाह तआला की क़ुदरत हँस और मुस्कुरा रही है । रफ़ीक़ तो खुदा तआला को प्यारा हो चुका है । अत: पूरे दस दिन बीतने पर रफ़ीक़ की खेलते-खेलते वही हालत हो गई जो दाता ज़ैदका में हुई थी । उसी तरह उसे खून की उल्टी और दस्त हुई और कुछ ही देर में वह मृयु पा गया । मेरी माँ की गोद फिर ख़ाली हो गई । लेकिन उन्होंने खुशी-खुशी अल्लाह तआला की मर्ज़ी को स्वीकार किया और अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया, कि तूने एक असहाय औरत की दुआ सुनी और उसकी हालत पर रहम किया और उसकी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त की ।

मेरा जन्म

मेरा जन्म 6 फरवरी सन् 1893 ई. को स्यालकोट में हुआ था । माँ कहा करती थीं कि तुम्हारे जन्म से एक रात पूर्व मैने फिर जय देवी

को स्वप्न में देखा । उसने कहा कि अमुक समय लड़का पैदा होगा । लेकिन साथ यह भी कहा कि कुछ सावधानियां ज़रूरी हैं । पहली यह कि पैदा होते ही लड़के की नाक छेद देना और ऊँट का बाल छेद में डाल देना । दूसरी यह कि कल रात अपने मकान की सबसे ऊपरी मंजिल की छत के उस कोने पर जहाँ चील बैठा करती है, आटे और घी हल्दी का एक दीपक बनाकर जला देना ।

इस स्वप्न को माँ ने पिता जी को सुनाया और ठीक उसी समय जो स्वप्न में बतलाया गया था, मेरा जन्म हुआ । माँ कहा करती थीं कि मैंने देखा कि तुम्हारी फूफी (बुआ) मुबारक बीबी ने एक छोटी सी कटोरी में एक सुई तैयार करके रखी हुई है जिसमें धागे की जगह एक बाल डाला हुआ था । मैंने पूछा कि यह क्या है ? तो उसने उत्तर दिया, कि यह आपके स्वप्न के अनुसार ऊँट का बाल मंगवाया गया है ताकि बच्चे की नाक इससे छेद दी जाए । माँ ने कहा, मैं ऐसा कदापि नहीं करने दूँगी । फूफी साहिबा ने कहा, भाईजान (अर्थात मेरे पिताजी) कहते हैं कि कोई हर्ज नहीं, जैसे स्वप्न में कहा गया है वैसे कर दिया जाए साथ ही आटे, घी और हल्दी का एक दीपक भी बना लिया गया । माँ ने कहा ये सब मुश्रीकाना बातें हैं । मैं ऐसा करने की कदापि अनुमति नहीं दूँगी । मेरे बच्चे को यदि अल्लाह तआला ज़िन्दगी देगा तो बचा रहेगा । मैं अपना ईमान कदापि नहीं खोऊंगी । अत: ऊँट का बाल और दीपक दोनों फेंक दिए गए और अल्लाह तआला के फ़ज्ल से मेरी माँ ने पुन: ईमान बचाए रखा ।

जय देवी ने काफी लम्बी आयु पाई । लेकिन बेचारी का जीवन मुसीबत में ही गुज़रा । लोगों में चुड़ैल के नाम से मशहूर थी । इसलिए अधिकतर लोग उसे नफ़रत की दृष्टि से देखते थे । जब वह बूढ़ी हो गई तो खाने-पीने को भी मोहताज हो गई, कोई व्यक्ति उसके पास तक न जाता था । यहाँ तक कि उसकी आख़िरी बीमारी में उसे कोई पानी पिलाने वाला भी न मिलता था, बहुत कष्ट और दर्द की हालत

में पड़ी रहती थी । अन्ततः तंग आकर उसने अपनी चारपाई को आग लगा दी और जलकर मर गई ।

दादा जी का देहान्त

जब मेरे दादा जी का देहान्त हुआ, उस समय मेरी आयु लगभग 5 वर्ष की थी । उन की बीमारी के समय मेरे पिता हर दिन शाम को डस्का चले जाया करते थे और कचेहरी के काम के लिए सुबह स्यालकोट आ जाया करते थे । डस्का और स्यालकोट के बीच सीधी सड़क से 16 मील की दूरी है । चूँकि यह सड़क कच्ची है इसलिए पिता जी घोड़े पर आया-जाया करते थे मानो उन दिनों वे सर्दी (अर्थात फरवरी) में प्रतिदिन 32 मील की यात्रा तय करके सारा दिन कचेहरी में काम किया करते थे । इसके अतिरिक्त घर पर भी मुक़दमों की तैयारी के लिए समय निकालते थे । जिस दिन दादा जी का देहान्त हुआ उस दिन मेरे पिता जी दादा जी के पास डस्का में ही थे, और माँ और तीनों बच्चे (अर्थात मैं, मेरी बहन और छोटा भाई शुकरुल्लाह खान) स्यालकोट में थे । जब हमें तार द्वारा यह सूचना मिली तो माँ हम तीनों को लेकर तुरन्त डस्का चल पड़ी । जब हम डस्का पहुँचे तो हमारे घर में और अतिथिगृह में लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ थी । दादा जी के जनाज़ा (शवयात्रा) में इतने लोग थे की बाज़ार में से गुज़रने पर लोगों को दुकानें बन्द करनी पड़ी ।

दादा जी का निधन हमारे खानदान के लिए बहुत बड़ा सदमा था । वह मेरी माँ के साथ विशेष हमदर्दी और प्रेम का व्यवहार किया करते थे । इसलिए माँ को उनके निधन से बहुत बड़ा सदमा पहुंचा और उन दिनों के रीति-रिवाज के अनुसार उनके मातम (विलाप) में बढ़चढ़ कर भाग लिया ।

मैं ऊपर वर्णन कर चुका हूँ कि हमारे दादा जी को ऐसे रीति -

रिवाजों से बहुत नफ़रत थी । अत: उनके निधन के कुछ समय पश्चात मेरी माँ ने उन्हें स्वप्न में देखा और उन्होंने माँ को दोज़ख़ (नर्क) का एक दृश्य दिखाया । जहाँ कुछ औरतों को दर्दनाक सज़ा दी जा रही थी, बताया कि ये वे औरतें हैं जो मातम् (विलाप) किया करती थीं और रोती-पीटती थीं । आप इस दृश्य से सीख प्राप्त करें और भविष्य में ऐसा करने से तौबा करें, फिर दादा जी माँ को हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज़ार (क़ब्र) पर ले गए और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहो अन्हा का मज़ार दिखाया । ये दोनों मज़ार एक बाग़ में दिखाई देते थे और सिर की तरफ़ एक अत्यन्त साफ पानी का फव्वारा चल रहा था । माँ ने उस फव्वारे के पानी से वुज़ू किया और आगे के लिए अपनी इस कमज़ोरी से तौबा की ।

इसके थोड़े समय बाद हमारे सगे-संबंधियों में किसी दूसरे का निधन हो गया और माँ को मातमपुर्सी के लिए जाना पड़ा । यद्यपि उनको स्वप्न में काफी डांट – डपट मिल चुकी थी और उनका स्वभाव मातम इत्यादि की रीति-रिवाजों से नफ़रत भी करने लग गया था और डरती भी थीं । लेकिन फिर भी सगी रिश्तेदारी और ख़ानदान के लोगों के लान-तान के डर से उन रस्मों में शामिल हो गयीं ।

इसके बाद उन्होंने स्वप्न में देखा कि उनके शरीर में बहुत सी चींटियाँ लिपटी हुई हैं और वह उनसे छुटकारा पाने के लिए बहुत कोशिश करती हैं । लेकिन कोई कोशिश सफल नहीं होती । जितनी चींटियों को वे शरीर से उतार कर फेंकती है उससे अधिक दूसरी चींटियाँ उन पर चिमट जाती हैं । इसी डर और बेचैनी में उनकी नींद खुल गई । फिर कई बार स्वप्न में उनके साथ यही व्यवहार हुआ । अत: उन्होंने समझ लिया कि यह उस बात की सज़ा है कि मैं तौबा करने के बाद अपनी तौबा पर पूरी तरह क़ायम न रह सकी ।

अत: उन्होंने अल्लाह से बहुत माफ़ी मांगी और पुन: तौबा किया । अभी कुछ दिन ही बीते थे कि माँ ने पुन: मेरे दादा जी को स्वप्न में

देखा, उन्होंने माँ से कहा, आपने बहुत ग़लती की, कि तौबा के बाद पुन: उन्हीं बातों में शामिल हुईं । अब आपने दोबारा तौबा की है, इस पर आप मज़बूती से क़ायम रहें । फिर माँ को एक चादर देकर एक स्वच्छ तालाब की ओर संकेत करके कहा, कि इस चादर का पर्दा करके उस तालाब में जाकर स्नान कर लें । माँ कहा करती थीं कि जब मैं उस तालाब के पास गई तो उसके पानी को बहुत स्वच्छ और रुचिकर पाया । ज्यों-ज्यों मैं उस तालाब के पानी में आगे बढ़ती थी मेरे शारीर से चींटियाँ उतरती जाती थीं और मेरा शरीर बिल्कुल साफ और हल्का होता जाता था । इस स्वप्न से जागने पर मैं ने अल्लाह तआला का बहुत-बहुत शुक्रिया अदा किया और अपने दिल से वादा किया कि अब कभी इन बातों में भाग न लूँगी । इसके बाद मुझे चैन से नींद आने लगी ।

कुछ दिनों के बाद हमारे चचा के बड़े बेटे का निधन हो गया और मेरी माँ को फिर इन रस्मों में थोड़ा-बहुत भाग लेना पड़ा । इस बार उन्होंने स्वप्न में देखा कि लम्बे सींगों वाले दो बैल उन पर हमला करना चाहते हैं और माँ उनसे बचने के लिए इधर-उधर भागती फिरती हैं लेकिन बचने की कोई जगह नहीं मिलती । कई बार वे हमला करके अपने सींगों से उन्हें ज़ख्मी कर देते हैं । हर बार सोने पर उनको यही स्वप्न दिखाई देता था फिर थोड़ी देर में आंख खुल जाती । इस तरह पर नींद हराम हो गई और रात गिडगिड़ाहट और दुआओं में गुज़रती । पिता जी भी उनके लिए बहुत दुआएँ करते थे यह हालत पूरे एक माह तक रही ।

अन्तत: एक महीने तक लगातार खुदा से इस्तिग़फ़ार (क्षमायाचना) और दुआओं के बाद माँ ने पुन: दादा जी को स्वप्न में देखा । उन्होंने माँ को स्वप्न में चेतावनी दी और कहा, कि अब आगे के लिए तौबा का दरवाज़ा बन्द है । यदि फिर आपने यह जुर्म किया तो तौबा क़बूल नहीं होगी । फिर उन्होंने बैलों को रोक दिया और माँ से कहा, अब

बेधडक निकल जाएँ ।

लेकिन अभी एक और परीक्षा शेष थी । इस आखिरी तौबा के कुछ दिनों बाद हमारी बड़ी फूफी का बड़ा बेटा मृत्यु पा गया । जिसमें डस्का की कुछ दूसरी औरतों के साथ माँ और मेरी दादी व चाची हमदर्दी और अफ़सोस का इज़हार करने के लिए फूफी के घर चली गईं ।

उन दिनों हमारे देहात में यह रिवाज था कि मातमपुर्सी के लिए करीबी रिश्तेदार औरतो के आने पर एक कोहराम मच जाया करता था और बहुत चीख व पुकार हुआ करती थी और जिस गाँव में मातम होता वहाँ की औरतें उन काफ़िलों के आने पर अपने मकानों की छतों पर से उनकी चीख व पुकार सुना करती थीं । अत: जब हमारे ख़ानदान की औरतें हमारी फूफी साहिबा के गाँव के निकट पहुंची तो देखा कि वहाँ गाँव की औरतें इस इन्तिज़ार में अपने मकानों की छतों पर बैठी हैं कि उनका रोना-धोना और हाहाकार सुनें ।

माँ ने अपने साथ चलने वाली औरतें से कहा कि वे बिल्कुल रोना-पीटना न करें और खामोशी से फूफी साहिबा के मकान पर पहुंचे । अतएव उन्होंने ऐसा ही किया । लेकिन जब वे गाँव की गली में पहुंची तो दोनों ओर मकानों की छतों पर एकत्र औरतों में से कुछ ने व्यंग कसना प्रारम्भ किया और कहा :-

"बीवियों हंसती हुई चली जाओ"

माँ और साथ की औरतों ने सब्र से यह सब बातें सुनी और बर्दाश्त कीं और खामोशी से फूफी साहिबा के मकान में चली गयीं । वहाँ पहुंच कर भी माँ ने किसी रस्मोरिवाज या रोने-धोने में भाग न लिया और उस परीक्षा में अल्लाह तआला ने उन्हें पूरा उतरने की तौफ़ीक़ दी । इसके बाद माँ अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पूरी मज़बूती से अपने वादे पर क़ायम रहीं ।

यह ज़माना माँ का अहमदियत से पहले का ज़माना था । इस

ज़माने में माँ को स्वप्न और रोआया में अधिकतर दादा जी दिखाई दिया करते थे और उन्हीं के माध्यम से उनकी आध्यात्मिक और नैतिक तरबियत हुई थी और अधिकतर उन्हीं के माध्यम से शुभ सूचनाएं मिला करती थीं ।

सन् 1903 ई. का वर्णन है कि माँ ने दादा जी को स्वप्न में देखा और उनसे कहा, कि मेरे पास यह एक रूपया दाग़दार है इसे बदल दीजिए । उन्होंने वह रूपया ले लिया और अपनी जेब से एक रूपया निकालकर माँ को दिया और कहा, मेरे पास अब यह एक ही रुपया है यह ले लीजिए । लेकिन यह मुहम्मदशाही रुपया है इस पर कलिमा लिखा है इसकी बेअदबी न हो । इस स्वप्न के बाद माँ को पूर्ण विश्वास हो गया कि अल्लाह तआला उन्हें एक पुत्र प्रदान करेगा । लेकिन साथ ही यह चिंता थी कि हमारा एक भाई हम्दुल्लाह खां जो शुकरुल्लाह खां से छोटा और अब्दुल्लाह खां से बड़ा था जिसका स्वस्थ अच्छा नहीं रहता था और कमज़ोर सा था, मृत्यु पा जाएगा ।

अत: कुछ महीने पश्चात असदुल्लाह खां पैदा हुआ और उसके पैदा होने के कुछ महीनों बाद हम्दुल्लाह खां ख़सरा (चेचक) की बीमारी में ग्रस्त हो गया और कुछ दिनों के बाद मृत्यु पा गया । माँ ने इस अवसर पर भी बड़े सब्र से काम लिया और कोई बात मुँह से ऐसी न निकाली जो अल्लाह तआला की नाराज़गी का कारण बनती । हम्दुल्लाह खां की फ़ज्र (अर्थात भोर) के समय मृत्यु हुई जिसे पिता जी दस बजे से पहले दफ़नाकर प्रतिदिन की तरह मुक़दमों की पैरवी के लिए कचेहरी चले गए और हमें भी समय पर तैयार करके मदर्सा भेज दिया गया ।

घर में अहमदियत की चर्चा

इस समय हमारे नाना और मामू अहमदी हो चुके थे । पिता जी भी अख़बार अलहकम मंगवाया करते थे और सिलसिला अहमदिया

की किताबों का अध्ययन किया करते थे और मौलवी अब्दुल करीम साहिब के क़ुरआन करीम के दर्स में शामिल हुआ करते थे ।

मौलवी मुबारक अली साहिब के अहमदी हो जाने के कुछ सालों बाद स्यालकोट छावनी के कुछ ग़ैर अहमदी लोगों ने छावनी की जुमा मस्जिद की इमामत और देखभाल के ओहदे से मौलवी मुबारक अली साहिब को हटाने के लिए मुकदमा दायर कर दिया था और जमाअत अहमदिया स्यालकोट ने पिता जी को मौलवी मुबारक अली साहिब की ओर से मुकदमें की पैरवी करने के लिए वकील नियुक्त किया था ।

इस मुकदमें की सही पैरवी करने के लिए पिता जी को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावों और सिलसिला अहमदिया की किताबों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करना पड़ा और अदालत में जमाअत अहमदिया के अकीदों की हिमायत करनी पड़ी । जिसके परिणाम स्वरूप वह अहमदियत से बहुत प्रभावित हो चुके थे । लगभग सन् 1904 ई.में उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर से मौलवी करमदीन वाले मुकदमें में गवाह के तौर पर सफाई देने के लिए गुरदासपुर बुलाया गया था । वहाँ उन्हें पहली बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मिलने का सौभाग्य मिला था । जहाँ से वह बहुत अच्छा असर लेकर वापिस आए थे ।

मुझे अच्छी तरह याद है कि पिता जी के गुरदासपुर से वापिस आने के बाद कई दिनों तक लोग हमारे यहाँ आते रहे और पिता जी से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में पूछा करते थे और तीसरे पहर से शाम तक बातों में अधिकतर यही चर्चा होती रहती थी ।

3 सितम्बर सन् 1904 ई. को लाहौर में मेलाराम के मंड़वे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक लेक्चर था । पिता जी इस अवसर पर लाहौर गए और साथ मुझे भी ले गए । उस समय मेरी आयु साढ़े ग्यारह वर्ष की थी । मैने पहली बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को उसी अवसर पर देखा था । मैंने एक लेख में जो

अलफ़ज़ल में छप चुका है स्पष्ट किया था कि मैं ख़ुदा के फ़ज़्ल से उसी दिन से अहमदी हूँ, यद्यपि मैंने बैअत तीन वर्ष बाद की ।

अहमदियत के बारे में रोअ्या (स्वप्न)

इन दिनों माँ के अहमदियत या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावों का कोई विस्तृत ज्ञान न था । यहाँ तक कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नाम से भी परिचित नहीं थीं । सन् 1904 ई. में उन्होंने कुछ रोअया (स्वप्न)देखे, जिनके आधार पर उन्हें सितम्बर 1904 ई. के अन्त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

इस सन्दर्भ में पहला रोअया (स्वप्न) जो आपने देखा, यह था कि बाज़ार में बहुत रौनक़ है और लोग अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनकर कहीं जा रहे हैं माँ ने उनसे पूछा तो ज्ञात हुआ कि वे किसी नज़ारा को देखने जा रहे हैं । माँ ने पिताजी से कहा कि आप भी अपनी गाड़ी तैयार कराएँ ताकि हम भी जाकर यह नज़ारा देखें । अत: पिता जी ने गाड़ी तैयार करवाई और दोनों गाड़ी में बैठकर चले गए । माँ कहा करती थीं कि जब हम चौधरी मुहम्मद अमीन साहिब (वर्तमान एड्वोकेट शेखूपुरा) के मकान के सामने पहुंचे तो उन्होंने तुम्हारे पिताजी को आवाज़ देकर बुला लिया और तुम्हारे पिता वहाँ रुक गए और मैं अकेली उस मैदान की ओर चली गई जहाँ लोग एकत्र हो रहे थे । वहाँ जाकर मैंने देखा कि लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ एकत्र है यहाँ तक कि पेड़ों की टहनियों पर भी लोग लटके हुए हैं । लेकिन मैदान के बीच में जगह खाली है और बीच में एक झूला लटक रहा है जिसकी रस्सियाँ आसमान में जाकर ओझल हो जाती हैं । उस झूले पर एक कपड़ा पर्दे के तौर पर लटक रहा है ऐसा प्रतीत होता है कि उस पर्दे के नीचे कोई इन्सान है जो नज़र नहीं आता । मैदान के एक तरफ़ एक

गैलरी (चित्रशाला) के तौर पर कुर्सियाँ बनी हुई थीं जिन पर मैंने देखा कि एक स्थान पर दो लोगों की जगह ख़ाली है । मैं वहाँ जाकर बैठ गई और ख़ाली भाग को भी रोक लिया । जब कोई व्यक्ति उस जगह पर बैठना चाहता तो मैं उसे यह कहकर रोक देती कि यह मेरे साथी की जगह है । मैं इस प्रतीक्षा में थी कि तुम्हारे पिता जी आ जाएँ और ख़ाली जगह पर बैठ जाएँ ।

थोड़ी देर के बाद वह झूला पूरब-पश्चिम झूलना शुरू हुआ और उससे एक नूर निकलने लगा । ज्यों-ज्यों झूला तेज़ होता जाता था, वह नूर भी बढ़ता जाता था और जिस तरफ़ को वह झूला जाता उस तरफ़ के लोग बड़े जोश से पुकारते थे :-

"सदक़े या रसूलुल्लाह"

अन्तत: यह झूला इतनी ज़ोर से झूलने लगा कि यों प्रतीत होता था कि धरती के एक किनारे से लेकर दूसरे किनारे तक पहुँचता है ।

दूसरा रोअया (स्वप्न) माँ ने यह देखा कि सुबह चार बजे के लगभग मक्का शरीफ जाने की तैयारी कर रही हैं और यूँ महसूस किया है कि इस समय यात्रा शुरू की है और शाम 4 बजे के लगभग देखा कि वह तांगा जिसमें सवार हैं बरगद के पेड़ के पास खड़ा कर दिया गया है । उन्होंने तांगा चलाने वाले से कहा कि मैं तो मक्का जाना चाहती हूँ, उसने कहा यही मक्का है जहाँ आप पहुँच गई हैं ।

कहती थीं, मैं अचम्भित हुई कि इतनी जल्दी मक्का कैसे पहुँच गई । फ़ज्र (भोर) के समय यात्रा शुरू की थी और अस्र के समय समाप्त हो गई । इसी आश्चर्य में मैं तांगा से उतरकर एक बाज़ार से निकल कर एक गली में से होती हुई एक मकान में दाखिल हुई और पहली मंजिल पर पहुँची तो वहाँ देखा कि आंगन में एक तख़्तपोश बिछा हुआ है उस पर रजिस्टर जैसी एक मोटी किताब रखी हुई है और उसके पास ही एक सन्दूक है जिसके ऊपर के ढक्कन में एक सूराख है मैंने उस सूराख के दोनों ओर हाथ रखकर और अपना मुँह उस सूराख

के निकट करके तीन बार ऊँची आवाज़ से कहा, "हे अल्लाह मेरे गुनाह बख्श" और फिर स्वयं ही पूछा 'बख्शोगे' ? तो ऊँची आवाज़ से जवाब मिला ।

"मैं बख्शने वाला हूँ, बख्शूँगा, यदि तुम्हारा नाम इस रजिस्टर में दर्ज हुआ तो"

मैंने स्वप्न में ही सोचा कि शायद यह रजिस्टर जन्म और मृत्यु पंजीकरण का है और सोचने लगी कि पता नहीं चौकीदार ने मेरे जन्म के समय मेरा नाम दर्ज कराया था या नहीं । फिर मेरी नींद खुल गई ।

यह रोअया (स्वप्न) देखने के कुछ समय बाद माँ दाता ज़ैदका गयीं और वहाँ इस रोअया के वर्णन करने पर हमारे नाना ने कहा कि तुमने यह क़ादियान का नज़ारा देखा है । तुम्हें चाहिए कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब की बैअत कर लो । माँ ने कहा जिस बुज़ुर्ग के बारे में आप कहते हैं यदि वह खुदा तआला की ओर से हैं तो अल्लाह तआला अवश्य मुझे उनके दर्शन कराएगा और उनकी सच्चाई मुझ पर खोल देगा ।

रोअ्या (स्वप्न) में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दर्शन

स्यालकोट वापिस आने के कुछ समय बाद उन्होंने फिर एक स्वप्न देखा कि रात के समय अपने मकान के आंगन में इस तरह प्रबन्ध करने में व्यस्त हैं कि मानो बहुत से मेहमानों के आने की उम्मीद है । इसी बीच दालान के अन्दर जाने का संयोग हुआ तो देखा कि पश्चिम की तरफ़ वाली कोठरी में बहुत उजाला हो रहा है, हैरान हुईं कि वहाँ तो कोई लैम्प इत्यादि नहीं है, यह रोशनी कैसे हो रही है, अत: आगे बढ़ीं तो देखा कि कमरा रोशनी से दमक रहा है और एक

पलँग पर एक नूरानी शक्ल के बुज़ुर्ग बैठे हैं और एक नोट बुक में कुछ लिख रहें हैं । माँ कमरे में दाखिल होकर उनकी पीठ की ओर खड़ी हो गयीं । जब उन्होंने महसूस किया कि कोई आदमी कमरे के अन्दर आया है तो उन्होंने अपने जूते पहनने के लिए पाँव पलँग से नीचे किए, मानो कमरे से चले जाने की तैयारी करने लगे । माँ ने निवेदन किया, "हे हज़रत मुझे सारी उम्र में कभी इतनी खुशी महसूस नहीं हुई जितनी आज मैं महसूस कर रही हूँ, आप थोड़ी देर तो और बैठें । अत: वह बुज़ुर्ग थोड़ी देर और ठहर गए और फिर जब जाने लगे तो माँ ने पूछा, "हे हज़रत अगर कोई मुझसे पूछे, कि तुम्हें कौन बुज़ुर्ग मिले हैं तो मैं क्या बताऊँ ?" उन्होंने दाएं कन्धे के ऊपर से पीछे की ओर देखकर और दांया हाथ उठाकर कहा :-

"अगर आप से कोई पूछे कि कौन मिले हैं तो कहें अहमद मिले हैं ।" इस पर माँ जाग गईं । हमारे मामू साहब भी उस दिन स्यालकोट ही में थे । माँ ने इस रोअया का वर्णन पिता जी और मामू साहब से किया । मामू साहब ने कहा यह तो मिर्जा साहिब थे । माँ ने कहा, उन्होंने अपना नाम मिर्जा साहिब तो नहीं बताया, अहमद बताया है । मामू साहब ने कहा, मिर्जा साहिब का नाम ग़ुलाम अहमद है फिर माँ से कहा आप दुआ करतें रहें अल्लाह तआला आप पर सच्चाई खोल देगा ।

कुछ दिनों के अन्दर ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्यालकोट आने की सूचना मिल गई । माँ ने पुन: रोअया में देखा कि वह कुछ सड़कों से गुज़रती हुई एक छत वाली गली से होकर एक मकान पर पहुँची हैं और उसकी पहली मंजिल पर उन्हीं बुज़ुर्ग को फिर देखा और उन्होंने माँ से कहा कि इतनी बार देखने के बाद भी क्या आपको विश्वास नहीं हुआ ? तो माँ ने कहा, "अलहम्दुलिल्लाह मैं ईमान ले आती हूँ" ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्यालकोट में आगमन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्यालकोट आना उस शहर के लिए सदैव गर्व और विशेषता का कारण रहेगा। हुज़ूर ठीक मग़रिब (शाम) के बाद पहुंचे। स्टेशन पर लोगों की इतनी भीड़ थी कि प्लेटफार्म पर उनको व्यवस्थित रूप से संभालना मुश्किल था। इसलिए यह व्यवस्था की गई थी कि जिस गाड़ी में हुज़ूर और हुज़ूर के ख़ानदान के लोग और करीबी लोग यात्रा कर रहे थे उसे काटकर मालगोदाम के प्लेटफार्म पर पहुँचा दिया गया। मालगोदाम का भारी भरकम सहन (प्रांगण) लोगों से पूरी तरह भरा हुआ था और उसके बाहर सड़क पर भी लोगों की भीड़ थी। स्टेशन पर और उन बाज़ारों में जहाँ से हुज़ूर की सवारी गुज़रनी थी पुलिस तैनात थी।

पुलिस कप्तान और जिले के अधिकतर शासनाधिकारी और सम्माननीय मजिस्ट्रेट प्रबन्ध की देखभाल के लिए मौजूद थे। बाज़ारों में और घरों की खिड़कियों और छतों पर भी बहुत से लोग मौजूद थे उनमें से अधिकतर देखने वाले या तमाशबीन थे। कुछ मुखालिफ़ भी थे। कुछ मुखालिफों और सज्जाद: नशीनों ने लोगों को बार-बार रोकने की कोशिश की थी कि वे हुज़ूर को देखने या स्वागत के लिए न जाएँ। लेकिन यह मुखालिफ़त स्वयं उस भीड़ के बढ़ाने में सहायक हो गई।

मैं भी पिता जी के साथ स्टेशन गया, पर भीड़ की अधिकता के कारण हमें हुज़ूर की गाड़ी के निकट पहुँचने का अवसर न मिला। दूर से अपनी गाड़ी में बैठे हुए स्वागत का दृश्य देखते रहे। जब हुज़ूर की सवारी एक जुलूस की दशा में स्टेशन से रवाना हो गई तो हम वापिस आ गए। लेकिन मेरे मामू साहिब जुलूस के साथ-साथ गए और हुज़ूर के ठहरने के स्थान पर पहुँचने के बाद घर वापिस आए और उनसे हमने

विस्तार पूर्वक वे घटनाएँ सुनीं जो हुज़ूर और हुज़ूर के करीबी लोगों के साथ स्टेशन से लेकर हुज़ूर की विश्रामगृह तक हुईं ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने परिवार और ख़ानदान समेत हज़रत मीर हामिद शाह साहिब के मकान पर उतरे और हज़रत खलीफतुल मसीह अव्वल रजियल्लाहो अन्हो बाबू अब्दुल अज़ीज़ साहिब के मकान पर ठहरे ।

माँ का अहमदी होना

दूसरे दिन सुबह माँ ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखने जाने के लिए पिताजी से अनुमति माँगी । पिताजी ने आज्ञा दे दी और कहा कि आप देख आएँ लेकिन बैअत न करें, मैं तहकीक़ में लगा हूँ आखिरी फैसला इकट्ठे सोचकर करेंगे । माँ ने कहा, यदि यह वही बुज़ुर्ग होंगे जिन्हें मैंने स्वप्न में देखा है तो फिर तो मैं बैअत में देरी नहीं कर सकती । क्योंकि मैं स्वप्न में इक़रार कर चुकी हूँ और देर करने से इक़रार टूट जाएगा और यदि यह वह बुज़ुर्ग नहीं तो फिर आप भी तहकीक़ करते रहें मैं भी गौर कर लूँगी । पिताजी ने पुन: समझाने की कोशिश की कि बिना और मशाविरा के कोई अटल फैसला न करें । यह नसीहत करके फिर कचेहरी चले गए ।

माँ दोपहर के भोजन के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विश्रामगृह की तरफ़ चल पड़ी । रास्ते में मकान के बनावट को देखकर माँ ने पहचान लिया कि यह वही मकान है जिसे उन्होंने स्वप्न में देखा था ।

जब माँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखने के लिए हज़रत मीर हामिद शाह साहिब के मकान पर गईं तो मैं भी उनके साथ था । हज़रत उम्मुल मोमिनीन की सेवा में हाज़िर होकर उन्होंने निवेदन किया कि हुज़ूर के दर्शन के लिए हाज़िर हुई हूँ । हुज़ूर उस समय मकान

की छत वाले कमरे में थे और सम्भवत: लेक्चर स्यालकोट की तैयारी में व्यस्त थे । अत: ऊपर से कहला भेजा कि थोड़ी देर में आएँगे ।

थोड़ी देर के बाद हुज़ूर आए और आंगन के बीच में बिछे हुए एक तख्त पर बैठ गए । माँ कुछ दूसरी औरतों के साथ एक लकड़ी के तख्त पर बैठी थीं जो उस पलँग से दो गज़ की दूरी पर बिछा था । माँ ने कहा, "हुज़ूर मैं बैअत करना चाहती हूँ" । हुज़ूर ने कहा, "बहुत अच्छा" । फिर माँ ने बैअत कर ली । यह ज़ुहर (अर्थात दोपहर) का समय था ।

वापिस घर पहुंचकर माँ ने मुझे कुछ अचार दिया और कहा कि यह अचार हज़रत उम्मुल मोमिनीन के पास जाकर पहुँचा दो । क्योंकि उन्होंने अचार की इच्छा प्रकट की थी और माँ ने कहा था कि हमारे यहाँ बहुत अच्छा अचार मौजूद है ।

जब पिता जी कचेहरी से वापिस आए तो माँ से पूछा कि " क्या आप मिर्ज़ा साहिब के दर्शन के लिए गए थे" ? माँ ने उत्तर दिया, "गई थी" । पिता जी ने पूछा, "बैअत तो नहीं की" ? माँ ने अपने सीने पर हाथ रखकर कहा, "अलहम्दुलिल्लाह कि मैंने बैअत कर ली है" । इस पर पिता जी ने कुछ नाराज़गी प्रकट की । माँ ने कहा कि यह ईमान का मामला है इसमें आपकी नाराज़गी मुझ पर कोई असर नहीं कर सकती । यदि यह बात आप को बहुत बुरी लगी हो तो आप जो चाहे फैसला कर दें । जिस खुदा ने अब तक मेरी हिफ़ाज़त और परवरिश का प्रबन्ध किया है वह आगे भी करेगा ।

सम्भव है कि हुज़ूर के स्यालकोट में क़याम के दौरान माँ ने पुन: हुज़ूर को देखा हो । लेकिन स्यालकोट से हुज़ूर के वापिस आने के बाद हुज़ूर को उनकी ज़िन्दगी में देखने का माँ को कोई अवसर नहीं मिला । वस्तुत: उन्होंने तो श्रद्धा और वफ़ादारी की प्रतिज्ञा स्वप्न में ही कर ली थी फिर बैअत के शब्दों से उसकी नए सिरे से प्रतिज्ञा की और उसका प्रत्यक्ष प्रमाण क़ायम किया और फिर मरते दम तक उसे

उस तरह से निभाया जैसा कि उसका हक़ था । बैअत के बाद हर दिन और हर पल जो उनके जीवन में आया वह उनके ईमान और प्रेम के बढ़ने पर प्रमाण हुआ । उनका ईमान प्रारम्भ से ही प्रेम की झलक अपने अन्दर रखता था और धीर-धीरे वह प्रेम इतना बढ़ गया कि उन्हें हर बात में अल्लाह तआला का प्रताप और सामर्थ्य और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नूर और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई नज़र आती थी ।

बैअत के बाद उनके व्यवहार में भी जल्द-जल्द बदलाव होता गया । उनकी असल तरबियत तो अल्लाह तआला ने स्वप्न और रोअया के द्वारा ही जारी रखी । लेकिन प्रत्यक्ष रूप से भी जब भी कोई आदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम या उनके देहान्त के पश्चात् हज़रत खलीफतुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो या उनके बाद हज़रत खलीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो का उन तक पहुँचता तो वह शीघ्र ही बड़ी तत्परता से उस पर व्यवहार करने लग जातीं । उनको अल्लाह तआला ने प्रारम्भ से ही अपनी आज्ञा पर चलने और अपनी इच्छा पर राज़ी रहने का स्वभाव प्रदान किया था । उनके दिल में उन आदेशों के सम्बन्ध में कोई चूं चिरा पैदा ही नहीं होता था ।

पिता जी का अहमदियत क़बूल करना

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्यालकोट आने के समय पिताजी का भी दिल बड़ी हद तक अहमदियत से प्रभावित हो चुका था और वह समझते थे कि अब आख़िरी निर्णय का समय आ गया है । उन दिनों उनका अधिकतर उठना-बैठना चौधरी मुहम्मद अमीन साहिब के साथ रहा करता था । वह चाहते थे कि चौधरी मुहम्मद अमीन साहिब और वह एक साथ निर्णय करें । जब पिताजी ने इस बारे में चैधरी मुहम्मद अमीन साहिब से परामर्श किया तो चौधरी

साहिब ने कहा कि मेरे दिल में कुछ शंकाएँ हैं मैं चाहता हूँ कि उन्हें दूर किया जाए । अत: हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब (जो कि अभी खलीफ़ा नहीं बने थे) ने आज्ञा दी कि यह दोनों मग़रिब के बाद हुज़ूर के पास आ जाया करें और चौधरी मुहम्मद अमीन साहिब अपनी शंकाओं और ऐतराज़ों को दूर कर लें ।

मैं भी मग़रिब (शाम) के बाद उस मज्लिस में पिता जी के साथ हाज़िर हो जाया करता था । तीन-चार दिन के बाद चौधरी मुहम्मद अमीन साहिब ने पिता जी के पास आकर कहा कि उनके ऐतराज़ों का उत्तर मिल गया है । इस पर पिताजी ने कहा, कि कल बैअत कर लेंगे । लेकिन दूसरे दिन सुबह जब पिताजी चौधरी मुहम्मद अमीन साहिब के घर गए और उनसे कहा कि चलो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास बैअत के लिए चलें, तो चौधरी अमीन साहिब ने कहा कि उन्हें पूरी तरह तसल्ली नहीं हुई । अत:पिताजी उनके बिना ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास चले गए और बैअत कर ली । इस अवसर पर भी मैं उनके साथ था । यह दिन सम्भवत: अक्टूबर के प्रारम्भिक दो-तीन दिनों में से था और समय फ़ज्र की नमाज़ के बाद का ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्यालकोट में ठहरने के दौरान बहुत से लोगों ने बैअत की । लेकिन फैज़ुद्दीन साहिब और पिताजी के सिलसिला (अर्थात जमाअत अहमदिया) में शामिल होने पर स्यालकोट में बहुत चर्चा हुई ।

इसके लगभग एक वर्ष बाद अर्थात सितम्बर 1905 ई. में पिताजी पहली बार क़ादियान गए और मुझे भी साथ ले गए । बाद में उनका यह नियम रहा कि जब तक वह स्यालकोट में प्रैक्टिस करते रहे, सितम्बर की छुट्टियों का कुछ भाग क़ादियान दारुल-अमान में गुज़ारा करते थे और जलसा सालाना में शामिल होने के लिए भी आया करते थे । मैं भी उन दिनों में अक्सर उनके साथ क़ादियान आ जाया करता था ।

माँ की मुझसे मुहब्बत

माँ का दिल बहुत नरम और ममतापूर्ण था और विशेष रूप से मैं इस ममता का पात्र ठहरा, कुछ तो इस दृष्टि से माँ को मुझसे विशेष लगाव था कि पांच बच्चों की मृत्यु के बाद मुझको अल्लाह तआला ने जवानी की उम्र तक पहुँचने का सौभाग्य प्रदान किया और कुछ इस दृष्टि से कि बचपन में ही मुझको आँखे दुखने की बीमारी हो गई और हालत यह हो गई कि दस वर्ष की आयु से लेकर सोलह वर्ष की आयु तक गर्मियों में मैं बहुत कम बाहर निकल सकता था और कभी-कभी कई-कई सप्ताह अँधेरे कमरे में रहकर गुज़ारने पड़ते थे । इस सारी अवधि में माँ अधिकतर मेरे पास रहा करती थीं । इस तरह मुझे उनके साथ रहने का विशेष रूप से समय मिलता रहा, फिर “दिल से दिल को राह” के अन्तर्गत मुझे भी दस्तूर से बढ़कर उनसे मुहब्बत होती गई । यों तो उनका दिल मुहब्बत और ममता का एक बहता हुआ दरिया था जो अपने और पराए का अन्तर न जानता था और अपनी सारी संतानों और सम्बन्धियों के साथ तो उन्हें प्रेम का अथाह सम्बन्ध था । लेकिन मेरे और माँ के बीच मुहब्बत का जो रिश्ता था उसकी हालतों को हमारे दो दिल ही जानते थे ।

माँ को हर बेटे से जुदाई बहुत कष्टदायक लगती थी । लेकिन मुझसे दूरी बर्दाश्त करने पर उन्हें बहुत अधिक कष्ट होता था । सन् 1907 ई. में जब मैं इन्ट्रेन्स की परीक्षा पास करके गवर्नमेन्ट कालेज लाहौर में प्रवेश लिया और पहली बार लम्बे समय तक घर से बाहर रहना पड़ा, तो माँ ने बार-बार कहा, कि मैं हर सप्ताह उनके पास आ जाया करूँ । लेकिन हर सप्ताह लाहौर से स्यालकोट जाना बहुत मुश्किल था इसलिए मैं हर दूसरे सप्ताह उनके पास चला जाया करता था । हर बार लाहौर वापिस आते समय कहा करती थीं कि लाहौर पहुँचते ही अपने सकुशल पहुँचने की सूचना जरूर देना ।

Ver 2017.01.15/02

मुझ पर उन्हें बहुत सुधारण थी । सन् 1910 ई. की गर्मियों की छुट्टियों में मैं बी.ए. की परीक्षा की तैयारी के लिए एबटावाद गया था । छुट्टियों के आखिरी दिनों में रमज़ान का महीना आ गया । जब मैं छुट्टियों के अन्त में स्यालकोट वापिस पहुँचा तो माँ ने मुझ से कहा, कि तुम्हारे पिताजी तो अनुमान लगाया करते थे कि तुमने रोज़े नहीं रखे होंगे लेकिन मैं बार-बार कहती रही कि मेरे बेटे ने अवश्य रोज़े रखे होंगे । अब बताओ हम दोनों में से किसका अनुमान सच्चा था ?

मैंने कहा कि आपका अनुमान सच्चा था । अल्लाह तआला के फ़ज्ल से मैंने पूरे रोज़े रखे हैं बल्कि यात्रा करने के बावजूद आज भी मैंने रोज़ा रखा हुआ है (उस समय मेरी आयु 17 वर्ष की थी और मुझे यह ज्ञात न था कि यात्रा के दिन रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा नहीं रखना चाहिए) ।

शिक्षा के लिए मेरा लन्दन जाना

सन् 1911 ई. में मेरे बी.ए. पास होने पर पिताजी की यह इच्छा हुई कि मुझे आगे शिक्षा हेतु लन्दन भेजें । उनके आदेश के अनुसार मैंने हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो की सेवा में एक पत्र लिखा और पिताजी की इच्छा के अनुसार लन्दन जाने के लिए हुज़ूर से आज्ञा चाही । हुज़ूर ने आदेश दिया कि पिता और तुम दोनों इस्तिखारा (भलाई चाहने की दुआ) करो । इस्तिखारा के बाद यदि दिल में तसल्ली हो तो तुम लन्दन चले जाओ । अत: हम दोनों ने इस्तिखारा किया, फिर कोई चीज़ रोक न होने पर मैंने पिताजी की आज्ञानुसार लन्दन जाने की तैयारी शुरू कर दी ।

माँ को मुझसे इतनी लम्बी जुदाई गवारा न थी उनकी यह इच्छा थी कि मेरी आगे की पढ़ाई के लिए कोई ऐसा फैसला हो जाए जिसके परिणामस्वरूप मुझे इतनी लम्बी यात्रा न करनी पड़े और न ही माँ से

इतने लम्बे समय तक अलग रहना पड़े । लेकिन जब फ़ैसला हो गया तो अन्तत: उन्हें भी रज़ामन्द होना पड़ा । मानो उनकी रज़ामन्दी उनकी इच्छा के विरुद्ध थी ।

सन् 1911 ई. के अगस्त के अन्त में मैं स्यालकोट से रवाना हुआ । माता-पिता और मामू जी भी साथ थे । सबसे पहले हम सब क़ादियान गए । जहाँ तक मुझे याद है यह माँ के लिए क़ादियान जाने का पहला अवसर था और इस अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मकानों को देखकर माँ ने पहचान लिया कि इन्हीं मकानों को उन्होंने अपने एक रोअया में देखा था और यात्रा के सम्बन्ध में संयोग भी ऐसा हुआ कि हम फ़ज्र (अर्थात भोर) से कुछ पहले स्यालकोट से रवाना हुए और अस्र (अर्थात सूरज ढलने का समय) के समय क़ादियान पहुंचे । जो बिल्कुल माँ के सात वर्ष पूर्व देखे हुए रोअया के अनुसार था ।

हम एक दिन क़ादियान में ठहरे । मुझे याद है कि उस अवसर पर हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहो अन्हा ने बड़ी मुहब्बत से हम सब के लिए अपने हाथों से खाना बनाया था ।

दूसरे दिन हम सब लोग अमृतसर तक इकट्ठे गए । वहाँ से माँ, मामू जान के साथ वापिस स्यालकोट चली गईं और मैं पिताजी के साथ बम्बई के लिए रवाना हो गया ।

मेरे जहाज़ पर सवार होने के बाद पिताजी बम्बई से वापिस स्यालकोट चले गए । मैंने बाद में सुना कि अमृतसर से वापिस जाते हुए माँ बेहोश हो गईं थीं और स्यालकोट पहुँचने तक अधिकतर उनकी यही हालत रही ।

वह अक्सर कहा करती थीं कि उन दिनों जो मेरी हालत थी उसका इससे अन्दाज़ा लगा लो कि तुम्हारे चले जाने के दो-चार दिन बाद तुम्हारे पिताजी के स्यालकोट पहुँचने का दिन आया तो तुम्हारी दादी जी ने जो उन दिनों स्यालकोट में ही रहती थीं यह कहना शुरू

किया कि :-

"अलहम्दुलिल्लाह आज मेरा बेटा वापिस घर पहुँच जाएगा" ।

उनके एक बार कहने पर तो मैं चुप रही, लेकिन जब उन्होंने थोड़ी- थोड़ी देर के बाद दो-तीन बार ऐसा कहा, तो मैं ने अपनी व्यथा (दु:ख़) में उनसे कह दिया कि :-

"फूफी जान आप क्यों बार-बार अपनी बेचैनी ज़ाहिर कर रही हैं, आपका बेटा कहीं समुद्र पार नहीं गया, अगर आज नहीं आएगा तो कल आ जाएगा" ।

कहा करती थीं कि जब मैं उन बातों को याद करती हूँ तो एक पछतावा सा महसूस करती हूँ कि मैंने ऐसा क्यों कहा । लेकिन यह बात अचानक मेरे मुँह से निकल गई ।

लन्दन में मेरे रहने की अवधि माँ के लिए बहुत ही बेचैनी का ज़माना था । मैं तो इतना ही कर सकता था कि हर डाक में विधिवत् पत्र भेजता रहता । अत: इस पूरी अवधि में इसमें मैंने कभी नाग़ा नहीं किया ।

लन्दन जाते समय मेरी आयु 18 वर्ष थी । वहाँ जाकर जब दिल में जुदाई का एहसास पैदा हुआ और माता-पिता की ममता का वास्तविक अन्दाज़ा होने लगा तो मेरे दिल में भी अपने माँ-बाप के लिए एक नई मुहब्बत पैदा हो गई और लगातार बढ़ती गई । अत: एक अवसर पर मैंने माँ की सेवा में विशेष रूप से एक वचन के तौर पर लिखा कि मैं अपने दिल में आप के लिए मुहब्बत का एक अथाह सागर अपने साथ लाऊँगा और यह भावना बढ़ती ही जाएगी और इन्शा अल्लाह इसमें कभी कमी न आएगी । इस वचन को प्रकट करने के बाद अल्लाह तआला ने माँ को 25 साल और जीवन प्रदान किया और मुझे अपनी कृपा से उस वचन को पूरा करने का सामर्थ्य प्रदान किया इस पर अल्लाह तआला की भूरि-भूरि प्रशंसा ।

अब उनका देहान्त हो गया है और हमारे बीच भौतिक एवं

अस्थाई रूप से जुदाई हो गई है, पर मेरे दिल की वही हालत है बल्कि मुहब्बत और चाहत ने मिलकर एक नई अजीब हालत पैदा कर दी है जिन संवेदनाओं का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है ।

मार्च 1914 ई. में मैं लन्दन में ही था कि हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो का देहान्त हो गया । पिताजी ने मुझे पत्र लिखा कि हुज़ूर के देहान्त के बाद जमाअत में इस-इस तरह का मतभेद हो गया है । यह ईमान का विषय है मैं तुम से यह नहीं कहता कि तुम्हें क्या करना चाहिए, बल्कि केवल इतना कहता हूँ कि जो कुछ करना सोच-समझ के बाद करना, जल्दी न करना, और माँ ने मेरे लिए यह लिखवाया कि जमाअत में यह तूफ़ान बरपा हो गया है । मैंने हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बैअत कर ली है और तुम्हारे भाइयों और बहन की ओर से भी बैअत का पत्र लिखवा दिया है । तुम्हें नसीहत करती हूँ कि अगर अभी तक तुमने बैअत का पत्र नहीं लिखा तो अब तुरन्त लिख दो, देर बिल्कुल न करना ।

दूसरे ख़लीफ़ा की बैअत और उससे संबंधित स्वप्न

इस अवसर पर भी माँ ने अपने रोअया और स्वप्नों के आधार पर तुरन्त बैअत कर ली । पिता जी ने कुछ दिनों की देरी के बाद बैअत की । हज़रत खलीफतुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कई बार फ़रमाया है कि कई बार मेरी माँ का रोअया और हुज़ूर का रोअया एक हो जाया करता था । अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से कई बातें माँ को भी उसी रंग में दिखा देता था जिस रंग में वे हुज़ूर को दिखाई जाती थीं । अत: इस अवसर पर भी माँ के एक

रोअया के बारे में हुज़ूर का यही कहना था ।

माँ ने देखा कि बाढ़ आ गई है और गली-कूचों में पानी बहुत तेज़ी से चढ़ रहा है लोग अपने घरों की छतों पर चढ़ गए हैं । इतने में आवाजें आनी शुरू हुईं कि एक खरगोश पानी में तैरता फिरता है जो बातें करता है । फिर वह खरगोश हमारे घर के सामने आ गया, एक लकड़ी के तख्ते पर बैठा हुआ था और वह तख्ता पानी में तैरता फिरता था । माँ ने ऊपर की मंजिल से उसे संबोधित करके कहा, "ख्वाजा क्या तुम बातें करते हो ?" खरगोश ने उत्तर दिया "हाँ" । माँ ने कहा "ख्वाजा देखो कहीं डूब न जाना" खरगोश ने जवाब दिया, "अगर मैं डूब गया तो कई और लोगों को साथ लेकर डूबूंगा ।"

इन्हीं दिनों माँ ने एक और स्वप्न देखा कि एक बड़े मैदान में बहुत से लोग इकट्ठे हैं और ऐसा लगता है कि किसी घटना की प्रतीक्षा में हैं थोड़ी देर के बाद ज़मीन में से एक रोशनी निकली जो बिजली के एक अत्यन्त चमकदार लैम्प की भाँति थी और धीरे-धीरे ज़मीन से इस तरह ऊपर उठनी शुरू हुई कि मानो उसके नीचे कोई मशीन है जिसके बल पर वह ऊँची हो रही है । जैसे ही यह रोशनी फैली अधिकतर लोग उसकी ओर आकर्षित हो गए और दौड़कर उसके निकट होने की कोशिश करने लगे ताकि उस नूर (रोशनी) को पास से देख सकें । माँ भी उस रोशनी की ओर बढ़ीं और पिता जी को बुलाया कि जल्द आयें और पास से इस नूर को देखें, वर्ना जब यह नूर इन्सान के क़द से ऊँचा हो जाएगा तो उसके देखने में वह आनन्द नहीं मिलेगा जो ज़मीन के करीब उसे देखने में है । अत: पिताजी भी माँ के पीछे-पीछे उस नूर की ओर जल्द-जल्द जाने लगे और दोनों के देखते-देखते यह नूर ऊँचा होता गया और फैलता गया । यहाँ तक कि आसमान तक पहुँच गया और उसके प्रकाश से सारा मैदान प्रकाशित हो गया । माँ ने देखा कि कुछ लोग जो ओवरकोट और तुर्की टोपियाँ पहने हुए हैं कुछ दूरी पर एक नहर के किनारे खड़े है और उनका उस नूर की ओर ध्यान

नहीं है । माँ ने पिताजी से पूछा कि ये लोग क्या कर रहे है और क्यों इस जीवन दायक दृश्य की ओर ध्यान नहीं देते । पिताजी ने उत्तर दिया कि ये लोग पानी के बहाव को देख रहें हैं कि किस ओर से आता है और किस ओर को जाता है ।

माँ कहा करती थीं कि तुम्हारे पिताजी की ओर से जब उस अवसर पर बैअत करने में देरी हुई तो मुझे बहुत घबराहट होने लगी । मैं बहुत दुआएँ किया करती थी कि अल्लाह तआला उन्हें जल्द सही फैसला करने की तौफ़ीक दे ।

हमारे घर पर उन दिनों बहुत जमघटा लगा रहा करता था और मतभेद के बारे में बहसें जारी रहा करती थीं । एक दिन जब बहुत से लोग एकत्र थे और ज़ोर-शोर से बहस हो रही थी । यहाँ तक कि कई लोगों की आवाजें दूसरी मंजिल पर भी पहुँचती थीं । मेरे दिल में बहुत बेचैनी पैदा हुई कि तुम्हारे पिता क्यों जल्द फैसला नहीं करते और क्यों इतनी लम्बी बहसों में पड़ रहे हैं । इसी बेचैनी में मैंने सीढ़ियों के दरवाज़े को बहुत ज़ोर से खटखटाया । जिससे तुम्हारे पिताजी का ध्यान इधर की ओर आया और घबराहट में जल्दी से ऊपर आए और बड़ी घबराहट में पूछा कि क्या मामला है । आपने इतने ज़ोर से दरवाज़ा क्यों खटखटाया ? मैंने उत्तर दिया, कि मैं आपकी देरी से बहुत घबरा गई हूँ और मैं चाहती हूँ कि आप शीघ्र बैअत करने का निर्णय करें और इन बहसों को बन्द करें और खिलाफत का इन्कार करने वालों को कह दें कि वे बहस-मुबाहसा के लिए यहाँ न आया करें । उन्होंने मुझे तसल्ली देने की कोशिश की कि मैं ग़ौर कर रहा हूँ शीघ्र ही कोई निर्णय करूँगा, पर मुझे तसल्ली कहाँ होती थी हर पल जो उस समय गुज़रा मुझे पहाड़ की तरह भारी लगता था । इसी तरह कुछ दिन और बीत गए । मैं दुआओं में लगी रही और अपने सामर्थ्य के अनुसार तुम्हारे पिताजी को समझाने की कोशिश भी करती रही । वह बस मुस्कुरा देते और इतना कह देते कि ग़ौर कर रहा हूँ, मैं फिर दुआओं में लग जाती ।

अन्ततः एक दिन इशा की नमाज़ के बाद उन्होंने कहा मैंने निर्णय कर लिया है कि मुझे बैअत कर लेनी चाहिए । मुझे ऐसा महसूस हुआ है कि मेरे लिए सारी दुनिया रोशन हो गई है । मैंने तुरन्त अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा किया और उनसे कहा कि आप अभी बैअत करने का पत्र लिख दें । उन्होंने कहा, डाक तो अब कल सुबह ही जाएगी, इसलिए सुबह ही पत्र लिख देंगे । मैंने विनती की कि अभी लिख दें, देर न करें । उन्होंने कहा कि, क्या पत्र को सीने पर रख कर सोना है ? मैंने उत्तर दिया कि असल बात तो यही है । मैं यह सारी रातें सो नहीं सकी, मैं चाहती हूँ कि आप बैअत का पत्र लिख दें और मैं उसे अपने सीने पर रख लूँ और चैन की नींद सो सकूँ । अतएव उन्होंने उसी समय बैअत का पत्र लिखकर मुझे दे दिया और मैंने उसे सीने में रख लिया, और सो गई और सुबह होते ही मैंने डाक में भिजवा दिया ।

मैं अभी पढ़ाई के लिए लन्दन में ही था कि जुलाई के अन्त में 1914 ई. में यूरोप में युद्ध छिड़ गया और अगस्त के शुरू में ब्रिटेन भी युद्ध में शामिल हो गया । युद्ध के कारण आने-जाने में रुकावटें पैदा हो गईं और हिन्दुस्तान और ब्रिटेन के बीच डाक के आने-जाने में भी एक सप्ताह की रुकावट बढ़ गई । माँ पहले तो युद्ध की खबरों से ही घबराई हुई थीं । जब डाक में रुकावट पड़ने की खबर सुनी तो बेहोश होकर गिर पड़ीं । पिता जी पहले ही उनके एहसासों का बहुत ध्यान रखते थे और उन्हें तसल्ली देते रहते थे लेकिन अब और अधिक ध्यान रखने लगे ।

कहा करते थे कि युद्ध के प्रारम्भ होने से लेकर तुम्हारी वापसी तक तीन माह मेरे लिए पहले तीन सालों से बढ़कर मुश्किल हो गए थे । तुम्हारी माँ की बेचैनी को देखकर मुझे यों लगता था कि मानों तुम्हें लन्दन भेजने में मैं किसी अपराध का दोषी ठहरा हूँ । जब तुम्हें अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से कुशलपूर्वक वापिस ले आया तो तुम्हारी माँ की जान में जान आई और मुझे जीवनदान मिला ।

लन्दन से मेरी वापिसी

नवम्बर सन् 1914 ई. के प्रारम्भ में मैं वापिस हिन्दुस्तान पहुँचा। पहले क़ादियान दारुल अमान पहुँचकर लिखित रूप से बैअत की और मुँह से पढ़कर इक़रार किया और हज़रत खलीफतुल मसीह के दर्शन करके स्यालकोट पहुँचा।

युद्ध के कारण उन दिनों समुद्र मार्ग खतरों से ख़ाली नहीं थे। इसलिए मैंने पिताजी को केवल इतनी सूचना भेजी थी कि मैं बहुत जल्द वापिस पहुँचने वाला हूँ और कोई निर्धारित तिथि नहीं बताई थी। मेरे लाहौर पहुँचने पर पिताजी को यह सूचना मिल गई थी कि मैं सकुशल वापिस पहुँच गया हूँ। यह खबर सुनते ही माँ स्यालकोट से मामू और भाई शुकरुल्लाह को साथ लेकर वजीराबाद आ गईं कि रास्ते में ही मुझसे मिल जाएँ। लेकिन एक रात वहाँ प्रतीक्षा करने के बाद मामू को वहाँ छोड़कर और भाई शुकरुल्लाह खां को साथ लेकर वापिस स्यालकोट लौट गईं, क्योंकि मेरे आने की कोई निश्चित सूचना उन्हें नहीं थी। मैं कुछ घन्टों के बाद अचानक उनके पास पहुँच गया।

मैं ने दिसम्बर 1914 ई. से लेकर अगस्त 1916 ई. तक पिताजी के साथ स्यालकोट में ही वकालत की प्रैक्टिस की और अगस्त 1916 ई. में पत्रिका "इंडियन केसेज" के उपसंपादक के तौर पर लाहौर चला गया और ज्यों-ज्यों समय बीतता गया वहाँ मुझे हाईकोर्ट में प्रैक्टिस करने के अवसर मिलते गए। यहाँ तक कि कुछ समय के पश्चात् मेरा अधिकतर समय हाईकोर्ट के काम में लगने लगा।

क़ादियान में पिताजी का निवास

अप्रैल सन् 1917 ई. में पिताजी ने वकालत की प्रैक्टिस छोड़ दी और कुछ महीनों के पश्चात् क़ादियान में स्थाई तौर पर आबाद हो

गए । जब 1905 ई. में वह पहली बार क़ादियान आए थे तो उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में निवेदन किया था कि यदि आप चाहें तो मैं वकालत की प्रैक्टिस छोड़कर अपना सारा जीवन धर्म की सेवा में लगा दूँ । लेकिन हुज़ूर ने फरमाया कि आप प्रैक्टिस करते रहें ।

इसी तरह हुज़ूर के स्वर्गवास के बाद पिताजी ने हज़रत खलीफतुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हु की सेवा में भी निवेदन किया था । लेकिन आप ने फरमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जैसे फरमाया था वैसे ही करें । खिलाफाते सानिया का कार्यकाल प्रारम्भ होने के कुछ साल बाद हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पिताजी से कहा कि आप दीन (धर्म) की सेवा के लिए अपने आप को कब समर्पित करेंगे ? पिताजी ने कहा कि मैं तो तैयार हूँ । जब आप कहें वकालत छोड़कर आप की सेवा में आ जाऊँ ।

अत: सन् 1917 ई. में वह क़ादियान दारुल अमान में आबाद हो गए और हज़रत ख़लीफतुल मसीह ने नाज़िर आला के काम उनके सुपुर्द किए । इसके अतिरिक्त बहिश्ती मक़बरा का विभाग भी उनके सुपुर्द था । इसके बावजूद वे अपना रिक्त समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों की विषय-सूची तैयार करने में लगाया करते थे । वकालत के ज़माने में भी वह सदर अन्जुमन अहमदिया के सदस्य थे और सदर अन्जुमन अहमदिया के मुशीर-ए-क़ानूनी (क़ानूनी सलाहकार)के कार्य भी आप ही करते थे ।

पिताजी के क़ादियान में निवास करने के बाद माँ अधिकतर डस्का में ही रहा करती थीं । कभी-कभी क़ादियान भी चली जाया करती थीं । लेकिन लगातार महीने दो महीने से अधिक क़ादियान में नहीं रहती थीं । कभी-कभी मेरे पास लाहौर में रहा करती थीं । लेकिन वहाँ भी लगातार कुछ दिन या कुछ सप्ताह से अधिक नहीं ठहरती थीं ।

माता–पिता का हज करना

सन् 1924 ई. के गर्मी के दिनों में माता–पिता दोनों हज को चले गए । समुद्र में तूफ़ान आने के कारण यात्रा के मध्य पिताजी की तबियत अक्सर खराब रही । पर माँ कहा करती थीं कि उन्हें समुद्री जहाज की यात्रा बहुत अच्छी लगी और उनका स्वास्थ्य यात्रा के मध्य बहुत अच्छा रहा ।

माँ हज को जाते समय अपने लिए और पिताजी के लिए सफ़ेद कपड़े की चादरें तैयार करके ले गई थीं और हज के दिनों में उन चादरों को ज़मज़म के पानी से धोकर सुरक्षित रख लिया था ताकि समय आने पर प्रयोग में लाई जा सकें ।

हज से वापिस लौटने के बाद पिताजी दो वर्ष और जीवित रहे । अगस्त 1925 ई. में माता–पिता मेरे साथ कश्मीर जाने के इरादे से रवाना हुए । रास्ते में कुछ दिनों के लिए हम कोहे मरी पर ठहर गए । इस अवधि में पिताजी की तबियत बिगड़ गई और हालत बहुत खराब हो गई । पर अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से उस अवसर पर उन्हें स्वास्थ्य प्रदान कर दिया । यद्यपि उनकी बीमारी के कारण अगस्त और सितम्बर के अधिकतर दिन हमें कोहे मरी में ही गुज़ारने पड़े और सितम्बर के अन्त में केवल कुछ दिनों के लिए ही हम कश्मीर जा सके । लेकिन अल्लाह तआला ने कश्मीर जाने की उनकी यह इच्छा भी पूरी कर दी ।

पिताजी की बीमारी

सन् 1926 ई. के जुलाई के अन्त या अगस्त के प्रारम्भ में पिताजी जमाअत के एक मुकदमा में गवाही देने के लिए क़ादियान से स्यालकोट गए । मैं भी इस मुकदमा के सम्बन्ध में स्यालकोट गया

हुआ था । वहाँ पिताजी ने कहा कि मुझे खाँसी की शिकायत है पर विशेष तकलीफ न बताई । मुकदमे की कार्यवाही के बाद पिताजी डस्का चले गए और मैं वापिस लाहौर चला गया ।

12 अगस्त को मुझे सूचना मिली कि पिताजी बहुत बीमार हैं । यह सुनते ही मैं तुरन्त डस्का गया और माता-पिता दोनों को अपने साथ लाहौर ले आया । लाहौर पहुँचकर उनका मुआयना कराने पर मालूम हुआ कि उन्हें प्लूरिसी की बीमारी है और फेफड़े की नीचे की झिल्ली में पानी जमा हो रहा है । अत: दूसरे दिन यह पानी निकाला गया । जिससे काफी हद तक खाँसी दूर हो गई और देखने में उनका स्वस्थ अच्छा हो गया ।

चूँकि वह स्वयं वैद्यविद्या पढ़े हुए थे और बीमारी के लक्षण को पहचानते थे । अत: लाहौर पहुँचने के दो-तीन दिन बाद मुझसे कहा कि जिन्दगी और मौत तो अल्लाह तआला के हाथ में है देखने में हालत अच्छी है खुदा चाहे तो सेहत दे दे । लेकिन बीमारी की किस्म और अपनी उम्र को देखते हुए मैं चाहता हूँ कि कुछ हिदायतें तुम्हें लिखवा दूँ । मैं ने कागज़ और कलम ले लिया और उन्होंने कुछ हिदायतें लिखवा दीं । जिनमें से एक यह थी कि हज़रत साहिब (अर्थात हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो बिनस्रिहिल अज़ीज़) से निवेदन करना कि यदि कोई कष्ट न हो तो मेरे जनाज़ा की नमाज़ हुज़ूर खुद पढ़ावें (उन दिनों हुज़ूर डलहौजी में थे)। इसके बाद फिर अन्त तक उन्होंने किसी प्रकार की कोई इच्छा प्रकट न की । यद्यपि इसके बाद देखने में उनकी सेहत अच्छी होती गई । यहाँ तक कि खाना-पीना और चलना-फिरना शुरू कर दिया ।

एक दिन मैंने कहा कि हुज़ूर ने डलहौज़ी से मुझे लिखा है कि तुम कभी डलहौज़ी नहीं आए अब की बार डलहौज़ी आओ, तो पिताजी ने बड़े शौक से कहा, कि बहुत अच्छा, इस बार डलहौज़ी चलेंगे । माँ ने मुस्कुराते हुए कहा, आपकी सेहत की तो यह हालत है और

डलहौज़ी जाने के इरादे कर रहे हैं । पिताजी ने कहा, क्या पता अल्लाह स्वास्थ्य प्रदान कर दे ।

अगस्त के आखिरी दिनों में पुन: पिताजी के फेफड़ों पर बोझ पड़ना शुरू हो गया । जिससे ज्ञात हुआ कि फेफड़ों में फिर पानी जमा हो रहा है । डाक्टरों की सलाह यह थी कि पानी निकालना चाहिए । पिताजी इस बार पानी निकलवाने से कुछ डरते थे । मैंने माँ से मशविरा लिया तो उन्होंने कहा कि यदि डाक्टरों की यही राय है तो फिर इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं । अत: पिताजी राज़ी हो गए और रविवार 29 अगस्त को फेफड़ों से पुन: पानी निकाला गया । डाक्टरों की मौजूदगी के कारण माँ उस समय उस कमरे में नहीं थीं, जहाँ पिताजी का पलँग था । बल्कि वह दूसरे कमरे में सिज्दा में पड़ी दुआ कर रही थीं । जब डाक्टर साथ के दूसरे कमरे में चले गए तो मैंने माँ को डाक्टरों के जाने की ख़बर दी तो वह पिताजी के कमरे में आ गयीं और डाक्टरों को दुसरे कमरे से बाहर जाते हुए देख लिया । उन्हें देखकर वह घबरा गईं और मुझे अलग ले जाकर कहा, अल्लाह तआला भला करे । तुम्हें मेरा वह स्वप्न याद है या नहीं, जो कुछ दिनों पहले मैंने तुम्हें बताया था । वे दो आदमी जिनको स्वप्न में मैंने कोठी से बाहर जाते हुए देखा था, वे यही दोनों आदमी थे जो इस कमरे से अभी बाहर गए हैं । मैंने स्वप्न में इन्हें ठीक इसी वेशभूषा में देखा था और कमरे से बाहर निकलते हुए इसी तरह पीठ की ओर से उनके शरीर मुझे दिखाई दिए थे ।

इससे कुछ दिनों पूर्व माँ ने मुझे अपना एक स्वप्न सुनाया था कि दो आदमी अंग्रेजी वेशभूषा में कमरे से बाहर जा रहे हैं किसी ने उनकी ओर इशारा करके कहा कि ये दो आदमी चौधरी साहिब (अर्थात पिताजी) को क़त्ल कर गए हैं ।

उस दिन दोपहर के बाद तक तो पिताजी की तबियत ठीक रही फिर साँस लेने में तकलीफ़ महसूस होने लगी । पहले तो फेफड़े के

नीचे कुछ दर्द महसूस होता था लेकिन 30 अगस्त की सुबह तक दर्द खत्म हो गया लेकिन साँस की तकलीफ नहीं गई । इलाज जारी था लेकिन धीरे-धीरे हालत बहुत बिगड़ती गई । वह स्वयं भी महसूस करते थे कि यह बीमारी की आखिरी हद है लेकिन वह किसी प्रकार की बेचैनी या हसरत नहीं ज़ाहिर कर रहे थे । 31 अगस्त को सुबह फज्र (भोर) के समय मैं उनके पास से उठकर नमाज़ पढ़ने के लिए पास के कमरे में गया । नमाज़ में मेरे रोने की आवाज़ उनके कान में पड़ गई, घबराकर माँ से कहा, जल्दी जाओ और उसे ढाढ़स बँधाओ, लगता है डाक्टरों की बातों से घबरा गया है ।

पिताजी की मृत्यु के बारे में माँ का एक स्वप्न

उस दिन माँ ने मुझे अपना एक स्वप्न सुनाया जिसे उन्होंने पिछली रात ही देखा था । कहा, मैंने देखा कि तुम्हारे पिताजी एक मेज़ के सामने कुर्सी पर बैठें कुछ लिख रहे हैं और अपने काम में बहुत लीन हैं । उसी कमरे में सोफ़ा पर एक जवान औरत बैठी हुई है और शुकरुल्लाह खां ने तुम्हारे पिताजी से सम्बोधित होते हुए कहा कि यदि आप जा रहे हैं तो इस औरत को साथ लेते जाएँ । तुम्हारे पिताजी ने बैठे हुए वहीं से गर्दन घुमाते हुए उत्तर दिया, "मियाँ मुझे तो जुमा के दिन छुट्टी होगी" ।

माँ ने मुझसे कहा कि छुट्टी के शब्द से मालूम होता है कि जुमा का दिन शुरू होते ही यह परलोक सिधार जाएँगे । इसलिए डाक्टर चाहे जो कहें, तुम अभी से सब प्रबंध कर लो और जुमेरात (वृहस्पतिवार) की शाम तक सारी तैयारियाँ पूरी कर लेना । ताकि उनके देहान्त होते ही हम उन्हें क़ादियान ले चलें । तुम्हारे सामने ऐसी परिस्थिति कभी नहीं आयी ऐसा न हो कि तुम घबरा जाओ । अल्लाह तआला की इच्छा यही मालूम होती है । इसलिए अभी से तैयारी कर लो । अपने भाइयों

को लिख दो, कि दो तो फौरन यहाँ पहुँच जाएँ और एक तुम्हारी बहन को लेने चला जाए । लेकिन जो बहन को लेने जाए उसे ज़ोर देकर कह दो कि जुमेरात (वृहस्पतिवार) के दिन सूरज डूबने से पहले यहाँ पहुँच जाए । उन्हें यह भी लिख दो कि तुम्हारे अब्बू (पिता) के कफ़न की चादरें अमुक स्थान पर रखी हैं उन्हें भी अपने साथ लेते आएँ, लेकिन यह बातें और किसी को न बताएँ नहीं तो गाँव के सब लोग यहाँ जमा हो जाएँगे । फिर कहा, जनाज़ा का सन्दूक तैयार करवाने के लिए भी कह दो और ताकीद कर दो कि जुमेरात की शाम तक तैयार हो जाए और मोटर गाड़ियाँ भी किराये पर कर लो और उन्हें आदेश दे दो कि आधी रात के बाद 2 बजे आ जाएँ । अत: मैंने उनके आदेश के अनुसार सारे प्रबन्ध कर दिए । यह मंगलवार का दिन था, देखने में तो पिताजी को साँस की हल्की सी तकलीफ़ के अतिरिक्त और कोई तकलीफ़ न थी, पूरे होशोहवास में थे और बातचीत करते थे । फिर कमज़ोरी धीरे-धीरे बढ़ने लगी ।

बुधवार 01 सितम्बर को सुबह फज्र की नमाज़ के बाद मैं अकेला ही पिताजी के पास था । मैंने कहा, आप उदास तो न होंगे, थोड़े ही समय के बाद यदि अल्लाह तआला चाहेगा तो मुलाक़ात हो जाएगी । "उन्होंने जवाब देते हुए कहा, नहीं मैं अपने मौला की इच्छा पर राज़ी हूँ ।"

उसी दिन दोपहर के बाद दोनों भाई शुकरुल्लाह खां और असदुल्लाह खां आ गए और कुछ दूसरे निकटवर्ती रिश्तेदार भी आ गए । साँस की जो तकलीफ थी वह जुमेरात के दिन दोपहर के समय खत्म हो गई, पर कमज़ोरी बढ़ रही थी लेकिन पूरे होशोहवास में थे । दोपहर के बाद माँ ने कहा कि जब मेरी ज़रा सी आँख लग जाती है तो मुझे यों नज़र आता है कि कमरा भिन्न-भिन्न प्रकार के फलों से भरा हुआ है और बहुत अच्छी खुशबू आ रही है और अब मुझे कोई बेचैनी नहीं है । चूँकि पिताजी का दिल लगातार कमज़ोर हो रहा था । उस दिन

दोपहर के बाद डाक्टर साहिब बार-बार दिल को ताक़त देने के टीके लगा रहे थे । पिताजी कहते थे कि टीके लगाने की अब जरूरत नहीं है, लेकिन इस विचार से कि इलाज में रूकावट नहीं डालना चाहिए, इन्कार भी नहीं करते थे । एक समय जब मुझे बहुत गमगीन देखा तो कहा, "बेटा ये समय आया ही करतें हैं" ।

सूरज ढलने के बाद (अर्थात अस्र के समय) बाबू अब्दुल हमीद साहिब आडीटर जिनके सुपुर्द जनाज़े का सन्दूक बनवाना और मोटर गाड़ियों का प्रबन्ध करना था आए और मुझे बुलाकर कहा कि सन्दूक तैयार है और मस्जिद में रखवा दिया गया है मोटर गाड़ियाँ भी किराए पर ले ली गई हैं जो आधी रात के बाद 2 बजे यहाँ आ जाएँगी । फिर पूछा कि, चौधरी साहिब कैसे हैं ? मैने कहा कि, मैं उनके पास से बातें करता ही उठकर आया हूँ ।

सूरज डूबने से कुछ समय पूर्व भाई अब्दुल्लाह खां और बहन घर पहुँच गए । अब्दुल्लाह खां ने जब पिताजी से सलाम करते हुए हाथ मिलाया तो उनका हाथ अपने दोनों हाथों में थाम लिया । थोड़ी देर के बाद पिताजी ने अपना हाथ छुड़ाकर मेरी जांघ पर रख दिया और कहा, "मियाँ मैं इसे यहाँ रखना चाहता हूँ ।"

पिताजी का देहान्त

चूँकि हम सब माँ का स्वप्न अच्छी तरह से सुन चुके थे और जानते थे कि अब ये पिताजी की आखिरी घड़ियाँ हैं । दिल में बहुत हसरत थी कि कोई बात कर लें । इसलिए मैं कोई न कोई बात करता जाता था । अत: एक बार मैंने उनके कान में कहा, "मुझे आप से इतनी मुहब्बत है कि मैं चाहता हूँ कि आपकी तकलीफ़ मैं ले लूँ" । "इस पर पिताजी ने अपना हाथ मेरी गर्दन पर डालकर मेरे चेहरे को अपने चेहरे के पास लेकर मेरे कान में कहा, "ऐसी ख्वाहिश अल्लाह

तअल्ला को पसन्द नहीं, हर एक अपनी-अपनी बारी पर ।"

थोड़ी ही देर के बाद मैंने कहा, आपको याद है यह किस अवसर का शैर है

कुन्तस्सवादा लि नाज़िरी,
फ़ अमिया अलैक अन्नाज़िरो
मन शाअ बादका फ़ल् यमुत,
फ़अलैक कुन्तु उहाज़िरो

कहा, हाँ याद है हस्सान इब्नि साबित ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त पर कहा था ।

जब शाम का खाना खाने का समय हुआ तो पिताजी ने बार-बार तमाम् मेहमानों से कहा, जाओ और खाना खाओ । जब कुछ मेहमानों ने देर की तो फिर से कहा और कहा कि नौकर प्रतीक्षा करते रहेंगे उन्हें भी खाना खिलाकर निश्चिन्त करना चाहिए ।

अभी मेहमान खाना खा रहे थे कि माँ ने कहा कि यदि तुम्हारे पिताजी पसन्द करें तो उनका पलँग मर्दाना आंगन (प्रांगण) में ले चलें वह ज़्यादा खुला और हवादार है और ये अधिकतर वहीं सोया करते थे । मैंने पिताजी से पूछा, तो उन्होंने कहा "हाँ ले चलो" मैंने कहा क्या वह आंगन आपको ज़्यादा पसन्द है ? तो माँ ने कहा वे देहान्त पा चुके हैं और वे अपने मौला के हुज़ूर हाज़िर हो गये । अत: देखा तो वह देहान्त पा चुके थे ।

माँ ने कलिमा शरीफ पढ़ा और इन्ना लिल्लाहि व् इन्ना इलैहि राजेऊन" (अर्थात हम भी अल्लाह के लिए हैं और उसी की ओर लौटकर जाने वाले हैं) कहा और दुआ की, कि हे अल्लाह! अपने फ़ज़्ल से इन्हें अपनी रहमत के साया में, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व् सल्लम के झण्डे तले, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के क़दमों में जगह देना । फिर मुझे सम्बोधित करके कहा, पलँग मर्दों के बीच में ले जाओ और इन्हें क़ादियान ले चलने की तैयारी करो ।

इसी तैयारी के दौरान मैं दबे पाँव दो-तीन बार औरतों के बीच में गया ताकि मालूम करूँ कि माँ का क्या हाल है । मैंने देखा कि वह औरतों के बीच में बैठी हुई बड़े धैर्य से पिताजी की बीमारी के हालत बयान कर रही हैं ।

जब सारी तैयारी हो चुकी तो जनाज़ा पढ़ा गया और माँ भी कोठी के बरामदे में औरतों के साथ कतार बनाकर जनाज़े की नमाज़ में शामिल हुईं । ताबूत मोटर में रखने से पहले मेरे कन्धे का सहारा लेकर ताबूत के पास आयीं और कहा :-

"अल्लाह के सुपुर्द । आपने मुझे हर तरह से खुश रखा और मेरी छोटी से छोटी ख्वाहिश को पूरा किया । मेरा दिल हमेशा आप पर राज़ी रहा । मुझे तो याद नहीं कि आपकी तरफ़ से मुझे कोई तकलीफ़ या दु:ख पहुँचा हो लेकिन अगर कभी ऐसा हुआ हो तो मैं अल्लाह तआला की रज़ा के लिए आपको माफ़ करती हूँ । मुझसे कई क़सूर और कोताहियाँ हुईं उनकी माफ़ी मैं अल्लाह से मांगूँगी । अल्लाह तआला आपको अपनी रहमत के साया में जगह दे । अपने वालिद साहिब (पिताजी) को मेरा सलाम पहुँचा देना और अगर हो सके तो अपनी हालत की हमें खबर देना" ।

इस पूरे समय में यह एक आखिरी बात ही उनके दिल की बेचैनी का गवाह बनी जो सम्भवत: अचानक उनके मुँह से निकल गई । अन्यथा खुदा तआला की रज़ा को उन्होंने न केवल सब्र से बल्कि खुशी से क़बूल किया और आधी सदी की मुहब्बत और वफ़ादारी भरी दोस्ती जो हर देखने वाले के लिए बतौर नमूना थी, के ख़त्म होने पर किसी प्रकार का दु:ख प्रकट न किया ।

उनके दिल पर जो गुज़री उसे वह स्वयं जानती होंगी । लेकिन दिल की कैफियत उन्होंने दिल में ही रहने दी । कभी-कभी उसकी कोई झलक किसी मर्मज्ञ को नज़र आ जाती थी । लेकिन यथासंभव वह उसके बयान करने से परहेज़ करती थीं ।

सुबह 2-3 बजे के मध्य हम पिताजी का जनाज़ा लेकर लाहौर से रवाना हुए और सुबह 8 बजे के लगभग क़ादियान में हज़रत उम्मुल मोमिनीन के बाग़ में पहुँचे। यह 03 सितम्बर जुमा (शुक्रवार) का दिन था। हज़रत खलीफतुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो बिनस्रिहिल अज़ीज़ का डलहौज़ी से तार आया कि अगर डाक्टरों की राय के अनुसार शव को देर तक रखना अनुचित न हो तो प्रतीक्षा की जाए, हम स्वयं जनाज़े की नमाज़ पढ़ाएँगे।

डाक्टरों ने देखने के बाद कहा कि अभी देर तक रखने में कोई हर्ज नहीं। अत: हुज़ूर के पास डलहौज़ी सूचना दे दी गई और हुज़ूर का जवाब आया कि मैं आ रहा हूँ। वर्षा के कारण रास्ता साफ़ न था। इसलिए हुज़ूर आधी रात के बाद क़ादियान पहुंचे और 4 सितम्बर शनिवार सुबह 9 बजे के लगभग नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मज़ार वाले क़ित्अ: के पश्चिम की ओर खास सहाबा के क़ित्अ: में पिताजी को दफ़न करने की आज्ञा दी। जब क़ब्र की मिट्टी बराबर की जा रही थी तो अचानक बारिश हो गई और क़ब्र को बराबर करने के लिए पानी इस्तेमाल करने की ज़रूरत न पड़ी। कतबा की इबारत हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने स्वयं लिखी जो निम्नलिखित है :-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदोहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम
व अला अब्दिहिल मसीहिल मौऊद

चौधरी नसरुल्लाह ख़ान साहिब अधिवक्ता स्यालकोट, यद्यपि सन् 1904 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्लाम की स्यालकोट यात्रा के दिनों में बैअत में शामिल हुए। लेकिन श्रद्धा पहले से रखते थे और आपकी पत्नी कुछ स्वप्नों के आधार पर आप से पहले बैअत कर चुकी थीं। गम्भीर और स्वच्छ प्रकृति के निष्कपट व्यक्ति थे। श्रद्धा

और प्रेम में बड़ी शीघ्रता से आगे बढ़े । बड़ी आयु में क़ुरआन करीम कंठस्थ किया । अन्ततः मेरी प्रेरणा पर वकालत का पेशा जिसमें आप बहुत सफल थे छोड़कर शेष जीवन धर्म के कामों के लिए समर्पित कर दिया और बड़ी श्रद्धा के साथ जिसमें ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से हमेशा बढ़ते गए, क़ादियान में आ बसे । इसी दौरान मैंने हज भी किया । मैंने उन्हें नाज़िर आला का काम सुपुर्द किया था जिसे उन्होंने बड़ी मेहनत और निश्छलता से किया । अल्लाह तआला की रज़ा के साथ मेरी ख़ुशी और अहमदी भाइयों का फ़ायदा और उन्नति को हमेशा मद्देनज़र रखा । साथ काम करने के कारण मैंने देखा कि सोच दूरदर्शी थी । सूक्ष्म बातों को समझते और ऐसी नेकनीयती से काम करते कि मेरा दिल प्रेम और सम्मान की भावनाओं से भर जाता था और आज तक उनकी याद दिल को गरमा देती है । अल्लाह तआला उनका सम्मान बढ़ाए और उनकी सन्तान को उसी तरह उन्नति करने और आगे बढ़ने का सामर्थ्य दे और ऐसे लोगों के पद् चिह्नों पर चलने वाले अधिक से अधिक लोग हमारे सिलसिला में पैदा होते रहें । हे अल्लाह! तू ऐसा ही कर ।

मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी
देहान्त की तिथि 24 सफर 1345 हिजरी दिन शुक्रवार
(अर्थात 03 सितम्बर सन् 1926 ई.) उम्र 63 साल

05 सितम्बर को हम क़ादियान से रवाना होकर वापिस अपने वतन डस्का को गए । माँ ने मुझसे कहा कि हम डस्का ऐसे समय पर पहुँचें कि किसी नमाज़ का समय हो ताकि पहुँचते ही नमाज़ में लग जाएँ और जो औरतें मातमपुर्सी के लिए आएँ उन्हें किसी प्रकार का रोने-धोने का मौक़ा न मिले । अतः जब हम डस्का के निकट पहुंचे तो ज़ुहर की नमाज़ का समय हो गया था । माँ ने रास्ते में ही वज़ू कर लिया था और मकान पर पहुँचते ही नमाज़ शुरू कर दी ।

इस अवसर पर हमारे गाँव की एक ग़ैर अहमदी औरत ने माँ से बयान किया कि कल अर्थात 4 सितम्बर को मुझे बहुत तेज़ बुखार था। मैंने बेहोशी में देखा कि मियाँ जुमां (जो पिता जी के कर्मचारी थे और उनके साथ ही हज भी कर चुके थे) मुझसे कहते हैं, चलो तुम्हें क़ादियान ले चलूँ। मैं उनके साथ चल पड़ी। थोड़ी ही दूर चले थे कि उन्होंने कहा, वह देखो क़ादियान है। सामने एक बाग़ था। हम उसके अन्दर चले गए। बाग़ में एक मकान था। हम उसके बरामदे में गए तो सामने के दालान में एक पलँग बिछा हुआ देखा जिस पर चौधरी साहिब (अर्थात पिता जी) बैठे कुरआन करीम पढ़ रहे थे और एक खूबसूरत जवान औरत पास खड़ी पंखा हिला रही थी। कमरे में नाना प्रकार के फल रखे हुए थे। चौधरी साहिब ने हमें अन्दर बुला लिया और संकेत करते हुए कहा कि बैठ जाओ। फिर मुझसे मुख़ातिब होकर कहा, कि ज़फ़रुल्लाह खां की माँ से कह देना कि मैं बहुत खुश हूँ। फिर मुझे होश आ गया और मैंने देखा कि मेरा बुखार बिल्कुल उतर गया है और मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ।

माँ का मेरे पास रहना

पिताजी की इच्छा थी कि उनके देहान्त के पाश्चात माँ स्थायी तौर पर मेरे पास ही रहें तथा आखिरी बीमारी में उन्होंने एक रंग में अपनी इस इच्छा को माँ से भी व्यक्त कर दिया था। मुझे भी यह गवारा न था कि माँ अब मुझ से दूर रहें। अत: मुझे यह सौभाग्य मिला कि माँ ने अपना शेष जीवन मेरे ही पास रहकर गुज़ारा और मेरे घर को अपने मुबारक वजूद से रोशन रखा और हम जो उनके चारों ओर रहते हर पल उनकी दुआओं से लाभान्वित होते रहे। यह 12 वर्ष का समय कितना मुबारक था और कितनी तेज़ी से गुज़र गया।

इस अवधि के प्रारम्भ में मेरी यह दिनचर्या थी कि मैं हर दिन इशा

की नमाज़ के बाद माँ की सेवा में हाज़िर हो जाया करता था और कुछ पल अपने राज़ो नियाज़ की बातों में गुज़ारा करते थे । यह नियम तो अन्त तक रहा । लेकिन प्रारम्भ के एक-दो साल के बाद कभी-कभी इसमें नाग़ा भी हो जाया करता था । उनका दिल बहुत संवेदनपूर्ण था । इसलिए वह छोटी-छोटी सी बातों से नतीजा निकाल लिया करती थीं । मुझसे कई क़सूर और कोताहियाँ भी हुईं और कभी-कभी गुस्ताखी भी हुई लेकिन वह बहुत दरगुज़र करने वाली थीं और मेरे क़सूर बहुत जल्द माफ़ कर दिया करती थीं । थोड़ी सी सेवा या प्यार के इज़हार पर उनकी ओर से दुआओं का एक लम्बा सिलसिला जारी हो जाया करता था । यह बर्ताव केवल मेरे साथ ही विशिष्ट न था । हर वह व्यक्ति जिसका उनके साथ दूर का भी संबंध था वह इस बात का गवाह है कि वह दरगुज़र, क्षमा, प्रतिफल देने और खैरात करने में बहुत तेज़ थीं और सख़ी थीं ।

एक बार उन्होंने मुझसे कहा, मैं कभी-कभी हैरान होती हूँ कि तुम मेरी इतनी आज्ञापालन क्यों करते हो । मैंने कहा, प्रथम इसलिए कि आप मेरी माँ हैं और अल्लाह तआला ने आपकी आज्ञा का पालन करना मुझ पर अनिवार्य किया है । द्वितीय इसलिए कि मैं आपकी ओर से अत्यन्त प्रेम का पात्र हूँ । तृतीय इसलिए कि मैं चाहता हूँ कि जब परलोक में आपका स्व. पिताजी से मिलन हो तो उनसे कह सकें कि आप के बेटे ने मेरी पूर्णत: आज्ञापालन की और मैं उससे खुश रही । जब मैंने यह आखिरी बात कही तो मुस्कुराकर कहा, यह तो मैं उनसे ज़रूर कहूँगी ।

बिहार की यात्रा

सन् 1927 ई. की गर्मियों की छुट्टियों में हम सब चौधरी शमशाद अली साहिब के यहाँ गिरडीह (बिहार) गए, (जो मेरे ससुर

थे और अब बहिश्ती मक़बरा में दफ़न हैं) । माँ भी मेरे साथ थीं वहाँ पहुंचने पर दोपहर के बाद ही वह सो गईं और स्वप्न में देखा कि मेरे घर के आंगन में एक फलदार पेड़ है और घर से उस पेड़ के पास गई हैं और एक टहनी को पकड़कर उससे फल तोड़ना चाहती हैं । इस पर पिताजी ने उन्हें मना किया और कहा कि अभी यह फल कच्चा है और तोड़ने के लायक नहीं । जब वह फल पकेगा तो मैं स्वयं उसे तश्तरी (प्लेट) में रखकर लाऊँगा । माँ ने पिताजी से कहा कि हम तो 900 मील की यात्रा करके रेल से यहाँ आए हैं, आप इतनी जल्द यहाँ कैसे पहुँच गए ? तो उन्होंने जवाब दिया कि मैं आप के साथ-साथ ही आया हूँ ।

चौधरी शमशाद अली खां साहिब ने एक दिन शाम को कहा, आइए, आपको रूहों से बातचीत करने का ढंग दिखाएँ और एक तिपाई पर हाथ रखवाकर तजुर्बे शुरू किए । माँ से भी कहा, आइए आप भी इसमें भाग लें । उन्होंने हँसकर कहा, बेटा भला इस तरह भी कभी रूहों से बातचीत होती है ? थोड़ी देर के बाद उन्होंने पुनः माँ को बुलाया कि आइए चौधरी (अर्थात मेरे पिताजी) की रूह मौजूद है इससे बातें कर लें । माँ ने उत्तर दिया, मेरी ओर से कह दें कि जो काम अल्लाह तआला ने आपके सुपुर्द किया हुआ है उसका करना मेरे साथ बातें करने से ज़्यादा मुबारक है आप उसी में लगे रहें ।

कश्मीर की यात्रा

माँ को पर्यटन का बहुत शौक था और प्राकृतिक दृश्य देखना बहुत पसन्द करती थीं । किसी प्रकार की यात्रा करने से नहीं घबराती थीं । यहाँ तक कि पहाड़ी इलाकों में भी रेल या मोटर से यात्रा बड़े शौक से किया करती थीं । सन् 1929 ई. की गर्मियों में हज़रत खलीफतुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो कश्मीर में थे ।

छुट्टियों का मौसम आते ही हम भी कश्मीर चल दिए । लेकिन श्रीनगर पहुंचते ही मुझे एक कमेटी में शामिल होने के लिए वापिस आना पड़ा । माँ श्रीनगर में ही रुक गईं । उनका हाऊसबोट हज़रत खलीफतुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो के काफिला के हाऊसबोट के साथ ही था । चौधरी शाहनवाज़ साहब उनके पास थे । मेरे चले आने के बाद झेलम नदी में बहुत बाढ़ आ गई और दो-तीन दिन बहुत बेचैनी में गुज़रे । जब मैं वापिस श्रीनगर पहुँचा तो माँ से उन दिनों के हालात सुने । उन्होंने कहा कि मुझे अपनी तो फ़िक्र न थी शेष काफिले वालों के लिए दुआएँ करते हुए समय गुज़रा । एक समय ऐसा आया कि साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब वाली कश्ती ख़तरे में थी । जिस रात बाढ़ अधिक बढ़ गई थी वह समय बहुत बेचैनी भरा था । मैं तो पूरी रात दुआओं में लगी रही और यह सोचकर शाहनवाज़ को न जगाया कि वह भी बेचैनी में पड़ जाएगा । हालाँकि मै बार-बार उसके कमरे के दरवाज़े के पास जाकर उसे देख आती थी कि आराम से सो रहा है या नहीं और दुआ करती थी कि हे अल्लाह! यह अपने बाप के घर का आख़िरी उम्र का तेरा दिया हुआ चिराग़ है इसकी रक्षा करना । अपनी मुझे कोई फ़िक्र न थी । मुझे इत्मीनान था कि जब हज़रत साहिब पास में हैं तो हमें क्या खतरा है।

उन्हीं दिनों की बात है मैनें माँ से पूछा कि हम तो लोगों से अहमदियत के बारे में लम्बी-लम्बी बहसें करते हैं लेकिन किसी पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है इसके विपरीत जो औरत आप से दो-चार बार मिल लेती है तो वह अवश्य प्रभावित हो जाती है, इसका क्या कारण है ? उन्होंने उत्तर दिया " बेटा मैं कोई पढ़ी लिखी औरत नहीं हूँ और कोई ज्ञान मैंने प्राप्त नहीं किया । केवल इतना है कि मैं अल्लाह तआला से डरती हूँ और उससे मुहब्बत करती हूँ" । मैं समझ गया कि सारे ज्ञान का निचोड़ तो यही है ।

एक दुर्घटना से सम्बन्धित स्वप्न

सन् 1931–32 ई. में मैं अधिकतर दिल्ली में रहा । क्योंकि उन दिनों में मैं साजिश–ए–दिल्ली के मुक़दमे में सरकार की तरफ़ से पैरवी कर रहा था । बड़े दिन की छुट्टियों में जलसे में हाज़िर हुआ । जलसे के बाद लाहौर चला गया । माँ उन दिनों अधिकतर लाहौर में रहा करती थीं । 31 दिसम्बर सन् 1931 ई. को दोपहर के बाद मैंने देखा कि वह बहुत ग़मगीन दिखाई दे रही हैं और बार–बार आँखें भर आती हैं मैंने पूछा कि क्या कारण है ? तो कहा कि कोई विशेष कारण नहीं है । कल दिल्ली वापिस जा रहे हो इसलिए कुछ ग़मगीन हूँ । मैंने कहा आप भी साथ चलें, तो जवाब दिया नहीं, मैं कुछ दिन बाद आ जाऊँगी ।

01 जनवरी सन् 1932 ई. को मैं दोपहर से पहले एक बजे के लगभग मोटर से लाहौर से दिल्ली के लिए रवाना हुआ । 2 बजने में 20 मिनट थे कि करतारपूर और जालन्धर के बीच मोटर की एक बैलगाड़ी से टक्कर हो गई और मुझे चेहरे पर गम्भीर चोटें आयीं । उसी हालत में मुझे जालन्धर शहर के अस्पताल में ले जाया गया । शाम को टेलीफोन से लाहौर सूचना दी गई तो माँ उसी समय चल पड़ीं और रात 11 बजे तक जालन्धर आ गयीं ।

मेरी हालत के बारे में जानकारी मालूम करने के बाद बताया कि कल जो मैं इतनी ग़मगीन थी उसका कारण यह था कि मैनें परसों रात एक स्वप्न देखा था जिससे मेरा दिल बहुत ग़मगीन था । वह स्वप्न यह था कि काला बादल चढ़ा है जिससे बिल्कुल अँधेरा छा गया है । फिर बिजली गिरी है और साथ ही आसमान साफ़ हो गया है । लोग कहते हैं अच्छा हुआ कोई नुकसान नही हुआ । जब कि साथ के मकान वालों का नुकसान हुआ है । जहाँ बिजली गिरी थी मैंने देखा कि तुम्हारे कमरे की बाहर की दीवार पर एक काली लकीर सी रह गयी है और कोई नुकसान नहीं हुआ । मैंने उस स्वप्न के देखने के

बाद सदक़ा दिया। लेकिन दिल बेचैन था । अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसने अपने फ़ज़्ल से तुम्हें बचा लिया ।

मुझे दो दिन तो जालन्धर के अस्पताल में ठहरना पड़ा और तीसरे दिन लाहौर के अस्पताल में ले जाया गया । वहाँ लगभग दस दिन रहा । फिर अपने मकान पर चला गया । मॉडल टाउन चले जाने के दूसरे तीसरे दिन शाम को मुझे तेज बुखार हो गया । यद्यपि बुखार तेज था लेकिन दिल में कोई ज्यादा बेचैनी नहीं थीं बल्कि कुछ इत्मीनान सा था कि यह थोड़ी देर के बाद उतर जाएगा । लेकिन माँ बहुत बेचैन हो गयीं और बहुत बेचैनी की हालत में दुआ करती रहीं । कुछ घंटों में बुखार उतर गया और माँ को कुछ चैन मिला तो उन्होंने बताया कि मेरी बेचैनी का कारण यह था कि जो स्वप्न मैंने तुम्हें जालन्धर में सुनाया था उसके दो हिस्से थे । एक हिस्सा तो मैंने तुम्हें सुना दिया था, दूसरा हिस्सा नहीं सुनाया था । वह यह था कि पुन: सो जाने पर स्वप्न में देखा कि हम घर की औरतें साथ वाले मकान में छत से होते हुए गई हैं और उस घर की औरतों से बातचीत करती रही हैं । वहाँ से वापिस भी छत पर से आने लगी हैं । जब सीढ़ी से मैंने छत पर पैर रखा तो देखा कि छत पर केवल सड़ी-गली लकड़ियाँ ही रह गई हैं शेष सारी छत ग़ायब हो चुकी है । मैंने अपने साथ वाली औरतों को रोक दिया कि इस छत पर पैर मत रखना यह तो बिल्कुल गिर चुकी है और कहा कि जब हम नीचे कमरे में बैठे थे तो यह छत कितनी अच्छी और खूबसूरत दिखाई दे रही थी और अब वीरान हो गई है । फिर मेरी नींद खुल गयी । आज जो तुम्हें बुखार चढ़ा है तो मुझे चिंता हुई कि यह कहीं स्वप्न का दूसरा हिस्सा न हो । अल्लाह तआला का शुक्र है कि उतर गया ।

यह घटना 14 या 15 जनवरी की थी । 17 जनवरी को सुबह तार मिला कि 16 को चौधरी शमशाद अली खां साहिब की शिकार में अचानक गोली लग जाने से मृत्यु हो गयी है । रिश्ते के लिहाज़

से और इस दृष्टि से भी कि माँ को उनसे अपने बेटों जैसा लगाव था। उनका घर मानो हमारे घर के साथ ही था।

इसके बाद जब कभी भी माँ को जालन्धर से गुज़रने का संयोग होता तो दो रकात नफ़्ल नमाज़ शुकराना के तौर पर पढ़तीं कि इस जगह अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल और रहम से मेरे बेटे को दोबारा ज़िन्दगी बख़्शी।

जून 1932 ई. में मियाँ सर फ़ज़ल हुसैन साहिब के अवकाश में चले जाने के कारण मेरा भारत सरकार के मेम्बर के पद पर अस्थायी रूप से चार माह के लिए चयन हुआ। जुलाई सन् 1932 ई. में एक दिन रात दस बजे के लगभग लाहौर से अज़ीज़ असदुल्लाह खां का तार मिला कि चौधरी जलालुद्दीन साहिब असिस्टेंट पोस्ट मास्टर जनरल (जो हमारे वंशज भाई थे) कुछ घंटों की बीमारी के बाद मृत्यु पा गए हैं। माँ को उनके साथ भी बहुत लगाव था। उस समय अज़ीज़ चौधरी बशीर अहमद साहिब भी शिमला में ही थे और जिस समय तार मिला वह मेरे पास ही बैठे हुए थे। हम दोनों ने सोचा कि यह खबर रात के समय माँ को न सुनाई जाय तो ज्यादा अच्छा होगा अन्यथा उनकी सारी रात बेचैनी में गुज़रेगी।

दूसरे दिन सुबह मैं उनके कमरे में गया तो देखा कि अभी पलँग पर ही हैं और बहुत ग़मगीन दिखाई दे रही हैं। मैंने पूछा कि क्या कारण है ? तो कहा कि रात को मैंने दो स्वप्न ऐसे देखे हैं जिनके कारण से मुझे बेचैनी है। पहला स्वप्न तो यह था कि मैंने देखा कि तुम्हारे पिता किसी व्यक्ति को जिसे मैं पूरी तरह पहचान नहीं सकी लेकिन मेरा विचार है कि वह हमारे ख़ानदान में से ही कोई व्यक्ति है जो एक सफ़ेद चादर में लिपटा हुआ है उसे सहारा देकर सीढ़ी से उतार रहे हैं। इसके बाद मैं जाग गई और फिर स्वप्न में देखा कि किसी आदमी ने मुझे एक नोट बुक दी है। मैंने पूछा कि यह क्या है ? तो उसने उत्तर दिया कि जलालुद्दीन का तबादला हो गया है यह उसके हिसाब की

किताब है । उनका स्वप्न सुनने के बाद मैंने कहा कि फिर तो आप आज यात्रा करने योग्य न होंगी । इस पर माँ ने चौंक कर पूछा, क्या हुआ ? मैंने तार की खबर सुना दी ।

माँ की दिलेरी

अल्लाह तआला ने माँ को हिम्मत और दिलेरी भी बहुत प्रदान की थी । किसी के दुःख या दर्द की हालत देखकर या सुनकर उनका दिल तुरन्त पिघल जाता था । जब कभी किसी बच्चे के रोने की अवाज़ उनके कान में पड़ती तो उनकी नींद उड़ जाती । लेकिन यदि कोई ऐसा समय आ जाता जहाँ उन्हें अपनी ही हिम्मत पर निर्भर होना पड़े तो ऐसे समय में वह अपनी सारी कमजोरियों को भूल जाती थीं और पुरुषों जैसे हौसले का नमूना दिखाती थीं ।

सन् 1933 ई. की घटना है मैं लंदन गया हुआ था । माँ उन दिनों मॉडल टाउन लाहौर में रहती थी । एक़ दिन जुहर या अस्र की नमाज़ पढ़ते समय सलाम फेरने के बाद सामने के एक मकान पर उनकी नज़र पड़ी जहाँ भवन का निर्माण कार्य चल रहा था । संयोग से उस समय एक राजगीर अपने हाथ से हमारे ज़नाना आंगन की ओर इशारा कर रहा था । दूसरा मज़दूर उसके पास खड़ा था । माँ ने जब उस घटना का पूरा वृत्तान्त मुझे सुनाया तो उसके उस भाग के बारे में बताया कि एक पल के लिए मेरे दिल में यह विचार आया कि शायद यह राजगीर हमारे मकान की ओर इशारा करके उस मज़दूर को इस बात के लिए उकसा रहा है कि मौक़ा पाकर रात के समय वे चोरी के लिए हमारे मकान में दाखिल हों । लेकिन इस विचार के साथ ही मेरे दिल ने मुझे मलामत किया कि मैंने उन गरीब राजगीरों पर अकारण बदगुमानी क्यों की । अत: मैंने उसी समय इस्तिग़फार पढ़ा और अल्लाह तआला से माफ़ी मांगी । उसी रात मैं औरतों वाले बरामदे में सो रही थी कि मैंने

महसूस किया कि कोई आदमी आकर मेरे पलँग के किनारे पर बैठ गया है । उसने मच्छरदानी उठाकर मेरे हाथ को पकड़ना चाहा मानो वह मेरे कंगन को पकड़ना चाहता था । मैं उठकर बैठ गई और पूछा कि तुम कौन हो ? और साथ ही आवाज़ दी कि कोई आदमी उठकर बिजली जला दे । मेरी आवाज़ सुनकर वह आदमी घबरा गया और पलँग से उठ खड़ा हुआ और रोशनी होने पर अहाते में चला गया । मैं भी उठकर उसके पीछे-पीछे चल पड़ी और ज़ोर-ज़ोर से उसे डाँटना शुरू कर दिया कि तुम कौन हो और मकान के अन्दर ज़नाना हिस्से में आने का तुम्हारा क्या हक़ है । वह कुछ डरा -सहमा सा होकर पीछे हटता चला गया और मैं आगे बढ़ती गई और साथ-साथ ऊँची आवाज़ से नौकरों को भी बुलाने की कोशिश करती जाती थी । यद्यपि मेरा दिल डर के कारण धड़क रहा था और मैं जानती थी कि यह व्यक्ति एक थप्पड़ या छड़ी से मेरा अन्त कर सकता है । लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे हिम्मत दी और मैं अहाते के आखिरी हिस्से तक उसके पीछे-पीछे चली गई । इतने में मेरी आवाज़ सुनकर मर्दाना हिस्से से बेटा असदुल्लाह और नौकर आ गए और उन्होंने उस आदमी को पकड़ लिया और उसके दोनों साथियों को भी जो बाहर बाग़ में उसका इन्तिज़ार कर रहे थे थोड़ी दूर जाकर पीछा करके पकड़ लिया । यही वे राज़गीर और मजदूर थे जिन्हें जुहर या अस्र के समय मैंने आपस में इशारे करते देखा था ।

जब उन लोगों का चालान हुआ तो माँ के दिल में दया की भावना उमड़ आयी । बार-बार कहतीं कि मैं चाहती हूँ कि उन गरीबों पर सख्ती न हो, मज़दूर लोग हैं मालूम नहीं किस उकसावे में आकर उन्होंने यह काम किया । जो व्यक्ति मकान के अन्दर घुसा वह तो मुझ जैसी बुढ़िया के सामने सहम गया था । स्वयं ही सोचती रही कि मकान के अन्दर आने वाले के लिए तो तीन-चार माह की क़ैद पर्याप्त सज़ा है और जो उसके दो साथी बाहर से पकड़े गए वे रिहा हो जाने चाहिएँ । मजिस्ट्रेट ने उन सब को एक-एक वर्ष क़ैद की सज़ा दे दी ।

अब माँ को यह चिंता होने लगी कि किस तरह उन लोगों की सज़ा में कमी हो ।

इसी मध्य मैं लन्दन से वापिस आ गया । मुझे सारी घटना माँ ने सुनायी और कहा कि तुम कोशिश करो कि उन लोगों की सज़ा में कमी हो जाए । मैंने कहा कि यह तो मेरे अधिकार में नहीं । उनकी अपील सेशन कोर्ट में दायर है । यह हो सकता है कि यदि वे लोग मुझ पर भरोसा करें तो मैं उनकी ओर से बिना फीस के उनकी अपील की पैरवी करूँ। सम्भव है कि जज यह सोच ले कि जब इसी के घर में यह चोरी की नीयत से घुसे थे और यही उनकी ओर से वकालत करता है तो उनकी सज़ा में कम से कम कुछ कमी कर देनी चाहिए । लेकिन साथ ही यह खराबी भी होगी कि मुझे अज़ीज़ असदुल्लाह खां और अपने नौकरों की गवाही पर आलोचना करनी पड़ेगी और सम्भव है कि जज यह भी सोचे कि यह अजीब आदमी है, रुपयों की लालच में यह कार्यवाही कर रहा है । उसे यह तो मालूम नहीं होगा कि मैं किस कारण से उन लोगों की वकालत कर रहा हूँ । माँ ने कहा, यह तरीका ठीक नहीं कोई दूसरा तरीका ढूँढो । मैंने कहा कि यदि उनकी अपील नामंज़ूर हो गई और हाईकोर्ट से भी उनकी सज़ा में कमी न हुई तो फिर यह हो सकता है कि मैं गवर्नर साहिब की सेवा में निवेदन करूँ कि उनकी सज़ा में कमी कर दें । माँ ने कहा कि वहाँ भी तुम्हें यह बताना पड़ेगा कि मेरी इच्छा के अनुसार तुम उनसे यह कह रहे हो । मैंने कहा यह तो कहना ही पड़ेगा । कहने लगीं, यह ढंग भी उचित मालूम नहीं होता । अच्छा, यदि कोई दूसरा उपाय नहीं तो मैं उन लोगों के लिए दुआ करुँगी कि अल्लाह तआला उन पर रहम करे ।

अत: जब तक उनकी अपील का फैसला न हुआ उनके लिए दुआ करती रहीं और परिणाम यह निकला कि उनकी अपील का फैसला बिल्कुल माँ की इच्छा के अनुसार हो गया । जब माँ ने यह सुना तो बहुत खुश हुईं कि अल्लाह तआला ने उन गरीबों पर रहम किया ।

लोगों के साथ हमदर्दी

लोगों के साथ हमदर्दी और दया की भावना अल्लाह तआला ने उनमें कूट कूटकर भर दी थी । अक्सर कहा करती थीं कि अल्लाह तआला अगर दुश्मन न हो तो कोई दुश्मन क्या बिगाड़ सकता है और मैं तो इस लिहाज़ से किसी को दुश्मन समझती ही नहीं । दुश्मनों के साथ सद्व्यवहार के बारे में कहा करती थीं कि जिससे दिल खुश हो उसके साथ सद्व्यवहार के लिए तो स्वयं ही दिल चाहता है । इसमें सवाब (पुण्य) की कौन सी बात है । अल्लाह तआला को खुश करने के लिए मनुष्य को चाहिए कि उन लोगों से भी एहसान और नेकी का बर्ताव करे जिनसे दिल राज़ी न हो ।

डस्का के लोगों के साथ माँ का बर्ताव हमेशा सखावत और दीन दुखियों की मदद का सा हुआ करता था । अकीदों और धार्मिक मतभेदों के बावजूद वहाँ के हिन्दू, सिक्ख, ईसाई और ग़ैर अहमदी इत्यादि उनका बहुत सम्मान किया करते थे । लेकिन जब अहरार का फितना (उपद्रव) उठा तो धीरे-धीरे हमारे गाँव के ग़ैर अहमदी भी उससे प्रभावित हो गए और भिन्न-भिन्न प्रकार से अहमदियों को दुःख देने लगे और हमारे ख़ानदान के कई लोगों को विशेष रूप से कष्ट पहुँचाने के लिए निशाना बनाया गया ।

उन घटनाओं से माँ को स्वाभाविक रूप से बहुत दुःख पहुँचता था । लेकिन उनके परिणाम स्वरूप उनके सद्व्यवहार में कमी न आती थी । यदि हमारे लोगों में से कोई इस प्रकार का इशारा भी करता कि ये लोग तो हमारे दुश्मन हैं, आप इनसे ऐसा सद्व्यवहार क्यों करती हैं तो वह इसको नापसन्द करतीं और सदैव यही जवाब दिया करतीं कि जिसका अल्लाह दुश्मन न हो उसका दूसरा कोई दुश्मन नहीं हो सकता । उनका अधिकतर यह उसूल था कि अनाथों और गरीबों के लिए अपने हाथ से कपड़े सिलकर तैयार करती रहती थीं और जरूरतमन्द के

मांगने से पहले उनकी ज़रूरतों को अल्लाह तआला के दिए हुए सामर्थ्य के अनुसार पूरा करती रहती थीं ।

एक दिन डस्का में गरीबों के लिए कुछ कपड़े सिलकर तैयार कर रही थीं कि मियाँ जुमा ने पूछा, यह कपड़े किसके लिए तैयार हो रहे हैं ? माँ ने कहा अमुक आदमी के बच्चे के लिए । मियाँ जुमा ने हँसकर कहा, आपका भी अजीब तरीका है । वह तो अहरारी है और हमारा घोर विरोधी है और ये लोग हर दिन हमारे खिलाफ कोई न कोई शरारत शुरू कर देते है और आप उनके बच्चों के लिए कपड़े तैयार कर रही हैं । माँ ने कहा, वे शरारत करते हैं अल्लाह तआला हमारी हिफ़ाज़त करता है । जब तक वह हमारे साथ है, मुखालिफों की शरारतें हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकतीं । लेकिन यह आदमी गरीब है उसके पास अपने बच्चों और पोतों के तन ढांकने के लिए कपड़े नहीं हैं । क्या तुम समझते हो कि अल्लाह तआला को यह पसन्द है कि उसके बच्चे और पोते नंगे फिरें ? और तुमने जो मेरी बात नापसन्द किया है उसकी सज़ा यह है कि यह कपड़े जब तैयार हो जाएँ तो तुम ही इन्हें लेकर जाना और उस आदमी के घर पहुँचाकर आना । लेकिन रात के समय ले जाना ताकि किसी को पता न लग सके कि मैंने भेजे हैं नहीं तो दूसरे अहरारी उसे तंग करेंगे कि तुमने अहमदियों से यह चीज़ें क्यों लीं ।

उन्हीं दिनों हमारे गाँव के एक साहूकार ने एक गरीब किसान के जानवर डिग्री करवाकर कुर्क कर लिए । वह किसान भी अहरारियों में शामिल था । कुर्क किए गए जानवरों में एक बछड़ी भी थी । कुर्की के समय किसान के एक छोटे बच्चे ने बछड़ी की रस्सी पकड़ते हुए कहा कि यह बछड़ी मेरे बाप ने मुझे दी है मैं इसे नहीं ले जाने दूँगा । डिग्री करवाने वाले ने वह बछड़ी भी कुर्क करा ली । इससे कुछ दिन पहले इसी किसान की एक भैंस कुएँ में गिरकर मर गई थी । यह गरीब आदमी था और यह जानवर ही उसकी पूंजी थे ।

माँ उन दिनों डस्का ही में थीं । जब उन्हें इस घटना की खबर पहुँची तो बेचैन हो गयीं । बार-बार कहतीं, आज उस बेचारे के घर में मातम की हालत होगी । उसकी कमाई का साधन खत्म हो गया । उसके बीवी बच्चे किस उम्मीद पर जियेंगे । जब उसके लड़के के हाथ से डिग्री करवाने वाले ने बछड़ी की रस्सी भी ले ली होगी तो उसके दिल पर क्या गुज़री होगी! फिर दुआ में लग गईं की हे अल्लाह तू मुझे सामर्थ्य दे कि मैं उस गरीब की और उसके बीवी बच्चों की इस मुसीबत में मदद कर सकूँ ।

मियाँ जुमा को बुलाया (ये तीन पीढ़ियों से हमारी खेती बाड़ी की देखभाल करते हैं) और कहा आज यह घटना घटी है । तुम अभी साहूकार को बुलाकर लाओ । मैं उसके साथ उस आदमी के क़र्ज़ों का समझौता करुँगी और अदायगी का इन्तिज़ाम करुँगी ताकि शाम से पहले पहले उसके जानवर उसे वापिस मिल जाएँ और उसके बीवी बच्चों के दिलों की ढांढस बँधे । मियाँ जुमा ने कहा मैं तो ऐसा न करूँगा क्योंकि यह आदमी हमारा मुखालिफ़ है और हमारे दुश्मनों के साथ शामिल है । माँ ने नाराज़ होते हुए कहा :-

“तुम मल्ल जुलाह के बेटे हो और मैं चौधरी सिकन्दर खां की बहू और चौधरी नसरुल्लाह खां की बीवी और ज़फरुल्लाह खां की माँ हूँ और मैं तुम्हें खुदा के नाम पर एक बात कहती हूँ और तुम कहते हो मैं नहीं करूँगा । तुम्हारी क्या हिम्मत है कि तुम इन्कार करो, जाओ जो मैं आदेश देती हूँ तुरन्त पालन करो और याद रखो, साहूकार को कुछ सिखाना पढ़ाना नहीं ताकि समझौते में कोई दिक्कत हो ।”

जब मुझसे यह घटना बयान की तो बताया की जुहर का समय हो चुका था । मैंने नमाज़ में फिर बहुत दुआ की कि हे अल्लाह ! मैं एक कमज़ोर औरत हूँ तू ही इस अवसर पर मेरी सहायता कर और मैंने यह भी दुआ की कि मेरे बेटे अब्दुल्लाह खां और असदुल्लाह खां क़सुर और लाहौर से जल्दी पहुँच जाएँ (मैं उन दिनों लन्दन में था) नमाज़ पढ़कर

अभी खड़ी ही हुई थी कि अब्दुल्लाह खां और असदुल्लाह खां मोटर में आ गये । मुझे देखते ही उन्होंने पूछा,आप इतनी ग़मगीन क्यों हैं ? मैंने सारा हाल उनसे बता दिया और कहा तुम दोनों इस विषय में मेरी मदद करो । उन्होंने कहा जैसा आपका आदेश हो ।

अत: साहूकार आया और माँ ने उसके साथ कर्ज़दार के हिसाब का समझौता किया । साहूकार ने बहुत कुछ बहाने बनाए । लेकिन माँ ने मूलधन पर ही फैसला किया और फिर साहूकार से कहा कि यह रकम मैं स्वयं अदा करुँगी । तुम तुरन्त उसके जानवर वापिस लाकर उसके सुपुर्द करो । फिर निपटारे की रकम इस तरह अदा की कि जितना अपने पास रुपया मौजूद था वह दिया और शेष अपने बेटों को आदेश दिया कि वे दें । जब जानवर किसान को वापिस मिल गए तो उसके बेटे से कहा जाओ अब जाकर अपनी बछड़ी पकड़ लो । अब कोई तुमसे नहीं ले सकता । फिर अपने बेटों को दुआएँ दीं कि तुमने मेरा ग़म दूर कर दिया । अब मैं चैन की नींद सो सकूँगी ।

सिलसिला (जमाअत) के लिए ग़ैरत

उपरोक्त घटनाओं से यह परिणाम निकालना कि माँ को इस सिलसिला (जमाअत) से ग़ैरत न थी सच्चाई के विरुद्ध होगा । सिलसिला के बारे में उन्हें अत्यन्त ग़ैरत थी और वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, सिलसिला अहमदिया, ख़ानदान-ए-नबूवत और बुज़ुर्गान-ए-सिलसिला के बारे में किसी प्रकार की गुस्ताख़ी या अनुचित हरकत बर्दाश्त न कर सकती थीं ।

मुझे अच्छी तरह याद है कि जिस ज़माने में पिताजी जमाअत में दाखिल हुए उन्हें मस्नवी मौलाना रोम पढ़ने के लिए बहुत दिलचस्पी थी और फ़ुर्सत के समय एक व्यक्ति के साथ जो देखने में सूफ़ियाना और फ़कीराना ढंग रखते थे मस्नवी पढ़ा करते थे । एक बार वह

साहब किसी छुट्टी के दिन हमारे घर आए और पूछा कि पिताजी कहाँ हैं ? दफ्तर में सम्भवत: उस समय कोई क्लर्क या कर्मचारी मौजूद नहीं था । उस साहब ने सोचा कि शायद पिताजी पहली मंजिल पर होंगे । उन्होंने ऊँची आवाज़ से पिताजी को बुलाया । माँ ने मुझसे कहा, कह दो चौधरी साहिब घर पर नहीं हैं । मैंने उसी तरह कह दिया । उन साहब ने पूछा, कहाँ हैं, माँ ने कहा, कह दो क़दियान गए हुए हैं । यह सुनकर उस ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के बारे में कोई अशिष्ट बात कही । अब तक तो माँ मेरे माध्यम से जवाब दे रही थीं । यह बात सुनते ही गुस्से से भर गयीं और खिड़की के पास जाकर ज़ोर से उन साहब से कहा:-

"तुमने बहुत ज़ुल्म किया है अगर खैरियत चाहते हो तो इसी वक़्त मेरे मकान से निकल जाओ । फिर कहा, क्या कोई नौकर है यहाँ ? निकाल दो इस गुस्ताख़ बूढ़े को और याद रखो फिर कभी यह इस मकान में दाख़िल न होने पाए । अब आ ले इसका दोस्त जिसके साथ यह मस्नवी पढ़ने के लिए यहाँ आता है, तो लूँगी उसकी खबर, कि ऐसे अशिष्ट गुस्ताख़ के साथ क्यों उठना – बैठना जारी रखा हुआ है ।"

वह सहिब तो उसी समय चले गए । पिताजी के क़दियान से वापिस आने पर माँ ने बहुत दुःख का इज़्हार किया और हठपूर्वक कहा कि अब वह साहिब कभी हमारे मकान के अन्दर दाख़िल न हों । अतएव उस दिन के बाद फिर वह हमारे मकान पर नहीं आए ।

यह दशा तो प्रारम्भिक मुहब्बत और ग़ैरत की थी फिर ज्यों-ज्यों समय गुज़रता गया ग़ैरत भी बढ़ती गई । ख़ानदान-ए-नबूवत के साथ जितनी मुहब्बत और निष्ठा उन्हें थी उसका किसी हद तक अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि अक्सर मैंने उनसे सुना है कि मैं कभी कोई दुआ नहीं करती जब तक कि पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के सारे ख़ानदान के लिए दुआ नहीं कर लेती ।

हज़रत अमीरुल मोमिनीन के साथ अपार निष्ठा

हज़रत खलीफतुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ उन्हें अपार निष्ठा और प्रेम था । आप का कोई आदेश पहुँचता तो तुरन्त उस पर कारबन्द हो जातीं और हुज़ूर भी विशेषरूप से उनसे प्यार और हमदर्दी का सलूक किया करते थे । कभी-कभी मुहब्बत के जोश में वह हुज़ूर के साथ बिल्कुल ऐसे बातें कर लेतीं थीं जैसे माँ अपने बच्चे के साथ करती है और हुज़ूर भी उनकी दिलजोई के लिए कभी-कभी बड़ी देर तक उनकी बातें सुनते रहते थे ।

माँ का एक स्वप्न विशेष रूप से इस सम्बन्ध की ओर इशारा करता है । चार-पांच साल पहले उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वप्न में देखा कि पिताजी के साथ कुछ बात कर रहे हैं और फिर माँ की ओर इशारा करके कहा इन्हें बुलाइए । अत: पिताजी ने किसी से कहा, वह ज़फ़रुल्लाह खां की माँ खड़ी है उनसे कहें, हुज़ूर ने बुलाया है माँ यह पैग़ाम मिलने पर हुज़ूर की पीठ के पीछे जाकर खड़ी हो गयीं और कहा, हुज़ूर मैं हाज़िर हूँ । हुज़ुर ने कहा :-

"महमूद से कहना वह मस्जिद वाली बात याद नहीं ?"

जब मैंने माँ का यह स्वप्न हज़रत खलीफतुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो से बयान किया, तो हुज़ूर ने फ़रमाया यह आने वाले फितना से सम्बन्धित जमाअत की हिफ़ाज़त की तरफ़ इशारा है ।

पिताजी के देहान्त के कुछ समय बाद माँ ने हज़रत खलीफतुल मसीह सानी की सेवा में निवेदन किया कि यदि सम्भव हो तो उनके निकट ही मेरी क़ब्र की जगह निर्धारित कर दें । हुज़ूर ने कहा, साधारणत: ऐसा करना नापसन्द है लेकिन अपवाद की दशा में ऐसा हो सकता है । अत: हुज़ूर ने पिताजी की क़ब्र के दायीं तरफ़ माँ के लिए जगह निर्धारित कर दी। लेकिन ऐसा संयोग हुआ कि जब ताई साहिबा का देहान्त हुआ तो उन्हें उस जगह दफन कर दिया गया ।

माँ ने जब हुज़ूर से इस बात का वर्णन किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि बहिश्ती मक़बरा के प्रबन्धकों की ग़लती से ऐसा हो गया । अब हमने दूसरी जगह आप के लिए तय कर दी है यह उसी क़ित्अ: में है लेकिन चौधरी साहिब के पाँव की तरफ़ है । माँ ने कहा, हुज़ूर मैं हूँ भी उनकी पाँव की जगह ही के लायक़ । लेकिन अब ऐसा इन्तिज़ाम करें कि फिर मेरी जगह किसी और को न मिल जाए । हुज़ूर ने कहा अब हमने बहिश्ती मक़बरा के विभाग को यह हिदायत दे दी है कि वह अपने रजिस्टरों में इसे दर्ज कर लें और अखबार में ऐलान भी करा दिया जाएगा ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़ानदान के साथ मुहब्बत

सन् 1935 ई. में जब एक अहरारी ने साहिबज़ादा मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब पर हमला किया तो यह बात सुनकर माँ को बहुत दुःख हुआ । खाना-पीना छूट गया, नींद उड़ गई, आँखों से आँसू बन्द न होते थे । कुछ दिनों के बाद मुझसे कहा, ज़फरुल्लाह खां मैं बहुत सोचती हूँ कि जब इस घटना को सुनकर मेरा यह हाल है तो अम्मा जान (हज़रत उम्मुल मोमिनीन) का क्या हाल होगा ? फिर मैं सोचती हूँ कि मैं इस मामले में क्या कर सकती हूँ । दो-तीन दिन हुए एक विचार मेरे दिमाग़ में आया है इसके बाद मैंने बहुत दुआएँ की हैं और मुझे भरोसा है कि अल्लाह तआला मुझे उस पर अमल करने की तौफीक़ देगा ।

मैंने पूछा, कि क्या विचार है । तो माँ ने कहा लेडी विलिंग्डन मेरे साथ बहुत मुहब्बत करती हैं और मैं भी महसूस करती हूँ कि उन्हें अवश्य मेरे साथ कुछ लगाव है । अगर तुम उनके साथ मेरी मुलाक़ात

का वक्त तय करा दो और वायसराय भी उस समय मौजूद हों, तो मैं उनके सामने बयाँ करूँ कि सिलसिला (जमाअत) के साथ हुकूमत की तरफ से कैसा सुलूक हो रहा है और अब उसका नतीजा यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के बेटे पर एक आवारा आदमी ने हमला कर दिया है । मैं अब बूढ़ी औरत हूँ मेरे बारे में तो अब पर्दा की भी कोई सख़्त पाबन्दी नहीं और मेरे दिल में बार-बार यह बात उठती है कि मैं वायसराय के सामने जाकर यह शिकवा करूँ ।

मैंने कहा मुलाक़ात का इन्तिज़ाम तो मैं करा दूंगा और तर्जुमानी (अनुवाद) के लिए साथ भी चलूँगा । लेकिन बात सारी आपको खुद ही करनी होगी । मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकूँगा नहीं तो वह सोचेंगे कि मैं आपको सिखाकर लाया हूँ । माँ ने कहा, तुम समय निर्धारित करा दो । बात करने की हिम्मत अल्लाह तआला मुझे दे देगा । अत: मैंने वायसराय महोदय से उनकी इच्छा व्यक्त की तो उन्होंने कहा, बड़ी खुशी से आएँ ।

वायसराय हिन्द से मुलाक़ात

निर्धारित समय पर हम दोनों वायसराय और लेडी विलिंग्डन की सेवा में हाज़िर हो गए । हालचाल पूछने के बाद वायसराय महोदय ने कहा ज़फरुल्लाह खां ने मुझे कहा है कि आप अपनी जमाअत के बारे में मुझसे कोई बात करना चाहती हैं । माँ और लेडी विलिंग्डन एक सोफे पर बैठी हुई थीं । लेडी विलिंग्डन की दायीं ओर वायसराय एक आरामकुर्सी पर बैठे थे और माँ के बायीं ओर मैं एक दूसरी आरामकुर्सी पर बैठा था । लेडी विलिंग्डन का यह दस्तूर था कि जब माँ के पास बैठती थीं तो एक हाथ माँ की कमर के चारों ओर डाल लिया करती थीं और बिल्कुल उनके साथ मिलकर बैठा करती थीं । अब भी ये दोंनों ऐसे ही बैठी हुई थीं । लेडी विलिंग्डन बीच-बीच में थोड़ी थोड़ी

देर में माँ के हाथ भी दबाती जाती थीं ।

वायसराय के पूछने पर माँ ने कहा, हाँ मैंने बहुत गौर करने के बाद आप तक पहुँचने की हिम्मत की है । मैं अहमदिया जमाअत की एक औरत हूँ । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्स्लाम ने जो हमारी जमाअत के संस्थापक थे, हमें शिक्षा दी है कि हम ब्रिटिश सरकार के वफादार रहें और उसके लिए दुआ करते रहें । क्योंकि इस शासन में हमें धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त है और हम निडर होकर अपने धर्म के काम कर सकते हैं मैं दूसरे लोगों के बारे में तो नहीं कह सकती लेकिन अपने बारे में पूरी दृढ़ता से कह सकती हूँ (इस समय माँ ने अपना दायाँ हाथ अपने सीने पर रख लिया) कि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के इस आदेश पर विधिवत् पालन करती रही हूँ और ब्रिटिश सरकार के क़याम और उसकी तरक्क़ी के लिए लगातार दुआ करती रही हूँ । लेकिन दो साल से पंजाब की सरकार का हमारी जमाअत के साथ कुछ ऐसा ग़ैर मुन्सिफाना बर्ताव हो गया है और हमारे इमाम और हमारी जमाअत को ऐसी-ऐसी तकलीफें पहुँच रही हैं । दुआ तो मैं अब भी करती हूँ क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का आदेश है । लेकिन अब दुआ दिल से नहीं निकलती, क्योंकि मेरा दिल खुश नहीं है ।

अभी कुछ दिनों की बात है कि एक आवारा और गुण्डे ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के बेटे और हमारे इमाम के छोटे भाई पर हमला कर दिया और उन्हें चोटें पहुँचायीं । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की औलाद हमें अपने प्राणों से भी प्यारी है और मैंने जब से इस घटना की खबर सुनी है मैं न खा सकती हूँ, न पी सकती हूँ, न मुझे नींद आती है ।

यह बातें माँ ने कुछ ऐसे दर्द से कहीं कि लेडी विलिंग्डन का चेहरा बिल्कुल तमतमा उठा और उन्होंने क्रोधित होकर वायसराय से पूछा यह क्या बात है और आपने क्यों उचित प्रबन्ध नहीं किया ?

वायसराय ने जवाब दिया । मैंने ज़फरुल्लाह खां के साथ इसके बारे

में विस्तारपूर्वक चर्चा की है और माँ से संबोधित होकर कहा । असल बात यह है कि ये विषय गवर्नर साहिब पंजाब के अधिकार में हैं और मैं उनसे सम्बन्धित उनके नाम कोई आदेश जारी नहीं कर सकता । यदि मैं इन विषयों पर हस्तक्षेप करूँ तो वह बुरा मानेंगे । जब मैं खुद बम्बई या मद्रास का गवर्नर था यदि उस समय के वायसराय ऐसे विषयों में मेरे नाम कोई आदेश जारी करते तो मैं भी बुरा मानता ।

माँ ने कहा, मैं आपसे यह नहीं कहती कि आप उनके नाम आदेश जारी करें या सख्ती से काम लें, पर उनके काम की निगरानी भी तो आप ही के सुपुर्द है आप उन्हें नरमी और प्यार से समझाएँ कि वह हमारी शिकायतों का हल करें ।

वायसराय ने कहा, हाँ मैं अवश्य ऐसा करूँगा । लेकिन लेडी विलिंग्डन का गुस्सा वायसराय के इस जवाब से ठंडा न हुआ । वह माँ का हाथ दबातीं जातीं और प्यार भरी बातों से उनको संबोधित करके बार-बार कहतीं मैं स्वयं पंजाब के गवर्नर को समझाऊँगी । आप घबराएँ नहीं । मैं उसको डाँटूँगी और मुझसे बार-बार कहतीं कि मेरी बात का सही सही तर्जुमा करो ।

एक दूसरे अवसर पर लेडी विलिंग्डन ने माँ से पूछा कि क्या एक देश की सरकार का इन्तिज़ाम ज्यादा आसान है या एक घर का इन्तिज़ाम ? माँ ने जवाब दिया, दोनों में से जिसको अल्लाह तआला ज्यादा आसान कर दे । वायसराय को यह जवाब सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ ।

मीर इनामुल्लाह शाह साहिब के निधन से सम्बन्धित स्वप्न

अप्रैल सन् 1935 ई. में मीर इनामुल्लाह शाह साहिब हैदराबाद गए

और मई के अन्त में वहाँ बहुत बीमार पड़ गए । जब उनकी बीमारी की सूचना मिली तो मैंने माँ की सेवा में दुआ के लिए लिखा । उन्हें मीर साहिब के साथ बहुत लगाव था, कहा दुआ करुँगी । लेकिन साथ ही बहुत चिन्ता व्यक्त की और कुछ समय पूर्व का अपना एक स्वप्न सुनाया, कि एक मकान की ऊपरी मंजिल के प्रांगण में मीर साहिब और अज़ीज़ चौधरी बशीर अहमद के साथ एक पलँग पर बैठी हूँ देखती हूँ कि खिड़की में से चौधरी जलालुद्दीन साहिब प्रांगण में आ गए । मैं दिल में डरी कि ये तो मृत्यु पा चुके थे । ये यहाँ कैसे आ गए । मैंने बशीर अहमद को इशारा किया कि हम कमरे के अन्दर जाना चाहते हैं । अत: बशीर अहमद ने दरवाज़ा खोला और हम दोनों कमरे के अन्दर चले गए । मैंने दरवाज़े के शीशे से देखा कि चौधरी जलालुद्दीन साहिब मीर साहिब के पास पलँग पर बैठ गए और फिर दोनों एक ही रज़ाई ओढ़कर उसी पलँग पर लेट गए । मैंने जब यह स्वप्न सुना तो माँ से कहा, कि इसका स्पष्टीकरण तो बिल्कुल स्पष्ट है । यदि आप उसी समय बता देतीं तो मैं मीर साहिब को हैदराबाद से वापिस चले आने को कहता । लेकिन अब दुआ के सिवा और क्या हो सकता है?

दो दिन बाद तहज्जुद और फ़ज्र के बीच के समय में माँ पलँग पर लेटी हुई मीर साहिब के सेहत के लिए दुआ कर रही थीं, कि आवाज़ आई कि "उसका करेन्ट (Current) बन्द कर दिया गया है" तुरन्त उठकर मेरी पत्नी के कमरे में गईं और उसे जगाकर कहा, मीर साहिब मृत्यु पा चुके हैं । सुबह को हैदराबाद से तार आया कि मीर साहिब रात में मृत्यु पा गए हैं बाद में जब विस्तृत जानकारी मिली तो मालूम हुआ की उनकी मृत्यु ठीक उसी समय हुई जिस समय माँ को स्वप्न में यह बताया गया था कि उनका करेन्ट बन्द कर दिया गया है ।

रूढ़ियों और धर्मविरुद्ध नयी-नयी विचारधाराओं से नफ़रत

चौधरी बशीर अहमद साहिब एक घटना बयान करते हैं । जिससे ज्ञात होता है कि माँ को धर्मविरुद्ध नयी-नयी विचारधाराओं और रूढ़ियों से कितनी नफ़रत थी । वह कहते हैं मेरी शादी का अवसर था निकाह के बाद मुझे औरतों के बीच में बुलाया गया । मैंने देखा कि देहात की रीति-रिवाज के अनुसार आमने-सामने दो कुर्सियां रख दी गयीं और मुझ से उम्मीद की गई कि मैं एक कुर्सी पर बैठ जाऊँ और दूसरी पर दुल्हन को बैठा दिया जाए और कुछ रूढ़िवादी रस्में अदा की जाएँ जिन्हें पंजाबी में “वीरो घोड़ी” खेलना कहते हैं । मैं दिल में घबराया । लेकिन फिर मैंने सोचा कि इस समय औरतों के साथ बहस और ज़िद करना उचित नहीं, और मैं उस कुर्सी पर जो मेरे लिए रखी गयी थी बैठ गया और उन चीज़ों की ओर जो उस रस्म की अदायगी के लिए इकट्ठी की गई थीं, हाथ बढ़ाया । इतने में मेरी मामी साहिबा (अर्थात चौधरी जफरूल्लाह खां की माँ) ने मेरा हाथ कलाई से मज़बूती से पकड़कर पीछे हटा दिया और कहा, न बेटा ये शिर्क की बातें हैं । इससे मुझे भी हौसला हो गया और मैंने उन चीजों को हाथ से बिखेर दिया और खड़े होकर कह दिया कि मैं इन रस्मों में शामिल नहीं हूँगा । इस तरह मुझे उससे छुटकारा मिला ।

मेरी लड़की के जन्म के सम्बन्ध में माँ का स्वप्न

मई सन् 1936 ई. में माँ ने स्वप्न में देखा कि कोई नौकर एक तश्तरी लाया है जिसमें आम की तरह के पांच फल और पांच रुपए रखे हैं और एक सोने का ज़ेवर है जिसे पंजाबी में तीला या तीली

कहते हैं जो नाक में पहनी जाती है । उस नौकर ने पिताजी का नाम लिया कि वह ये फल लाए हैं । माँ ने स्वप्न ही में कहा, ये तो वही फल हैं जो उन्होंने कहा था कि पकेगा तो मैं खुद तश्तरी में रखकर लाऊँगा ।

अत: सुबह होने पर माँ ने मेरी पत्नी को यह स्वप्न सुनाया और पूछा कि, क्या इसके पूरा होने के आसार हैं ? उसने शर्म की वजह से और कुछ इस कारण से कि उसे स्वयं भी अभी पूरा यकीन नहीं था कह दिया नहीं, अभी तो कोई आसार नहीं हैं । माँ ने कहा, तुम इन्कार करती हो, मुझे तो अल्लाह तआला ने बड़ी सफाई से खबर दे दी है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह अपने फ़ज़्ल से इस खुशखबरी को पूरा करेगा ।

अत: 12 जनवरी सन् 1937 ई. को मेरे यहाँ एक लड़की पैदा हुई जिसका नाम अमतुल हयी है । उसका जन्म दिन भी बहुत मुबारक है क्योंकि इसी तारीख को हज़रत खलीफतुल मसीह सानी भी पैदा हुए थे । उसके जन्म से कुछ घंटे पूर्व ही माँ ने मेरी पत्नी को बता दिया था कि लड़की पैदा होगी । क्योंकि मैंने अभी ऊंघ की हालत में देखा है कि मकान में बहुत चहल-पहल है और लोग कहते हैं :-

"बीबी आई है बहुत खूबसूरत"

माँ को अमतुल हयी के पैदा होने की बहुत ही खुशी हुई क्योंकि वह मेरे यहाँ सन्तान होने की बहुत इच्छा रखती थीं और इसके लिए बहुत दुआएँ करती रहती थीं । अमतुल हयी की पैदाइश के बाद मुझसे कहा, बेटा पिछले साल तो मैं इस रंग में भी दुआ करती रही कि हे अल्लाह मुझसे जब लोग दुआ के लिए कहते हैं तो शर्मिन्दा हो जाती हूँ कि यह एक दुआ मैं लम्बे समय से कर रही हूँ और अभी तक तेरी रहमत का दरवाज़ा नहीं खुला । अब उसने मेरी यह दुआ भी सुन ली । मैं उसकी किस-किस रहमत का शुक्रिया अदा करूँ ।

माँ के कुछ स्वप्नों का वर्णन

माँ के बहुत से रोअया और स्वप्न का वर्णन उन वृत्तान्तों में आ चुका है जो अब तक मैंने वर्णन किये हैं । अब कुछ अन्य स्वप्नों का वर्णन करूँगा जो केवल उदाहरण के तौर पर हैं अन्यथा यह सिलसिला उनकी छोटी उम्र से लेकर अन्त तक जारी रहा और वह बहुत अधिक सच्चे स्वप्न और रोअया देखा करती थीं । उनको स्वयं भी अपने रोअया और स्वप्नों पर पूरा विश्वास था और हम भी उन पर पूरा विश्वास रखते थे । क्योंकि लगभग हर दिन उनके रोअया और स्वप्नों को पूरा होते देखते रहते थे और यह देखना हमारे ईमानों की मज़बूती का कारण हुआ करता था । दुनिया चाहे जितना ऐसी बातों पर शक करे हमारे लिए यह प्रतिदिन देखी हुई बात थी और हम ऐसी रूहानी बातों के चश्मदीद देखने के कारण क़ायल थे । कभी-कभी माँ को इल्हाम भी होता था । लेकिन वह अपनी विनम्रता के कारण उसका नाम इल्हाम नहीं रखती थीं । अब मैं उदाहरण के तौर पर उनके कुछ ऐसे स्वप्नों का वर्णन करता हूँ जो अपने अन्दर कोई न कोई विशेषता रखते थे ।

सन् 1910 ई. में आपने स्वप्न में देखा कि स्यालकोट छावनी के बड़े गिरजाघर के गुम्बद में एक बड़ा पत्थर गिर गया है और गुम्बद की एक बड़ी जगह टूट गई है । स्वप्न में आपने मेरी फुफेरी बहन शरीफ़ा बीबी से कहा । देखो यह टूटी हुई खाली जगह कितनी बुरी दिखाई देती है । शरीफ़ा बीबी ने कहा, मामी जान देखिए वह पत्थरतराश एक बिल्कुल वैसा ही पत्थर तराश कर तैयार कर रहें हैं जो अभी गिरे हुए पत्थर की जगह लगा दिया जाएगा । कुछ दिनों के बाद बादशाह एडवर्ड सप्तम का देहान्त हो गया और बादशाह जार्ज पंचम उनकी जगह सिहांसन पर बैठे ।

सन् 1936 ई. के अन्त में जब शाह एडवर्ड अष्टम की शादी के विषय में अख़बारों में खबरें प्रकाशित होने लगीं, तो मैंने एक दिन माँ

से कहा कि आप बादशाह के लिए दुआ करें वे इस प्रकार की मुश्किल में पड़े हैं । माँ ने कहा, कुछ दिनों से मैं लगातार स्वप्न में शोरशराबा और बेचैनी के नज़ारे देख रही हूँ । सम्भव है यह बादशाह के बारे में ही इशारा हो, कहा, अच्छा मैं दुआ करुँगी । बाद में मैंने दो-तीन बार पूछा तो कहा, शोर बढ़ रहा है कम नहीं होता, मुझे अन्देशा है कि अन्जाम अच्छा नहीं होगा । अतएव कुछ ही दिनों के बाद बादशाह एडवर्ड अष्टम गद्दी से बाहर हो गए ।

असदुल्लाह खां छोटी उम्र का था । उसकी स्लेट गुम हो गई या टूट गई माँ उस पर बहुत क्रोधित हुई और कहा कि हर कुछ दिनों के बाद नई स्लेट लेते हो और तोड़ देते हो या खो देते हो माँ के नाराज़ होने से वह बहुत सहम गया । उसी दिन माँ ने स्वप्न में एक बहुत नूरानी चेहरे वाले सफेदपोश बुज़ुर्ग को देखा, जिन्होंने कहा, "आपने एक चार आने की चीज़ नष्ट हो जाने पर हमारे बन्दे पर इतना क्रोध प्रकट किया । यह लीजिए चार आने मैं दे देता हूँ" और उन्होंने एक चमकती हुई चवन्नी माँ को दी ।

माँ जब जागीं तो फज्र का समय होने को था लोटे में पानी लेकर वुज़ू करने के लिए ऊपर की मंजिल पर गईं आसमान पर खुली चाँदनी थी । जब छत पर पहुँचीं तो कोई चमकती हुई चीज़ तेज़ी से आसमान से गिरती हुई देखी । वह चीज़ उनके लोटे के साथ आकर टकराई और टकराने की आवाज़ ऐसी थी कि मानो यह चीज़ चांदी की या उसी प्रकार की किसी और धातु की है । लोटे से टकराकर यह चीज़ ज़मीन पर गिर गयी । माँ ने उसे उठा लिया और देखा कि वह एक चमकती हुई चवन्नी है । माँ ने उसे तबर्रुक (बरकत) के तौर पर जेब में डाल लिया । कुछ दिन तो उसे संभाले रखा । लेकिन कुछ दिनों के बाद वह खो गई । सम्भवत: दूसरे सिक्कों के साथ मिल गई और खर्च हो गई ।

पिताजी के देहान्त के बाद दो-तीन बार माँ ने उन्हें स्वप्न में उसी तरह देखा कि वह नौजवान औरत जिसे माँ ने पिताजी के देहान्त से

तीन-चार दिन पूर्व स्वप्न में देखा कि उसी कमरे में बैठी है जिसमें पिताजी काम कर रहे हैं। वह अब भी उनकी सेवा में लगी है। जब दूसरी-तीसरी बार माँ ने स्वप्न में यही देखा तो उनके दिल में कुछ परेशानी सी महसूस हुई कि यह औरत हर वक्त इनके साथ क्यों रहती है। लेकिन माँ ने इस बात का इज़्हार न स्वप्न में किया और न जागने के बाद। कुछ समय के बाद मेरी एक खाला (मौसी) साहिबा आयीं और बातचीत के दौरान हँसकर कहा कि मैंने आपको भाईजान की तरफ से एक पैग़ाम देना है। माँ ने पूछा, क्या पैग़ाम है ? खाला (मौसी) ने कहा, कुछ दिन हुए मैंने भाईजान को स्वप्न में देखा, एक नौजवान औरत उनके पास खड़ी थी और पंखा हिला रही थी कुछ बातें भी हुईं। फिर उन्होंने मुझसे कहा, "जफरूल्लाह खां की माँ से कहना कि वह व्यर्थ में परेशान हुईं। यह औरत तो मेरी सेवा के लिए नियुक्त है मेरा इसके साथ कोई रिश्ता नहीं"। इस पर माँ ने खाला (मौसी) से उस विषय का वर्णन किया जो उन्होंने स्वप्न में देखा था।

पिताजी की मृत्यु के कुछ समय पश्चात् माँ ने एक स्वप्न में पिताजी को देखा। पिताजी ने पूछा आप इतनी ग़मगीन क्यों हैं ? इस पर माँ तो चुप रहीं पर हमारे फूफा चौधरी सनाउल्लाह खां साहिब जो पास ही खड़े थे जवाब दिया, आपकी जुदाई के कारण ग़मगीन हैं। अगर आपको इनके ग़मगीन होने की चिन्ता है तो आप इन्हें साथ क्यों नहीं ले जाते। इस पर पिताजी भी कुछ ग़मगीन हो गए और कहा, सच मानो अभी इनका मकान तैयार नहीं हुआ,जब तैयार हो जाएगा, मैं खुद आकर इन्हें ले जाऊँगा।

जनवरी सन् 1936 ई. का वर्णन है कि एक बार मैंने माँ को बहुत ग़मगीन देखा, कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि मैंने स्वप्न में देखा है कि कोई आदमी कहता है असदुल्लाह खां क़त्ल हो गया है और उसने वसीयत की है कि मेरे बड़े भाई मेरे बच्चों की परवरिश करें। मैंने माँ को तसल्ली देनी की कोशिश की कि स्वप्न ताबीर तलब होते

हैं और मुसीबत दूर करने के लिए हर हाल में सदका देना चाहिए और दुआ करनी चाहिए । माँ ने कहा सदक़े का तो मैंने सुबह ही प्रबन्ध कर दिया था और दुआ कर रही हूँ और करती रहूँगी, अल्लाह तआला रहम करे । दो या तीन दिन के बाद असदुल्लाह खां हमें मिलने के लिए दिल्ली आया और बताया कि रास्ते में रात के समय रेल में किसी ने एक लम्बा खंजर उसके उस जगह पर घोंपा जहाँ पहले उसका सीना था । हमले से पहले उसने अपनी दिशा बदल कर अपने पाँव उस तरफ कर लिए थे जहाँ पहले उसका सीना था । खंजर इतनी ज़ोर से घोंपा गया था कि रज़ाई को पार करके असदुल्लाह के दोनों घुटनों के दरम्यान चमड़े के गद्दे में गड गया और उसी हालत में गड़ा हुआ पाया गया ।

इस में सन्देह नहीं कि अल्लाह तआला ने माँ को घटना से पूर्व इस ख़तरे की सूचना देकर सदक़ा और दुआ की ओर आकर्षित कराया और फिर उसके परिणाम स्वरूप अपने फ़ज्ल और रहम से उस मुसीबत को टाल दिया ।

मुझे अच्छी तरह याद है कि हमारे बचपन में जब भी प्लेग शुरू होती तो माँ को पहले से स्वप्न द्वारा उसकी सूचना दे दी जाती और वह उसी समय से दुआओं में लग जातीं और फिर जब ख़त्म होने को होती तो भी स्वप्न के द्वारा उन्हें सूचना मिल जाती । इसी तरह हमारे रिश्तेदारों और सम्बन्ध रखने वालों में खुशी और ग़म के अवसरों पर उन्हें समय से पूर्व खबर दी जाती । कभी -कभी जमाअत और दुनिया की बड़ी-बड़ी घटनाओं के बारे में भी उन्हें सूचना दी जाती ।

बावा झण्डा सिंह साहिब रिटायर्ड सीनियर सब जज ने मुझ से बयान किया कि जब मैं सन् 1936 ई. में गर्मियों में शिमला में ठहरा हुआ था तो एक दिन तुम्हारे मकान पर तुम्हारी माँ ने कहा कि क़सूर में हैज़ा की खबर मिलने पर मैं बहुत बेचैन थी और बहुत दुआएँ कर रही थी, रात मुझे स्वप्न में बताया गया कि एक सप्ताह के बाद क़सूर में हैज़ा की वारदातें बन्द हो जाएँगी । बावा साहिब बताया करते थे

कि मैं अख़बारों को देखता रहा और पूरे एक सप्ताह के बाद क़सूर में हैज़ा की वारदातें बन्द हो गईं ।

माँ को अल्लाह तआला पर पूरा भरोसा

हर चीज़ पर अल्लाह तआला के समर्थ होने और दुआओं के क़ुबूल होने पर उन्हें पूर्ण विश्वास था । क्योंकि यह उनके प्रतिदिन अनुभव की बात थी । बीमारी के इलाज के सम्बन्ध में उनका यह दस्तूर था कि दवा बताने के साथ ही दुआ में लग जाती थीं ।

उनके देहान्त से कुछ दिनों पहले की घटना है कि मेरे एक मित्र के पाँव में फफोला सा पड़ गया और उससे उन्हें बहुत दर्द होने लगा । मैंने माँ से इसके बारे में बताया तो उन्होंने इलाज बताया और कहा, उनसे कहो यह दवा खाएँ और मैं दुआ करुँगी, अल्लाह तआला रहम करेगा और ठीक कर देगा । दूसरे दिन जब वह स्वयं अपनी बीमारी के कारण बिस्तर में लेटी थीं तो मुझ से कहा कि टेलीफोन करके अपने मित्र का हाल पूछो । मैंने पूछा तो मालूम हुआ कि उन्होंने वह इलाज नहीं किया और तकलीफ़ अभी जारी है । तब माँ ने कहा, उनसे बार-बार कहो कि जैसे मैंने बताया है इलाज करें । मैं दुआ कर रही हूँ अल्लाह तआला ज़रूर ठीक कर देगा । अत: दूसरे ही दिन उस ने सूचना दी कि माँ की हिदायत के अनुसार इलाज किया गया था अब बहुत फ़ायदा है ।

माँ अक्सर कहा करती थीं कि जब मैं किसी को कोई दवा बताती हूँ तो इस रंग में भी दुआ करती हूँ कि अल्लाह मैंने तेरे फ़ज़्ल पर भरोसा करते हुए यह ऐसा किया है अब तू ही उस पर रहम कर और वह अनेकों बार मेरी दुआ को कुबूल करता है । अल्लाह तआला का भी उनके साथ رُبَّ اَشْعَثَ اَغْبَرَ (अर्थात अपने प्रिय बन्दों वाला – अनुवादक) सुलूक था ।

Ver 2017.01.15/02

माँ का अपने देहान्त से सम्बन्धित स्वप्न

तीस वर्ष पूर्व उन्हें स्वप्न में बताया गया कि उनकी मृत्यु अप्रैल के महीने में होगी । फिर कुछ समय बाद बताया गया कि अप्रैल के अन्तिम बुधवार के दिन मृत्यु होगी । उन्हें इस बात पर पूर्ण विश्वास था कि यह सूचना अल्लाह तआला की ओर से है और साथ यह भी जानती थीं कि रोअया और स्वप्न ताबीर तलब होते हैं और अल्लाह तआला किसी विषय में किसी का मोहताज नहीं और उसके सामर्थ्य की कोई सीमा नहीं ।

जनवरी सन् 1938 ई. में जब मैं लन्दन जाने लगा तो माँ ने पूछा, अप्रैल तक वापिस आ जाओगे ? मैंने उत्तर दिया यदि अल्लाह ने चाहा, मैं उम्मीद करता हूँ । इस पर वह पूर्णत: संतुष्ट हो गयीं । अत: मैं 01 अप्रैल की शाम को लन्दन से दिल्ली आ पहुंचा । लन्दन से मैंने माँ की सेवा में लिखा था कि यदि अल्लाह तआला ने चाहा तो मैं 01 अप्रैल को दिल्ली पहुँच जाऊँगा और 12 दिन दिल्ली में ठहरने के बाद क़ादियान जाऊँगा । अगर आप चाहें तो दिल्ली आ जाएँ और यदि यात्रा करने में थकान और तकलीफ़ का डर हो तो फिर इन्शा अल्लाह 03 अप्रैल को क़ादियान में मुलाक़ात होगी ।

01 अप्रैल को गाड़ी पौने दो घंटे देर से दिल्ली पहुंची । स्टेशन पर पहुँचते ही मालूम हुआ कि माँ बैठी प्रतीक्षा कर रही हैं । अत: जब मैं कार में पहुँचा तो दुआ दी और प्यार किया और कहा, तुमने यह कैसे सोच लिया कि मैं बारह दिन और इन्तिज़ार कर सकूँगी ?

माँ का बीमार होना

अभी हम दिल्ली ही में थे कि माँ को निम्न रक्तचाप की तकलीफ़ हो गई । पहले भी कभी-कभी उन्हें यह तकलीफ़ हो जाया करती

थी । अतः इलाज करने पर निम्न रक्तचाप दूर हो गया और तकलीफ जाती रही । इन्हीं दिनों में उन्होंने एक स्वप्न देखा । इस पर वह अपने अन्दर बहुत खुशी महसूस करती थीं । यद्यपि वह उसकी ताबीर को खूब समझती थीं । लेकिन बार-बार और खुशी-खुशी उसे बयान करती थीं ।

फ़रमाया, मैंने देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम एक पलँग पर बैठे है और बहुत खुश दिखाई देते हैं । मुझे आपको देखकर दिल में बहुत खुशी महसूस हुई और मैंने निवेदन किया हे हज़रत ! यदि आप आज्ञा दें तो मैं आपके पाँव दबाऊँ । आपने मुस्कुराकर बड़े प्यार से अपने पाँव पलँग के एक तरफ कर लिए ताकि मेरे बैठने के लिए जगह हो जाए । माँ पलँग पर बैठ गई और हुज़ूर के पाँव दबाने लगी । उस समय मेरे दिल में विचार पैदा हुआ कि हुज़ूर इस समय बहुत खुश नज़र आते हैं मैं किसी बात के लिए दुआ करने के लिए निवेदन करूँ । अभी मैं सोच ही रही थी कि किस बात के लिए दुआ के लिए निवेदन करूँ कि हुज़ूर ने अपने दायीं ओर किसी व्यक्ति से संबोधित होकर और मेरी ओर इशारा करके कहा, "इनका मकान खुला-खुला बड़ा बनाना" फिर मैं जाग गई । जब से मैं ने यह स्वप्न देखा है मेरे दिल में बहुत खुशी है ।

जब हम क़ादियान पहुँचे तो माँ ने अपना यह स्वप्न हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो बिनस्रिहिल अज़ीज़ से बयान किया और साथ ही कहा । हुज़ूर मैं तो उस समय आपकी शिकायत करने वाली थी कि अब मेरा मकान बड़ा कैसे होगा, एक तरफ़ तो अब्दुल सत्तार साहिब अफ़ग़ान दफन हैं और दूसरी तरफ कोई और । हुज़ूर ने मुस्कुराकर कहा, यह तो जन्नत के मकान की ओर संकेत है । जब माँ ने मुझसे इस बातचीत का वर्णन किया तो कहा, यह तो मैं भी जानती हूँ कि यह जन्नत के मकान की तरफ इशारा है ।

मैंने अपने क़ब्र की जगह का वर्णन तो हज़रत साहिब को हँसाने के लिए किया था ।

इस अवसर पर हम अप्रैल के अन्त तक क़ादियान में ठहरे । माँ के स्वप्न के कारण से ही मैंने यह प्रबन्ध किया था कि हम अप्रैल का आखिरी अर्द्धभाग क़ादियान में गुज़ारें । इस अवधि में माँ बुढ़ापे की कमज़ोरी और निम्न रक्तचाप की बीमारी के बावजूद जो पुन: लौट आई थी जुमा की नमाज़ के लिए पैदल ही मस्जिद अक़्सा जाती रहीं और हज़रत उम्मुल मोमिनीन और हज़रत खलीफतुल मसीह की सेवा में हाजिर होती रहीं । जुमा की नमाज़ के समय चूँकि बहुत गर्मी हो जाती थी । इसलिए जब मुझे मालूम हुआ कि आप जुमा की नमाज़ के लिए मस्जिद अक़्सा गयी थीं तो मैंने कहा कि यदि आप मुझे बतातीं तो मैं सवारी का प्रबन्ध करता, तो कहा, नहीं बेटा मस्जिद तक जाने में क्या तकलीफ़ है ?

जब माँ को मालूम हुआ कि हज़रत खलीफतुल मसीह ने 25 अप्रैल को सिन्ध जाने का इरादा किया है तो कुछ ग़मगीन सी हो गयीं । दो दिन के बाद ज्ञात हुआ कि हुज़ूर 27 अप्रैल को क़ादियान से रवाना होंगे तो खुशी खुशी मुझे बताया कि तुमने सुना हज़रत साहिब 27 को रवाना होंगे ? मैंने कहा हाँ मैंने भी सुना है फिर पुन: मुझसे कहा, 27 तारीख है । मैंने कहा मैं समझता हूँ । तात्पर्य उनका यह था कि 27 को आखिरी बुधवार है और अप्रैल का महीना है और यदि इस वर्ष मेरा स्वप्न प्रयत्क्षत: पूरा होता है तो हज़रत साहिब मेरा जनाज़ा पढ़ाकर क़ादियान से रवाना होंगे ।

27 की सुबह को फ़ज्र की नमाज़ के बाद वह आखिरी बार बहिश्ती मकबरा गयीं । उस दिन मुझसे कहा कि मैं महसूस करती हूँ कि मुझे बुखार है लेकिन देखने में उन्हें और कोई तकलीफ़ नहीं थी । सम्भवत: उसी दिन शाम को या 28 की शाम को मुझसे निम्नलिखित घटना का वर्णन किया ।

दया एवं करुणभाव की एक घटना

कहा, आज मैं शहर से वापिस आ रही थी । दारुल अनवार में देखा कि सड़क के किनारे एक औरत दीवार से टेक लगाकर बैठी है और दो लड़कियाँ भी उसके पास बैठी हैं । पहले तो मैं उनके पास से गुज़र कर आगे निकल गई । लेकिन कुछ क़दम आगे जाने के बाद मैंने सोचा कि उस औरत को कुछ तकलीफ है । अत: मैं वापिस लौटी और उस औरत के पास बैठ गयी । मैंने देखा कि वह स्वयं भी अपना पाँव दबा रही है और वे लड़कियाँ भी उसका पाँव दबा रही हैं । औरत दर्द से कराह रही थी । मैंने उसके पाँव को गौर से देखा तो मालूम हुआ कि एक लम्बी कील उसके पाँव में चुभी हुई है । वह दर्द से बेहाल हो रही थी। मैं अकेली थी मेरे निकट कोई ऐसा आदमी भी न था जिसे मैं मदद के लिए बुला सकती या मदद के लिए भेज सकती । अन्त में मैंने सोचा कि मैं स्वयं ही हिम्मत करके उस कील को उसके पाँव से खींचकर निकाल दूँ । लेकिन जब मैंने उसके पाँव की ओर हाथ बढ़ाया तो वह बहुत घबराई और विनती करने लगी कि आप इसे न छेड़ें मैं बर्दाश्त न कर पाऊंगी । लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे हिम्मत दी और मैंने एक हाथ से उसके पाँव को मज़बूती से पकड़ लिया और दूसरे हाथ से कील को पकड़ कर ज़ोर से खींच लिया । यह कील लगभग ढ़ाई-तीन इंच लम्बी थी और मोरचा से भरी हुई थी । उस औरत के पाँव से फ़व्वारा की तरह खून बहने लगा । पहले तो वह दर्द से और बेहाल हुई लेकिन फिर उसे कुछ आराम महसूस होने लगा । मैंने उस से कहा, हमारा मकान यहाँ से निकट ही है तुम हिम्मत करके मेरे साथ चलो । मैं तेल उबालकर और उसमें रुई भिगोकर तुम्हारे पाँव पर बाँध दूँगी, ताकि घाव में किसी प्रकार का ज़हर पैदा न हो और सारी रात तुम्हारी सेवा करुँगी । लेकिन उस औरत ने कहा मेरा गाँव निकट है

मैं इन लड़कियों के सहारे अपने घर पहुँच जाऊँगी । जब माँ ने मुझे इस घटना के बारे में बताया तो मैंने कहा कि आप घर पर पहुंचकर किसी लड़के को कह देतीं तो वह जाकर उस औरत को ले आता । माँ ने कहा, वह अपने घर जाने की ज़िद कर रही थी ।

इन्हीं दिनों माँ ने बताया की कई बार मैंने अर्द्धनिद्रा की हालत में सुना है कि कोई आदमी कहता है कि कुछ होने वाला है और दूसरा आदमी जवाब में कहता है अब की बार तो होकर रहेगा ।

27 या 28 अप्रैल को कहा, मैंने स्वप्न में देखा है कि सात जनाज़े बहिश्ती मक़बरा में साथ-साथ रखे हुए हैं ।

30 अप्रैल को जिस दिन क़ादियान से हमारी रवानगी थी, माँ की तबियत बहुत खराब हो गई । मैंने कहा कि मैं डाक्टर साहिब को बुलवाने की कोशिश करता हूँ । अत: मैंने टेलीफोन द्वारा पैग़ाम पहुँचाने की कोशिश की । लेकिन या तो डाक्टर साहिब के पास पैग़ाम नहीं पहुँच सका या वह किसी कारण से नहीं आ सके । दोपहर के बाद मैं मकान पर वापिस आया तो पता लगा कि डाक्टर साहिब नहीं आए । मैंने माँ से कहा, अब शिमला पहुँचकर डाक्टर बुला लेंगे तो उन्होंने मुस्कुराकर कहा, अच्छा ।

शाम की गाड़ी से हम क़ादियान से चल पड़े । बटाला में चैधरी नसीर अहमद साहिब और उनकी पत्नी हमारे साथ शामिल हो गए । उनकी पत्नी को एक दिन पूर्व ही भयानक दर्द का दौरा पड़ा था और वह बहुत कमज़ोर हो रही थीं । माँ ने बार-बार कहा कि वह पलँग पर सोएँ और स्वयं उन्होंने सोफ़े पर लेटकर रात गुज़ारी । सुबह उन्होंने अपना स्वप्न सुनाया कि तुम्हारे पिताजी आए हैं और मुझसे कहते हैं आप तो बहुत बीमार हैं, अच्छा मैं जाकर डाक्टर को लाता हूँ, ऐसा डाक्टर जिसकी हर बार की फ़ीस बत्तीस रूपये होगी ।

बीमारी का भयंकर रूप धारण करना

शिमला पहुँचकर डाक्टर साहिब को बुलाया, उन्होंने कहा तकलीफ़ तो निम्न रक्तचाप की है । लेकिन सही बीमारी उस समय तक मालूम नहीं हो सकती, जब तक बीमारी के पहले चरण की विस्तृत जानकारी मालूम न हो । खून इत्यादि के टेस्ट से मालूम हुआ है कि गुर्दे भी ठीक से काम नहीं कर रहे ।

जैसे-तैसे जो इलाज तज्वीज़ हुआ वह शुरू कर दिया गया । लेकिन कमज़ोरी धीरे-धीरे बढ़ती गई ।

शिमला पहुँचकर पहली रात ही माँ ने स्वप्न में देखा कि पिताजी आए हैं और कहते हैं मैं आपके लिए पालकी ले आया हूँ । अब आप इस समय तैयार हो जाएँ और हम रवाना हो जाएँ । माँ ने कहा, मैं तो तहज्जुद के समय तैयार हो जाऊँगी और उस समय चलना भी उचित होगा ताकि ज़्यादा गर्मी होने से पहले-पहले यात्रा तय कर ली जाए । पिताजी ने कहा, अच्छा होगा कि 8 बजे के बाद रवाना हों जब बच्चे नाश्ता कर चुकें नहीं तो बच्चों को तकलीफ़ होगी । माँ ने अगले दिन स्वप्न बयान करते हुए पालकी की सजावट के बारे में भी विस्तार से बताया कि इतनी सुन्दर थी और इस तरह की लकड़ी थी और अमुक भाग चाँदी के थे ।

पांच दिन तो इस तरह गुज़र गए कि यद्यपि कमज़ोरी तो थी लेकिन किसी प्रकार की बेचैनी नहीं थी । तहज्जुद के लिए और दूसरी नमाज़ों के लिए स्वयं ही उठकर स्नानघर में वुज़ू के लिए जातीं और जा-ए-नमाज़ पर नमाज़ें पढ़ती थीं । ज़्यादातर समय पलँग पर बैठे हुए गुज़ारती थीं । चौथे दिन जब कि डाक्टर साहिब ने पलँग से उतरना मना कर दिया था लेकिन फिर भी 6 मई शुक्रवार के दिन अस्र के समय जब मैं उनके पास गया तो मैंने देखा कि बरामदे में जा-ए-नमाज़ पर नमाज़ पढ़ रही हैं । जब नमाज़ पढ़ चुकीं तो मैंने कहा कि डाक्टर साहिब ने

तो पलँग से हिलने तक की इजाज़त नहीं दी, आप इस हालत में हैं । कहा नमाज़ पढ़ने में कोई तकलीफ़ नहीं । फिर मैंने कहा, चलिए मैं आपको पलँग तक पहुँचा आऊँ और मैं सहारा देकर पलँग तक ले गया । उन्होंने ममता को प्रकट करने के लिए सहारा ले लिया लेकिन उस समय तक अभी उन्हें सहारे की आवश्यकता न थी ।

मग़रिब (शाम) के बाद मैं दफ्तर के कमरे में बैठा हुआ काम कर रहा था कि मुझे सूचना मिली कि माँ पर एक प्रकार की बेहोशी छा गई है । मैं तुरन्त उनके कमरे में गया । उस समय ऐसा ज्ञात होता था कि कमज़ोरी के कारण कुछ बेहोशी सी छा रही है । लेकिन धीरे-धीरे पाँव दबाने से पूरा होश आ गया और बातें करना शुरू कर दिया ।

मुझसे कहा, मग़रिब से पहले जब तुम मुझे यहाँ छोड़ गए थे मुझ पर अर्द्धनिद्रा की हालत छा गई और मैंने महसूस किया कि मैं किसी अँधेरी जगह में हूँ और वहाँ से निकलने का रास्ता ढूँढ़ रही हूँ लेकिन रास्ता नहीं मिलता । उसी बीच मैं एक तम्बू के अन्दर चली गई हूँ कि शायद यहाँ से बाहर निकलने का रास्ता मिल जाए । लेकिन उस तम्बू के अन्दर बहुत अँधेरा है और नीचे कीचड़ है जिसमें मैं फंस गई हूँ और निकलने की कोशिश करती हूँ लेकिन निकल नहीं सकती । उस समय मैंने कहा यदि किसी तरह जफ़रूल्लाह को खबर मिल जाए तो वह मुझे यहाँ से निकलवाने का प्रबन्ध कर लेगा ।

शनिवार 7 मई को उनकी तबियत पहले दिन की अपेक्षा अच्छी थी । लेकिन कमज़ोरी बहुत महसूस कर रही थीं । बातचीत के दौरान उन्होंने कहा यदि डाक्टर लतीफ़ यहाँ होते तो मैं जल्दी ठीक हो जाती । मैंने तुरन्त डाक्टर लतीफ़ साहिब को दिल्ली तार द्वारा सूचना दिया कि माँ आपको याद करती हैं । वह दूसरे दिन सुबह शिमला पहुँच गए । माँ उन्हें देखकर बहुर खुश हुईं और पलँग पर उठकर बैठ गयीं । डाक्टर साहिब को प्यार किया और मुस्कुराकर कहा, अब की बार अच्छी हो जाऊं तो समझूँ, कि बड़े डाक्टर हो । डाक्टर साहिब

ने कहा, अल्लाह तआला फ़ज़ल करेगा, देखिए मैं आपका तार मिलते ही आ गया हूँ। माँ ने कहा, मैंने तो तार नहीं भिजवाया फिर मेरी तरफ देखा । मैंने कहा कि कल आपने डाक्टर साहिब को याद किया था इसलिए मैंने तार भेज दिया ।

शिमला से दिल्ली को रवानगी

डाक्टर साहिब ने चेक करने के पश्चात् कहा, कि इनके लिए शिमला में ठहरना बहुत नुकसानदेह है यहाँ ऊँचाई के कारण दिल पर बहुत बोझ है इन्हें आज ही मैं अपने साथ दिल्ली ले जाऊँगा और अपने मकान पर ही रखूँगा । क्योंकि तीन चार दिन तक लगातार इलाज की आवश्यकता है और मेरा हर समय पास रहना ज़रुरी है ताकि दिल की हालत और निम्न रक्तचाप के अनुसार इलाज में तब्दीली होती रहे । साथ ही माँ को सांत्वना दी कि तीन चार दिन के इलाज के बाद अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से सारी तकलीफ दूर हो जाएगी । अत: उसी दिन दिल्ली जाने की तैयारी कर ली गई ।

अमतुल हयी की माँ (अर्थात मेरी पत्नी) ने ज़िद की, कि मैं ज़रूर माँ जी के साथ दिल्ली जाऊँगी । मैंने रोकने की कोशिश की और माँ ने भी मना किया कि बच्ची (अर्थात अमतुल हयी) को गर्मी में बहुत तकलीफ़ होगी । डाक्टर लतीफ़ का घर मेरा अपना घर है अमीना मेरी बेटियों की तरह सेवा करती है । फिर बशीर अहमद के घर के लोग भी दिल्ली में हैं तुम अकारण बच्ची और अपने को इतनी गर्मी में तकलीफ़ में न डालो । लेकिन उसने ज़िद न छोड़ी और कहा यह कैसे सम्भव है कि आप यहाँ से बीमारी की हालत में रवाना हों और मैं आपकी सेवा और देखभाल के लिए साथ न जाऊँ ।

यह रविवार का दिन था और दूसरे दिन शिमला में मेरा हाज़िर रहना अनिवार्य था । इसलिए यह प्रबन्ध किया कि मैं इन सबको

कालका स्टेशन तक जाकर पहुँचा आऊँ और रेल में बैठा दूँ और फिर शनिवार के दिन स्वयं भी माँ की सेवा में दिल्ली हाज़िर हो जाऊँ । अत: हम सब शाम के समय कालका पहुँच गए और उन सबको आराम से रेल में बैठा दिया । गाड़ी के चलने का समय तो रात 12 बजे का था । लेकिन साढ़े 10 बजे के लगभग मैंने माँ से आज्ञा चाही कि अब मैं रेल के बंग्ला में जाकर सो जाऊँ । क्योंकि सुबह-सुबह फिर शिमला जाना है । माँ लेटी हुई थीं । जब मैंने कमरे के अन्दर जाकर इजाज़त माँगी तो उठ खड़ी हुईं और मेरे माथे को चूमकर दुआ दी । डाक्टर साहिब ने उन्हें खड़े हुए देखा तो शोर मचाते हुए कहा, बीबी जी, बीबी जी, आप क्या कर रही हैं तुरन्त लेट जाएँ । आपको तो लेटे- लेटे भी हरकत नहीं करनी चाहिए । माँ ने बड़े धैर्यपूर्वक उत्तर दिया, बेटा लेटे रहने के लिए तो बहुत समय है । शायद ज़फरुल्लाह खां से अब फिर मुलाक़ात हो या न हो ।

09 मई को सुबह-सुबह साढ़े 8 बजे वापिस शिमला पहुँच गया और शाम को दिल्ली टेलीफोन किया तो मालूम हुआ कि माँ की हालत पहले से अच्छी है । हालाँकि दोपहर के समय पेट में अफरा (एसिडिटी) की शिकायत हो गई थी । जिससे दिल पर कुछ बोझ बढ़ गया था । लेकिन यह हालत एक दो घन्टों के बाद दूर हो गई ।

10 मई मंगलवार के दिन पुन: दिल्ली टेलीफोन किया तो वही जवाब मिला जो पहले दिन का था । 11 मई बुधवार को सुबह भी वही जवाब मिला । दोपहर के बाद दिल्ली से टेलीफोन आया कि दोपहर के बाद दिल की हालत बिगड़ गई थी पर टीके इत्यादि लगाने से पुन: संभल गई अब पहले की अपेक्षा आराम है होश में हैं और बातें कर रही हैं लेकिन हालत ऐसी है कि तुम्हें तुरन्त दिल्ली आ जाना चाहिए । मुझे दूसरे दिन शिमला में एक ऐसा जरुरी सरकरी काम था जिसे छोड़कर मैं नहीं जा सकता था । मैंने जवाब में कहा कि मैं कल यहाँ से रवाना हो सकता हूँ पर दिल्ली से बशीर अहमद ने ज़िद करते

हुए कहा कि आज ही शिमला से चल दो । मैंने कहा, मैं आपकी ज़िद से अन्दाज़ा लगा सकता हूँ कि क्या हालत है । लेकिन मजबूर हूँ । अगर अल्लाह ने चाहा तो कल दोपहर के बाद रवाना होकर शुक्रवार को सुबह दिल्ली पहुँच जाऊंगा । शाम को फिर टेलीफोन किया तो मालूम हुआ कि हालत पहले से बेहतर है और कोई बेचैनी नहीं है । डाक्टर लतीफ़ साहिब के साथ सिविल सर्जन साहिब भी इलाज में शामिल हैं ।

वृहस्पतिवार 12 मई को सुबह टेलीफोन करने पर भी ऐसा ही उत्तर मिला । फिर भी मैंने दूरदर्शितापूर्वक अपने तीनों भाइयों को तार द्वारा सूचना देकर कहा कि माँ के पास दिल्ली पहुँच जाएँ और बहन को भी साथ लेते आएँ । असदुल्लाह खां तो बुधवार की रात को ही लाहौर से चल पड़ा था और वृहस्पतिवार को सुबह दिल्ली पहुँच गया था । शेष हम सब शुक्रवार को सुबह-सुबह दिल्ली पहुंचे ।

डाक्टर लतीफ़ साहिब ने बताया कि अमतुल हयी की माँ (अर्थात मेरी पत्नी) पूरे तन मन धन से माँ की सेवा करती रही है और अपनी आराम की कुछ परवाह नहीं की । फिर मैंने स्वयं भी देखा की हम सब बेटों, बहुओं और बेटी से सेवा का वह हक़ अदा न हो सका, जो अमतुल हयी की माँ ने अदा किया । अल्लाह तआला उसे अत्यधिक प्रतिफल प्रदान करे । आमीन ।

अमतुल हयी की माँ (अर्थात मेरी पत्नी) से और मेरी माँ के द्वारा मालूम हुआ कि डाक्टर लतीफ़ साहिब और अमीना बेगम ने भी बेटे और बेटी की तरह पूरे जोश और निष्ठा से माँ की सेवा की है । अत: माँ ने स्वयं मुझ से कहा कि यदि अल्लाह तआला और ज़िन्दगी दी तो मैं भी सामर्थ्य के अनुसार डाक्टर साहिब की सेवा का हक़ अदा करने की कोशिश करुँगी । असल प्रतिफल तो अल्लाह तआला ही देगा । अल्लाह तआला उन्हें भी अपनी कृपा से अत्यधिक प्रतिफल प्रदान करे और उनकी सन्तानों को भी और हर उस व्यक्ति को भी जिसने माँ की

सेवा की । आमीन ।

दिल्ली पहुँचने पर माँ ने मुझे बताया कि 8 मई की शाम को जब तुम कालका स्टेशन से मेरे पास से चले गए तो थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि अज़ीज़ अहमद और अब्दुलरहीम जिनको तुम्हारे पास मौजूद रहना चाहिए था प्लेट फार्म पर टहल रहे हैं मैंने उन्हें बुलाया और अल्लाह तआला का वास्ता देकर कहा कि अभी बंग्ले में जाओ और जिस कमरे में मेरा बेटा सो रहा है उसके पास रात बिताओ । मैंने कहा, कि मुझे मालूम हुआ था कि उस रात ये दोनों बंग्ले के दरवाज़े के सामने बरामदे में सोए हैं ।

10 बजे के निकट माँ ने मुझसे कहा, "अब फिर" मैंने उसे सवाल पूछने की चाहत समझकर जल्दी से पूछा अब फिर अल्लाह तआला का फ़ज्ल चाहिए! डाक्टर साहिब कहते हैं कि परसों की अपेक्षा आपकी हालत बहुत अच्छी है । अगर अल्लाह तआला ने चाहा तो आप जल्द स्वस्थ हो जाएँगी । माँ ने कहा, "अब फिर मुझे क़ादियान ले चलो" । मैंने कहा कि वहाँ इलाज का पूरा इन्तिज़ाम नहीं हो सकेगा । माँ ने बड़ी हसरत से मुस्कुराकर कहा, "अच्छा" ।

उस दिन दोपहर को माँ को अफारा (एसिडिटी) की शिकायत न हुई और यह समय जो बेचैनी का हुआ करता था खैरियत से गुज़र गया । जिससे कुछ आशा बँधने लगी कि अल्लाह तआला अपने फ़ज्ल से उन्हें स्वस्थ कर देगा । अत: मैंने निर्णय किया कि शुकरुल्लाह खान और असदुल्लाह खान घर चले जाएँ और मैं रविवार की शाम को वापिस शिमला चला जाऊँगा और मेरे तीनों भाई भी रविवार की शाम को वापिस चले जाएँ । क्योंकि यह आशा थी कि उस समय तक माँ की हालत ठीक हो चुकी होगी ।

शनिवार 14 मई की दोपहर तक माँ की वही हालत रही । दोपहर के समय सब लोग बशीर अहमद के यहाँ खाना खाने के लिए चले गए । मैं और मेरी पत्नी माँ के पास रहे । खाना खाने के बाद 2 बजे

के लगभग मैं वुज़ू कर रहा था कि मुझे किसी ने आवाज़ दी कि माँ बुला रही हैं । मैं उनके कमरे में गया तो देखा कि वह अपनी नब्ज़ पर हाथ रखे हुए हैं । मुझे देखकर मुस्कुरायीं और कहा, आओ बेटा अब आखिरी बातें कर लें और अपने भाइयों और बहन को भी बुला लो ।

डाक्टर साहिब उस समय कमरे ही में टीका तैयार कर रहे थे । उन्होंने अंग्रेजी में मुझसे कहा, दिल की हालत बिगड़ गई है और नब्ज़ भी बहुत कमज़ोर हो गई है । लेकिन मैंने माँ को कुछ नहीं बताया । उन्होंने स्वयं ही नब्ज़ से मालूम कर लिया । फिर डाक्टर साहिब ने टीका लगाया और सिविल सर्जन साहिब को भी टेलीफोन करके बुला लिया । टीका लगाने के थोड़ी देर बाद डाक्टर साहिब ने नब्ज़ देखकर कहा, बीबी जी अब तो नब्ज़ ठीक चल रही है । माँ ने स्वयं नब्ज़ देखकर कहा, ठीक तो नहीं चल रही वापिस आ गई है। लेकिन अभी कमज़ोर है ।

इतने में वे सारे लोग जो खाना खाने गए हुए थे वापिस आने शुरू हो गए और चौधरी बशीर अहमद साहिब और शेख ऐजाज़ अहमद साहिब भी सूचना मिलने पर थोड़ी देर में कचेहरी से आ गए ।

माँ ने कहा, यह समय सब पर आता है और औलाद को जब माता-पिता से जुदा होना पड़ता है तो उन्हें दुःख भी होता है । लेकिन मैं अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी हूँ और खुशी से उसके पास जा रही हूँ । मैं तुम सब से रुखसत होना चाहती हूँ । लेकिन चाहती हूँ कि तुम लोग कोई रोना-धोना न करना । न इस समय न मेरे बाद । फिर बहन के कान में कुछ कहा और उन्होंने माँ के कान में कुछ कहा । फिर बारी-बारी से माँ ने बेटों को प्यार किया फिर बहुओं को, और दुआ दी । फिर इसी तरह बशीर अहमद, ऐजाज़ अहमद और डाक्टर साहिब और अमीना बेगम और अहमदा बेगम और ग़ुलाम नबी और अज़ीज़ अहमद और चौधरी फजल दाद साहिब को प्यार किया और दुआएँ दी । फिर अमतुल हयी को बुलवाया और उसे प्यार किया ।

फिर अब्दुल करीम को बुलवाया और उसे दुआ दी । अत: जो कोई भी मौजूद था उसे दुआएँ दी और प्यार किया । ग़ुलाम नबी उस समय ग़म से बहुत बेहाल हुआ जा रहा था उसे सांत्वना दी और मुझे कहा, देखो बेटा अगर इससे कोई ग़लती हो जाए तो इस समय को याद करना और इसे माफ़ कर देना ।

फिर शुकरुल्लाह खां की पत्नी से पूछा, कि क्या मेरी संदूकची ले आई हो ? उसने कुछ हैरान होकर पूछा, कौन सी संदूकची ? माँ ने जवाब दिया, वही जिसमें मेरे कफ़न की चादरें रखी हैं । ज़ैनब बीबी ने कहा, हमने तो तार मिलते ही दिल्ली आने की तैयारी शुरू कर दी थी जल्दी में कुछ और सूझा ही नहीं और यह भी मालूम न था कि वह संदूकची डस्का में है । माँ ने कहा, मैंने तो कोई तार नहीं भिजवाया । मैंने कहा, कि तार मैंने भेजे थे ।

मेरे दिल्ली पहुँचने से पहले माँ अमतुल हयी से कह चुकी थीं कि जब क़ादियान ले जाओगे तो मुझे "बैतुज़्ज़फ़र" की निचली मंजिल में ही रखना । ऊपर की मंजिल पर मेरे अपने कमरे में न ले जाना और मुझे अमुक जगह पर गुस्ल देना (अर्थात नहलाना) । अब फिर मुझ से भी यही कहा । इस पर अमतुल हयी की माँ (अर्थात मेरी पत्नी) ने कहा कि जो जगह आपने गुस्ल के लिए तय की है वह पर्याप्त नहीं है और वहाँ पूरा पर्दा भी नहीं । माँ ने मुस्कुराकर कहा, बहुत खुली है और पर्दा भी है तुमने अच्छी तरह उसका अन्दाज़ा नहीं किया ।

इतने में सिविल सर्जन साहिब भी आ गए । उन्होंने डाक्टर लतीफ़ साहिब के साथ विचार-विमर्श करके कुछ और टीके लगाने का निर्णय किया । मैंने डाक्टर साहिब को अलग ले जाकर पूछा कि अगर चिकित्सा की दृष्टि से माँ का दिल्ली में रहना आवश्यक हो तो फिर कोई चारा नहीं । लेकिन यदि चिकित्सा के सारे मरहले खत्म हो चुके हों तो आप मुझे बता दें ताकि मैं उनकी यह इच्छा भी पूरी करने की कोशिश करूँ कि इन्हें क़ादियान ले जाऊँ । उन्होंने कहा अब तक तो किसी

टीके के नतीजे में दिल की हालत नहीं सुधरी । लेकिन हम एक-दो और टीके लगाना चाहते हैं । जिनका नतीजा पौना घंटा तक मालूम हो सकेगा । उस समय हम बता सकेंगे कि क्या हालत है ।

यह समय गुज़र जाने के बाद पांच बजे के लगभग डाक्टर साहिब ने बताया कि किसी टीके का कुछ भी असर नहीं हो रहा । अब इलाज की कोशिशों की सारी आशाएँ खत्म हो चुकी हैं और दिल की यह हालत है कि अनुमानत: आधा या पौना घंटे से अधिक काम नहीं कर सकेगा ।

दिल्ली से क़ादियान की यात्रा

इस पर मैं माँ के पास गया और कहा, अब मैं आपको क़ादियान ले चलता हूँ । यह सुनकर बहुत खुश हुईं और मुझे दुआ दी । हमने उसी समय तैयारी शुरू कर दी और शाम की गाड़ी से क़ादियान के लिए रवाना हो गए ।

चिकित्सीय दृष्टि से तो इतनी मोहलत मिलना आश्चर्य जनक था । लेकिन अल्लाह तआला ने उनकी यह इच्छा भी पूरी कर दी । धीरे-धीरे कमज़ोरी बढ़ती गई और कभी-कभी कुछ बेचैनी भी हो जाती थी । लेकिन होश रात भर क़ायम रहा ।

माँ की आखिरी बातचीत

11 बजे के लगभग असदुल्लाह खां को और मुझे अपने पास बैठे हुए देखकर कहा, “जाओ बेटा सो जाओ” । यह आखिरी वाक्य था जो अपनी मर्जी से खुद बखुद उस प्यारे मुँह से निकला । डाक्टर विवश हो चुके थे, इलाज बन्द हो चुका था । रूह अपने पैदा करने वाले के सामने पेश होने की तैयारी कर रही थी । लेकिन माँ की ममता को उस

समय भी यह चिन्ता थी कि मेरे बेटों के आराम में अड़चन न आए ।

थोड़ी देर के बाद जब मैं अकेला ही उनके पास था तो मैंने बुलाया, जवाब दिया "जियो पुत्र" । मैंने कहा, आपने मेरे साथ कोई बात नहीं की तो कहा, मैंने दूसरे के साथ भी कोई खास बात नहीं की । मैंने कहा, दूसरे तो केवल बेटे ही हैं और मेरे और आपके बीच तो बहुत प्यार का रिश्ता था । फ़रमाया, हाँ ।

उस रात हमारे सामने एक अजीब कैफ़ियत थी । चिकित्सीय दृष्टि से रूह और शरीर का रिश्ता खत्म हो चुका, होना चाहिए था । लेकिन रूह अपने पैदा करने वाले के सामने सिज्दे में पड़ी हुई दुआ कर रही थी कि आपकी दया से संभव है कि आप इस रिश्ते को क़ायम रहने का आदेश दें, जब तक आपका यह असहाय और कमज़ोर बन्दा उस धरती पर न पहुँच जाए जो आपके एक प्रेमी भक्त के निवास स्थान होने के कारण आपके नूर और आपकी रहमत नाज़िल (उतरने) की जगह है ।

गाड़ी तेज चल रही थी और हर पल हमें क़ादियान के निकट कर रही थी और हम यह दृश्य देख रहे थे ।

مرا عھدیست باجاناں کہ تاجاں دربدن دارم
ھواداری کوئیش رابجان خویشتن دارم

(अनुवाद: मेरा महबूब से यह वादा है कि मैं जीवित उसकी गली में पहुँचना चाहती हूँ–अनुवादक)

क़ादियान में आमद

रविवार 15 मई को दोपहर से पहले पौने दस बजे हम क़ादियान पहुंच गए । मैंने माँ से कहा, क़ादियान आ गया है, माँ ने कहा,

"बिस्मिल्लाह बिस्मिल्लाह"

फिर मैंने पूछा, आपकी कोठी में चलें ? कहा, हाँ अपनी कोठी

में ले चलो । "बैतुज़्ज़फ़र" पहुँचकर आपका पलँग निचली मंजिल में गोल कमरे में बिछाया गया । मैंने पूछा, आपने मकान पहचान लिया ? कहा, हाँ । फिर मैंने कहा आपका पलँग निचली मंजिल में ही गोल कमरे में है, इस पर नज़र उठाकर कमरे की दीवारों को देखा और कहा, "मैंने पहचान लिया है" । अब दिल को चैन मिल गया कि खुदा के मसीह की बस्ती तक पहुँचने की मोहलत मिल गई । अब कोई दूसरी चाहत बाक़ी न रही ।

देहान्त

अस्र के समय डस्का से क़ादियान कफ़न की चादरें भी आ गयीं । वही जो 14 वर्ष पूर्व ज़मज़म के पानी से धोयी गई थीं । फिर रात आई और कैसी रात । यों मालूम होता था कि किसी रूहानी शहज़ादी ने हमारे घर को एक रात के लिए अपना पड़ाव ठहराकर उसे नूर से भर दिया है और हर पल यहाँ फरिश्ते नाज़िल हो रहे हैं । आधी रात के लगभग जबकि कई घंटों से माँ पर बेहोशी छाई थी, किसी ने मुझसे कहा, तुम बुलाओ तो शायद जवाब दें, हमने तो बुलाया है कोई जवाब नहीं देतीं । मैंने बुलाया तो जवाब दिया, "हाँ" रात तीन बजे के निकट जब तहज्जुद का समय हुआ तो पूर्णत: बेहोशी छा गई । केवल साँस चल रही थी। मानो अपने स्वप्न के अनुसार पालकी में सवार होने और अन्तिम यात्रा प्रारम्भ करने के लिए तैयार हो गई थीं ।

सुबह साढ़े सात बजे के लगभग मैंने अमतुल हयी की माँ (अर्थात अपनी पत्नी) से कहा, कि सब लोग नाश्ता कर लें । क्योंकि उनका वचन है कि बच्चे नाश्ता कर लेंगे तो रवाना हूंगी । फिर मैंने माँ का वह स्वप्न याद करके जिसमें उन्होंने देखा था कि अंधेरे में एक खेमा (तम्बू) के अन्दर कीचड़ में फँस गई हैं और कहा था कि जफरूल्लाह खां को कोई सूचना दे दे तो वह मुझे यहाँ से निकलवाने का प्रबन्ध

करे । उनके लिए अल्लाह तआला से रहमत की दुआ करनी शुरू की ।

साँस जो कुछ समय पहले तेज हो गई थी साढे आठ बजे के लगभग हल्की होनी शुरू हो गई और जब घर के लोग, मेहमान, और सब नौकर नाश्ता कर चुके तो सुबह 9 बजे के निकट आप स्वर्ग सिधार गयीं । यह सोमवार 16 मई का दिन था । दोपहर 12 बजे के लगभग शव को उस स्थान पर दफनाया गया जो पहले से उनका आखिरी ठिकाना तय पा चुका था ।

وكل من عليها فان ويبقى وجه ربك ذو الجلال والاكرام

(अनुवाद-हर एक चीज़ जो इस संसार में है नश्वर है परन्तु तेरे परम प्रतापी और परम दयालु पालनहार की सत्ता हमेशा रहेगी-अनुवादक)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अय्यदहुल्लाहो बिनस्रिहिल अज़ीज़ उन दिनों सिन्ध में थे । साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब और साहिबज़ादा मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब और खानदान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लोगों ने जनाज़ा को कन्धा दिया ।

क़ब्र के लिए एक-दो ईंट को ठीक करने की जरुरत पड़ी तो साहिबज़ादा मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद ने अपने हाथ से उन्हें ठीक किया ।

माँ के देहान्त पर हज़रत ख़लीफतुल मसीह की तरफ़ से निम्नलिखित शोकपत्र अखबार अलफ़ज़ल में प्रकाशित हुआ ।

(शोकपत्र)

चौधरी सर जफरूल्लाह खां की माता जी का देहान्त

(लेखक – हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहो)

अन्त में चौधरी सर जफरूल्लाह खां साहिब की माँ के देहान्त की खबर आई है । अफ़सोस कि मैं इस समय क़ादियान से बहुत दूर हूँ और मेरा वहाँ आसानी से पहुँचना और जनाज़ा में शामिल होना मुश्किल दिखाई दे रहा है । जिसका मुझे बहुत अफ़सोस है । मैंने अभी सूचना मिलते ही एक आदमी को कार से मीरपुर खास भेजा है कि वह फोन करके मालूम करे कि क्या मेरा समय पर पहुँचना संभव है कि नहीं ? यदि ऐसा हो सका तो मेरी यह इच्छा कि मैं उनका जनाज़ा पढ़ाकर उन्हें दफ़न कर सकूँ पूरी हो जाएगी, नहीं तो फिर अल्लाह तआला की मर्ज़ी के सामने विवश हूँ ।

स्वर्गीया की निष्ठा

इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वर्गीया के पति स्व.चौधरी नसरुल्लाह खां साहिब एक बहुत निष्ठावान और प्रतिष्ठित अहमदी थे और उन्होंने सबसे पहले मेरी आवाज पर हाँ कहा और इस्लाम की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करके क़ादियान में आकर जमाअत के कामों में मेरा हाथ बँटाने लगे । इसलिए उनके लगाव के आधार पर उनकी पत्नी का मुझ पर और मेरे माध्यम से जमाअत पर एक हक़ था । इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रिय चौधरी जफरूल्लाह खां साहिब जिन्होंने बचपन से ही बुद्धिमानी और सौभाग्य के जौहर दिखाए हैं और खिलाफत के प्रारम्भ से ही मुझ से अपनी मुहब्बत और निष्ठा ज़ाहिर करते आए हैं

स्वर्गीया उनकी माँ थीं इस रिश्ते के आधार पर भी उनका मुझ पर हक़ था । अधिकतर औरतों का सम्बन्ध किसी के माध्यम अर्थात अपने बाप, बेटे या भाई के द्वारा होता है इसके अतिरिक्त स्वर्गीया उन विशेष औरतों में से थीं जिनका सम्बन्ध सीधे और बिना किसी माध्यम के होता है । वह अपने स्व. पति से पहले सिलसिला (जमाअत) में दाखिल हुईं, उनसे पहले उन्होंने खिलाफत की बैअत की और हमेशा ग़ैरत और स्वाभिमान का प्रमाण प्रस्तुत किया । चन्दों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना, गरीबों की सहायता का ध्यान रखना, उनकी विशेष पहचान थी । अत्यन्त दुआएँ करने के परिणाम स्वरूप अधिकतर सच्चे स्वप्न आने के कारण खुदा तआला ने उनको एक प्रतिष्ठा प्रदान की थी । उन्होंने स्वप्नों के द्वारा अहमदियत क़ुबूल की और स्वप्नों से ही खिलाफ्ते सानिया की बैअत की ।

स्वर्गीया की वायसराय हिन्द से बातचीत

मुझे उनकी यह घटना नहीं भूल सकती जो बहुत से पुरुषों के लिए भी सीख का कारण बन सकती है कि पिछले दिनों जब अहरारी फितना क़ादियान में ज़ोरों पर था और एक अहरारी एजेन्ट ने मियाँ शरीफ़ अहमद साहिब पर रास्ते में लाठी से हमला किया था । जब उन्हें इन हालत का पता लगा तो उन्हें बहुत दुःख हुआ । बार-बार चौधरी जफरूल्लाह खां साहिब से कहती थीं । जफरूल्लाह मेरे दिल को कुछ होता है अम्मा जान (हज़रत उम्मुल मोमिनीन) का दिल तो बहुत कमज़ोर है । उनका क्या हाल होगा । कुछ दिनों बाद चौधरी साहिब घर में दाखिल हुए तो उन्हें मालूम हुआ कि जैसे स्वर्गीया अपने आप से कुछ बातें कर रहीं हैं । उन्होंने पूछा, माँ जी क्या बात है ? तो स्वर्गीया ने जवाब दिया कि मैं वायसराय से बातें कर रही थी । चौधरी सहिब ने कहा कि आप सचमुच ही क्यों बातें नहीं कर लेतीं । उन्होंने

कहा क्या इसका इन्तिज़ाम हो सकता है ? चौधरी साहिब ने कहा कि हाँ हो सकता है । इस पर उन्होंने कहा, बहुत अच्छा फिर इन्तिज़ाम कर दो । क़ुरआन की शिक्षा के अनुसार उनकी आयु में वह पर्दा तो था ही नहीं जो जवान औरतों के लिए होता है । वह वायसराय से मिलीं और चौधरी साहिब तर्जुमान बने । लेडी विलिंग्डन भी पास थीं । चौधरी साहिब ने साफ कह दिया कि मैं कुछ नहीं कहूँगा जो कहना हो खुद कहना ।

अतएव स्वर्गीया ने लेडी विलिंग्डन से बड़े जोश से कहा कि मैं गाँव की रहने वाली औरत हूँ । मैं न अंग्रेज़ों को जानूँ और न ही उनकी हुकूमत के भेदों को । हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सुना था कि अंग्रेज़ी कौम अच्छी कौम है और हमेशा तुम्हारी कौम के बारे में दिल से दुआएँ निकलती थीं, जब भी तुम्हारी कौम के लिए मुसीबत का समय आता था । रो-रोकर दुआएँ किया करती थी कि हे अल्लाह! तू इनका रक्षक और सहायक हो । तू इनको कष्ट से बचा । लेकिन अब जो कुछ जमाअत से विशेषत: क़ादियान में सुलूक हो रहा है उसका नतीजा यह है कि दुआ तो मैं अब भी करती हूँ । क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का हुक्म है । लेकिन अब दुआ दिल से नहीं निकलती । क्योंकि अब मेरा दिल खुश नहीं है । आखिर हम लोगों ने क्या किया है कि इस रंग में हमें तकलीफ़ दी जाती है ।

चौधरी साहिब ने लेडी विलिंग्डन से कहा कि मैं केवल तर्जुमान हूँ मैं वही बात कहूँगा जो मेरी माँ कहती हैं आगे आप उन्हें स्वयं जवाब दे दें और उनकी बात लेडी विलिंग्डन को पहुँचा दी । उस सीधी-सादी और ग़ैरत से भरी हुई बातों का प्रभाव लेडी विलिंग्डन पर ऐसा हुआ कि उठकर स्वर्गीया के पास आ बैठीं और सांत्वना देना शुरू कर दिया और अपने पति से कहा यह मामला ऐसा है जिनकी तरफ तुमको विशेष ध्यान देना चाहिए ।

कितने पुरुष हैं जो इस दिलेरी से जमाअत के लिए अपनी ग़ैरत

का इज्हार कर सकते हैं और करते हैं । अल्लाह तआला स्वर्गीया की आत्मा को अपना क़ुर्ब (सामीप्य) प्रदान करे और अपनी नेमतों का वारिस बनाए । आमीन ।

सर चौधरी जफरूल्लाह खां साहिब से ममता

चौधरी सर जफरूल्लाह खां साहिब से वह अपने सब बेटों से अधिक मुहब्बत करती थीं और अक्सर कहा करती थीं कि अल्लाह तआला ने उनको सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठा भी दी है और सबसे ज़्यादा वह मेरा सम्मान भी करते हैं ।

स्वर्गीया का एक स्वप्न

अभी शूरा के अवसर पर चौधरी साहिब के साथ आई हुई थीं दो-तीन बार मुझे मिलने आयीं । खुश बहुत नज़र आती थीं मगर कहती थीं मुझे अपना अन्दर ख़ाली-ख़ाली मालूम होता है । उनका एक स्वप्न था कि वह अप्रैल में मृत्यु पाएँगी, पर स्वप्नों का कभी-कभी रहस्यपूर्ण स्वप्नफल भी होता है । मालूम होता है कि अप्रैल में इस बीमारी ने पकड़ना था जिससे वह मृत्यु पायीं । अप्रैल के इतने निकट उनका मृत्यु पाना उस स्वप्न के सच्चे होने का एक विश्वसनीय प्रमाण है ।

स्वर्गीया के देहान्त के बारे में एक स्वप्न

एक-दो वर्ष हुए मैंने स्वप्न में देखा था कि मैं अपने दफ्तर में बैठा हूँ और मेरे सामने चौधरी जफरूल्लाह खां साहिब लेटे हुए हैं और 11-12 वर्ष की आयु के मालूम होते हैं । कुहनी पर टेक लगाकर

हाथ खड़ा किए हुए हैं और उस पर सिर रखे हुए हैं । उनके दाएँ-बाएँ प्रिय चौधरी अब्दुल्लाह खां साहिब और चौधरी असदुल्लाह खां साहिब बैठे हैं । वे आठ-आठ नौ-नौ वर्ष के बच्चों की भांति मालूम होते हैं । तीनों के चेहरे मेरी ओर हैं और तीनों मुझसे बातें कर रहे हैं और बड़े प्रेम से मेरी बातें सुन रहे हैं और उस समय यह मालूम होता है कि ये तीनों मेरे बेटे हैं और जिस तरह घर में फुर्सत के समय माँ-बाप अपने बच्चों से बातें करते हैं उसी तरह मैं उनसे बातें करता हूँ । शायद उसका स्वप्नफल भी स्वर्गीया का देहान्त ही था । क्योंकि ख़ुदा के विधानानुसार जब एक प्रकार का माँ-बाप का साया उठता है तो दूसरे प्रकार की माँ-बाप की मुहब्बत और ममता जगह ले लेती है ।

स्वर्गीया के रिश्तेदार

स्वर्गीया के पिता भी अहमदी थे और उनके भाई चौधरी अब्दुल्लाह खां साहिब दाता ज़ैदका वाले एक बहुत जोशीले अहमदी हैं और अपने इलाका के अमीर जमाअत हैं । हज़रत खलीफतुल मसीह अव्वल के समय से ही मुझसे प्रेम करते चले आए हैं और हमेशा प्रेम प्रकट करने में आगे से आगे बढ़ते रहे हैं ।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह स्वर्गीया को अपना क़ुर्ब (सामीप्य) प्रदान करे और उनके ख़ानदान को उनकी दुआओं की बरकतों से वंचित न रखे और वे उनके देहान्त के बाद भी उनके हक़ में पूरी होती रहें ।

(अलफ़ज़ल 22 मई सन् 1938 ई. नम्बर 188 जिल्द 26)

हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहो तआला बिनिस्रीहिल अज़ीज़ ने जो इबारत स्वर्गीया माँ के कतबा पर लिखे जाने के लिए आदेश दिया वह निम्नलिखित है :-

स्व. चौधरी नसरुल्लाह खां साहिब की पत्नी, अज़ीज़म जफरूल्लाह

खां साहिब की माँ कश्फ और रोअया की अनुभवी थीं । स्वप्न के द्वारा ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पहचाना और अपने स्व. पति से पहले बैअत की । फिर स्वप्न में ही खिलाफते सानिया को पहचाना और पति से पहले खलीफा की बैअत की । धर्म के लिए बहुत ग़ैरत रखती थीं और सच्ची बात कहने में निडर थीं । गरीबों की देखभाल की विशेषताओं से विभूषित और सादा जीवन व्यतीत करने की अभ्यस्त थीं । एक नेक पत्नी और ममतामयी माँ थीं । अल्लाह तआला उन्हें और उनके पति को जो जमाअत के बहुत ही शिष्ट और सदभावक सेवक थे अपनी अनुकंपाएँ प्रदान करे और अपना क़ुर्ब (सामीप्य) प्रदान करे और उनकी सन्तान की रक्षा करे । आमीन ।

"जियो पुत्र"

अब वह प्यारी माँ हमारे बीच मौजूद नहीं । उस प्यारे चेहरे को आँखें ढूँढ़ती हैं लेकिन पा नहीं सकतीं । हम उन अनवरत दर्दभरी दुआओं से वंचित हो गए हैं लेकिन हम अल्लाह तआला की इच्छा को खुशी से स्वीकार करते हैं और इस विचार से संतुष्टि पातें हैं कि हमारी माँ ने अपना सारा जीवन अल्लाह तआला के आदेशों के पालन और उसकी खुशी पाने की चाहत में गुज़ारा । हमें विश्वास है कि अल्लाह तआला उन पर बहुत रहमतें नाज़िल करेगा और अपने लिए दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला हमें भी अपनी इच्छा के अनुसार कर्म करने की सामर्थ्य प्रदान करे और आशा रखते हैं कि हमारा समय आने पर वह हमें भी अपनी रहमत के साए में रखे और हमारे माता-पिता और सच्चों का साथ हमें प्रदान करे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के चरणों में हमें स्थान प्रदान करे । आमीन ।

मेरे लिए जब वह समय आएगा और फिर अल्लाह तआला की रहमत यह संभव कर देगी कि मेरी नज़र पुन: उस प्यारे चेहरे पर पड़े तो

मेरी सारी मुहब्बत और सारी चाहत और सारा शौक इस एक ही शब्द में अदा हो जाएँगे, "बे बे" अर्थात माँ और उनकी तरफ से "जियो पुत्र" फिर एक बार मेरे दिल को खुशी से भर देगा ।

اے خدا برتربت اوبارش رحمت ببار

داخلش کن از کمال فضل در بیت النعیم

अनुवादः हे अल्लाह! तू उसकी क़ब्र पर रहमत की बारिश कर और उसे अपनी कृपा से जन्नत में दाखिल कर – अनुवादक)

ज़फ़रुल्लाह खान

Ver 2017.01.15/02

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم
مزار
محترم چوہدری نصر اللہ خان صاحب
63 02-09-1926
871
3 قطعہ
QITA
بسم اللہ الرحمٰن الرحیم
مزار
محترمہ حسین بی بی صاحبہ
1904 1863
75 16-05-1938
870

Ahmadiyyat the Renaissance of Islam

Civilisation at the Cross Roads

Deliverance from the Cross

Gardens of the Righteous

Hazrat Maulvi Nooruddeen Khalifatul Masih I

Islam - Its Meaning for Modern Man

Islam and Human Rights

Islam and Modern Life

Islamic Worship (Edicts relating to prayers, fasting and charity)

Message of Islam

Moral Principles as the Basis of Islamic Culture

Muhammad: Seal of the Prophets

My Mother

Pilgrimage to the House of Allah

Prophet at Home (Translation of Shumail Tirmizi)

Punishment of Apostacy in Islam

Tadhkirah (Dreams and visions of the Founder of the Ahmadiyya movement)

Tehdise Nemat

The Concept of Justice in Islam

The Contribution of Islam to the Solution of World Problems

The Excellent Exemplar - Muhammad (pbuh)

The Reminiscences of Zafrullah Khan - Interviews

Victory of Prayer Over Prejudice

Wisdom of The Holy Prophet

Woman in Islam